महाकवि धनञ्जय विरचित

नाममालादि

शब्दकोश

अनेकार्थ

अनेकार्थ निघण्टु

एकाक्षरी शब्दकोश

सम्पादन

प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर

कृति - धनञ्जय नाममाला **पुष्प संख्या**-सोलह

कृतिकार - धनञ्जय कवि

सम्पादक - प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर

पावन प्रसङ्ग - बीसवीं शताब्दी के प्र० दि० जैन आ० चारित्र चक्रवर्ती श्रीशान्तिसागर जी महाराज के तृतीय पट्टाधीश आचार्य शिरोमणि श्रीधर्मसागर जी महाराज के पट्ट शिष्य प्रज्ञाश्रमण मुनिश्री अमितसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान के सन् २०१८ के महामस्तिकाभिषेक के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

[पुस्तक प्राप्ति स्थान]

१. चन्द्रा कापी हाऊस, हास्पिटल रोड, आगरा (उ०प्र०)
मो०: ०९४१२२६०८७९

२. वास्ट जैन फाउण्डेशन ५९/२ बिरहाना रोड, कानपुर (उ०प्र०)
मो0: ०९४५१८७५४४८

३. आलोक जैन, हनुमानगंज
C/O श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर, नसिया जी, कोटला रोड,
फिरोजाबाद (उ०प्र०) मो०: ०९९९७५४३४१५

४. आचार्य श्री शिवसागर ग्रन्थमाला, श्री शान्तिवीर नगर,
श्री महावीर जी, जिला-करौली (राज०)

५. श्री दिगम्बर जैन अष्टापद तीर्थ, विलासपुर चौक, धारूहेड़ा,
गुडगाँव (हरि०) मो०: ०९३१२८३७२४०

६. प्राचीन आर्ष ग्रन्थालय, जैन बाग, सहारनपुर (उ०प्र०)
मो०: ०९४१०८७४७०३

७. विशुद्ध ग्रन्थालय, सर्वऋतु विलास, उदयपुर (राजस्थान)

८. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, कीर्तिनगर, टोंक रोड, जयपुर (उ०प्र०)
फोन नं०: ०१४१-२७०१२७९

९. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कटरा सेवा कली, नया शहर, इटावा (उ०प्र०)
मो०: ०९४१२०६८६३९

कम्पोजिंग - वर्धमान कम्प्यूटर, फिरोजाबाद (उ०प्र०)

संशोधित संस्करण - प्रथम, सन् २०१८

प्रतियाँ - २०००

मूल्य - ५० ₹ — तीन बार स्वाध्याय का नियम

मुद्रक - महेन्द्रा पब्लिकेशन प्रा०लि०, ई - ४२,४३,४४, सेक्टर ७ नोएडा (उ०प्र०)

मंगल कामना के दो शब्द

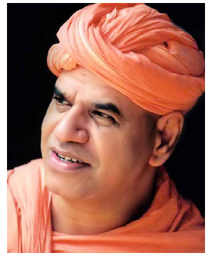

एक कहावत है कि "देश भ्रमण करो, कोश पढ़ो" यह प्राचीन पद्धति भी है, जिससे अनुभव बढ़ता है। देश भ्रमण में अनेक नये-नये शब्दों का संग्रह होता है एवं अपना कण्ठस्थ पद-कोश का भी उपयोग होता है। पद-कोश को रटो और अपने ज्ञान-कोश को बढ़ा लो । पद-कोश को अपने मस्तिष्क में संग्रह करना हो तो उसको पढ़ कर कण्ठस्थ करना जरूरी है। पद-कोश से अपने ज्ञान की अभिव्यक्ति में सहज ही घनत्व बढ़ता है। शब्द-कोश के बिना अपना ज्ञान; पेड़ों से रहित जंगल, फूल-पौधों से रहित उद्यान जैसा है, शब्द-कोश के बिना भाषा; अपूर्ण, अपंग होती है।

संस्कृत-भाषा साहित्य में अनेक शब्द-कोश हैं, जिसमें कवि अमरसिंह का "अमर-कोश" और धनञ्जय कवि का "धनञ्जय नाममाला" आदि शब्द-कोश ग्रन्थ है। धनञ्जय कवि; जैन होने के कारण जैन-आगम के शब्दों का भी संग्रह किया है, जिससे जैन-आगम के अध्ययन में भी सहयोग मिलता है।

निरन्तर स्वाध्यायशील मुनिश्री ने अभी तक कई ग्रन्थों की शुद्ध प्रतियाँ तैयार करके प्रकाशित करवायीं हैं। जिस शब्द का दिगम्बर जैन आम्नाय के अनुसार अर्थ करना चाहिये, वैसा ही होना चाहिये । समान अर्थ-वाचक शब्द काव्य रचना के लिये अपेक्षित हैं। व्याकरण, छन्द, अलंकार, नय, न्याय, तर्क एवं परम्परा के सब आयामों को जानकर काव्यों में शब्दों का चयन करके उपयोग किया जाता है। गुरु-लघु तथा अक्षर संख्या को ध्यान में रखते हुए काव्य रचना की जाती है, इसलिये "शब्द-कोश" ग्रन्थ आवश्यक है। परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण मुनिश्री अमितसागर जी महाराज ने धनञ्जय नाममाला की विस्तृत व्याख्या; परिशुद्धता के साथ दीर्घकालीन प्रयत्न के साथ विशिष्टरूप से सम्पादन का यह स्तुत्य कार्य श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला में परिपूर्ण किया है। यह भाषा-विज्ञानियों के लिये प्रयोजनभूत ग्रन्थ है। आप उत्कृष्ट चरित्रवान तो हैं हीं, साथ-साथ ज्ञानाराधना में तत्पर हैं, हम उनको भक्ति पूर्वक वन्दना करते हैं।

इति भद्रम् भूयात्, वर्धताम् जिन शासनम्.........

जगद्गुरु कर्मयोगी
स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी
अध्यक्ष-एस.डी.जे.एम.आई.एम.सी. ट्रस्ट (रजि०)
जैन मठ, श्रवणबेलगोला, कर्नाटक

प्रकाशकीय

गुरुदेव कहा करते हैं कि दर्पण और दीपक कभी झूठ नहीं बोलते हैं। जलते हुए दीपक को कहीं भी ले जा सकते हैं, किन्तु अँधेरे को कहीं नहीं ले जा सकते हैं।

जैन धर्म का आगम-सिध्दान्त; दर्पण एवं जलते हुए दीपक की तरह है। नकटे या कुरूप को दर्पण दिखाने से उसके कषाय उत्पन्न होती है। चोर-व्यभिचारी-व्यसनी को रोशनी का भय सताता है।

अज्ञानी; ज्ञान-दीपक का सामना नहीं कर सकता है। व्यसनी; दर्पण की झलक को सहन नहीं कर पाता है।

दर्पण; आदर्श को कहते हैं। दर्प जिसमें नहीं हो वह दर्पण है। दर्पण में देखने सब ललकते हैं, किन्तु दर्पण किसी को देखने नहीं ललकता; यही तो उसका आदर्श है।

दर्पण और दीपक को डराने-धमकाने वाले पत्थर और आँधियाँ हैं। जो दर्पण; पत्थर से नहीं डरता वही दर्पण है। जो दीपक; आँधियों से नहीं घबड़ाता वही दीपक है।

हम अपनी बात इन्हीं दो पूर्ण सत्यों के साथ प्रारम्भ करते हैं। पूज्य गुरुदेव से फिरोजाबाद जनपद की जनता; सन् १९९२ से परिचित हैं। परिचित हैं उनके दर्पणवत् स्वभाव से; धनिक-निर्धन, पूजक-निन्दक दोनों समान। परिचित हैं उनके दीपकवत् साहस से। वो कभी अपना परिचय स्वयं इस अन्दाज में देते हैं ——

आँधियों के बीच जो जलता हुआ मिल जाएगा।
उस दिये से पूछना मेरा पता मिल जाएगा॥
अय! आँधियों अपनी औकात में रहो।
हम तो जलते हुए दिये हैं जलते ही रहेंगे॥
देख चिरागों के शोले मञ्जिल से इशारा करते हैं।
तू हिम्मत हारा जाता है कहीं हिम्मत हारा करते हैं?

हम जनपदवासी; सन् १९९२ से इस जलते हुए दीपक को देख रहे हैं, जो व्यक्ति, परिवार, समाज, गाँव, शहर, राज्य, राष्ट्र एवं विश्व के लिए, अपने प्रकाश से मार्गदर्शन कर रहा है।

इस जलते हुए दीपक को; कितनी आँधियों-तूफानों ने बुझाने की कोशिश की, लेकिन यह दीपक बुझने की जगह और भी अधिक प्रकाशमान हो गया और अँधी-आँधियाँ; हार मानकर बैठ गईं।

इस दर्पण को; कितने ही छोटे-छोटे कङ्कण ही नहीं; पहाड़ जैसे पत्थर भी धमकी देते रहे, लेकिन दर्पण; दर्पण ही रहा, उन वेजान पत्थरों के सामने समर्पण नहीं हुआ ।

बस; इन्हीं दो उपमाओं में ही इस व्यक्ति का व्यक्तित्व समाया है। ख्याति-पूजा-लाभ से दूर, दूरदर्शन के प्रदर्शन एवं पोस्टरों के पोस्ट की परछाईयों से विलग, अनेक उपाधियों और पद-प्रतिष्ठा की होड़ से उदासीन ।

एक वैज्ञानिक की तरह वस्तु-तत्त्व की तह में जाकर उसे समझना जिनके स्वभाव में है । बड़े-बड़े ग्रन्थों के रहस्यों को सरलता से; **स्वरूप भेद और स्वामी भेद की कुञ्जी से; आगम, युक्ति, गुरूपदेश एवं स्वानुभव से सिध्द करना उनका लक्ष्य रहता है ।**

वैसे तो इतिहास में कोई भी आचार्य-गुरुजन अपना भौतिक परिचय लिखकर नहीं गए, किन्तु उनके जीवन्त कृत्य ही उनके अमर परिचय हो गए । गुरु जी कहा करते हैं कि ——

अच्छे कार्य स्वयं में प्रशंसनीय हुआ करते हैं, अतः हमें कभी; दूसरों से प्रशंसा की अपेक्षा नहीं रखना चाहिए ।

फिर भी हम भक्त-श्रध्दालुजन अपने इष्ट की आराधना-स्तुति करके पुण्योपार्जन कर लेते हैं, यह एक उद्देश्य है। दूसरा उद्देश्य; सब कोई उनके बारे में; उनके परिचय से सही परिचित हों प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से, अतः इस उद्देश्य से उनका परिचय भी देना अनिवार्य है।

आप में देखा है हम सबने; कुन्दकुन्दाचार्य का अध्यात्म और उनके जैसा धर्मायतनों को बिना हिंसा के बचाने वाला **'बलात्कारगण'**, मैनपुरी एवं फिरोजाबाद इनके उदाहरण हैं।

समन्तभद्राचार्य जैसा शास्त्रार्थ करने का अदम्य साहस एवं फिरोजाबाद जिले के चन्द्रवाड़ के किले में मूर्तियाँ प्रगटाने वाला गौरव पूर्ण अतिशय इसका प्रमाण है।

पूज्यपादाचार्य जैसी आगमोक्त लक्षणावली आप में हैं, क्योंकि आप पूज्यपादाचार्य एवं समन्तभद्राचार्य के आगम को सिराहने रखकर सोते हैं, यह अनुत्तर जिज्ञासा टीका इसका जीवन्त प्रतीक है।

अकलङ्काचार्य जैसे प्रमाणों की प्रचुरता; उनकी वाणी एवं लेखनी में विराज मान रहती है। आप कहते हैं, एक दर्पण को देखने; दूसरे दर्पण की जरूरत नहीं होती है, अतः एक प्रमाण के लिए दूसरे प्रमाण की जरूरत नहीं होती है। **जिसको जिनवाणी-आगम-सिध्दान्त में ही श्रध्दा नहीं है, उसे कितने ही**

आगम-सिध्दान्त दिखला दो; मानने वाला नहीं है।

मानतुङ्गाचार्य जैसी ताले टूटने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं से फिरोजाबाद जनपद अनजान नहीं है। वादिराज मुनिराज जैसी आस्था से असाध्य रोग से मुक्ति के चमत्कारी दृश्य जिनके स्वयं पैदा हो गए।

जिनसेनाचार्य जैसे निर्विकार-अनासक्त भाव; जो कर्त्ता में अकर्त्ता, भोक्ता में अभोक्ता की अनुभूति कराते हैं।

अमृतचन्द्राचार्य जैसे निर्नाम निर्माण—— कहीं-किसी भी जगह अपने व्यक्तिगत नाम के कोई आश्रम-मठ-मन्दिर, संस्थान आदि नहीं बनवाये। आप कहते हैं कि ——

जिस खुदा ने ये दुनिया बनाई, उसने अपनी फोटो नहीं छपाई।
दुनिया को बर्वाद करने वाले, अपनी फोटो छपाते फिरते हैं।।

आपका हमेशा शिक्षा एवं चिकित्सा पर जोर रहता है। शिक्षा चाहे लौकिक हो या पारलौकिक; सभी को प्रोत्साहन देते हैं। छोटे बच्चों से पढ़ाई के लिए पूछते हैं कि तुम्हें क्या बनना है ? **"कुर्सी विछाने वाला चपरासी या कुर्सी पर बैठने वाला ऑफीसर। बड़े बच्चों को कहते हैं कि तुम्हारी चार साल की पढ़ाई का जीवन; तुम्हारे चालीस साल बना देगा, फालतु वातावरण से बचो।"**

बालकों से लगाव, युवाओं को प्रेरणा, वृध्दों की सेवा-वैय्यावृत्ति, समाधिस्थों की साधना में आपका निर्यापकाचारित्व अनुभूत आदर्श है।

आपकी प्रथम प्रकाशित कृति मन्दिर है जो अद्यावधि हिन्दी, मराठी, गुज राती, कन्नड़ एवं अंग्रेजी संस्करणों में; लगभग दो लाख प्रतियों से भी अधिक प्रकाशित हो चुकी हैं।

आपने बाल साहित्य के रूप में बालगीत, बाल कहानियाँ, जैन चित्र कथायें, बाल विज्ञान के क्रमशः पाँच भाग, आसान उच्चारण, सरल उच्चारण, अनुपम पाठसंग्रह, रयणसार, द्रव्य संग्रह द्वारा मूलपाठों को उच्चारण-पढ़ने योग्य बनाया है।

इसी के साथ कई ग्रन्थों के प्रकाशन की प्रेरणा दी; जिनमें धर्म परीक्षा, सम्यक्त्व कौमुदी, दानशासन, दान चिन्तामणि, धर्मध्वज विशेषाङ्क, भक्तामर शतद्वयी, सिरिभूवलय, नाममाला, चौबीस ठाणा, गुरु-शिष्य दर्पण, बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र, श्री सिध्दचक्र विधान कवि-सन्तलाल जी, जैन-अभिषेक पाठ संग्रह, चौंतीस स्थान दर्शन आदि कृतियाँ कुछ प्रकाशित हैं, कुछ प्रकाशकाधीन हैं।

प्रवचन सङ्कलन में; आँखिन देखी आत्मा—— इसमें उत्तमक्षमादि दशधर्मों के स्वरूप को, आगमिक, वैज्ञानिक आदि के आधार पर विवेचित किया

गया है। दशलक्षण पर्वों में विद्वानों द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है।

अन्तरङ्ग के रङ्ग—— इसमें षट्लेश्या का वर्णन किया गया है। आप अपने परिणामों का स्वयं निरीक्षण करें। अपने भावों के अच्छे-बुरे की पहचान होती है।

अनुत्तर यात्रा—— सोलह कारण भावनाओं का औपन्यासिक विश्लेषण है कि साधारण-सी आत्मा त्रैलोक्य पूज्य तीर्थङ्कर पद तक कैसे पहुँचती है? कई संस्करणों में प्रकाशित हो चुके हैं।

नीतिशास्त्र; कुरल काव्य कृति—— उन नीतियों का संग्रह है जो दो हजार वर्ष पहले कुन्दकुन्दाचार्य ने सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखाय संकलित की थीं। जिनकी आज; व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य एवं राष्ट्र के कर्त्तव्यों के प्रति जागरुक करने की परम आवश्यकता है। इसका सम्पादन किया जो प्रभात प्रकाशन दिल्ली से २०१० में प्रकाशित हुआ।

आपकी ''बोलती माटी'' महाकाव्य कृति—— सरलतम भाषा की एक ऐसी अभिव्यक्ति है, जिसमें एक अकिञ्चन्य माटी को पात्र बनाकर, मद से भरे पात्रों को निर्मद बना दिया। तुच्छ से उच्च बनाने की शिक्षा देने वाली कृति; आज नहीं तो कल इसकी आवश्यकता अवश्य होगी। इसका प्रथम संस्करण; एक बार लगभग बाईस वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुका था, किन्तु पुनः उसके संशोधित-संस्करण का प्रकाशन अब हो चुका है।

अमृतचन्द्राचार्य कृत तत्त्वार्थसार कृति —— आपके द्वारा सम्पादित आगम की प्रथम कृति है जिसका श्रीधर्मश्रुत ज्ञान, हिन्दी टीका के रूप में सम्पादन; सन् २०१० में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित किया गया।

आज हमें यह परम सौभाग्य प्राप्त हो रहा है कि हम पूज्य मुनिश्री के द्वारा सम्पादित **'नाममालादि शब्द कोश'** का हिन्दी अनुवाद कर प्रकाशन कर रहे हैं।

गुरुदेव के द्वारा संकलित, रचित, सम्पादित साहित्य में मुनिश्री की अयाचित वृत्ति से; दान दाता उदार मन से स्वेच्छया राशि से सहयोग करते हैं, उन दानी महानुभावों के हम आभारी हैं।

मुनिश्री द्वारा निर्देशित श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान, श्रीदिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर, नसिया जी, कोटला रोड, फिरोजाबाद (उ०प्र०)। जिसमें प्राचीन-हस्तलिखित हजारों पाण्डु लिपियाँ एवं प्राचीन-अर्वाचीन प्रकाशित-उपलब्ध-अनुपलब्ध ग्रन्थ भण्डार में जैन धर्म पर शोध करने वालों के लिए उपलब्ध रहे एवं प्राचीन साहित्य-आगम-सिध्दान्त का संरक्षण-संवर्ध्दन हो। इसके लिए सकल जैन समाज मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

सम्पादकीय

भावों को भाषा के वस्त्र पहिनाये जाते हैं। व्याकरण; भाषा की शृङ्गारदानी है। अलङ्कार; भाषा के आभूषण हैं। रस; भाषा का रङ्गमञ्च है। छन्द; भाषा का सङ्गीत है। काव्य; भाषा का सौन्दर्य है।

मुहावरे एवं पहेलियाँ; बुद्धि की व्यायामशाला हैं। नीति वाक्य; भाषा की न्याय व्यवस्था है, जिससे भावों को 'अर्थ सङ्गत न्याय' मिलता है।

आज तुकबन्दी एवं अतुकान्त के दौर में भाषा; वस्त्र विहीन-नग्न, शृङ्गार विगत-वेशर्म, आभूषण रहित-फूहड़, दरिद्र, रस विहीन-विरस, छन्द से छूटकर स्वच्छन्द, सौन्दर्य को त्यागकर कुरूप हो गई है।

बौद्धिक व्यायाम न होने से 'मानसिक विकलाङ्गता' बढ़ रही है, नीति वाक्यों के अभाव में 'अर्थ सङ्गत न्याय' मिलना कठिन हो रहा है।

भाषा के शब्दों को तुकबन्दी में पिरोकर, उन्हें सिद्धान्त विहीन किया जा रहा है, **जैसे** - 'तर्क है सो नर्क, समपर्ण है सो स्वर्ग', लेकिन जिन्होंने तर्क को नर्क बतला दिया, वे आगम-सिद्धान्त की सिद्धि कैसे कर सकते हैं? कुतर्क से वस्तु स्वरूप को चूहे की तरह कुतरा जाता है, जैसे-चूहा कपड़ा कुतरता है तो वह अशुभ होता है एवं किसी के काम का नहीं रहता है। तर्क से वस्तु-स्वरूप को कतरा जाता है, जिससे टुकड़े-टुकड़े करके भी सिला जाता है। तर्क **'स्वभाव अगोचरा'** ऐसा वीरसेनाचार्य ने धवल टीका में कहा है, अतः तर्क को तर्क रहने दें, कुतर्क से तर्क का अपमान-अनादर न करें।

न्याय के आचार्यों ने तर्क की परिभाषा में 'व्याप्ति ज्ञान तर्क' कहा है। तर्क एक ऐसा भाषात्मक-शाब्दिक प्रहार है, जहाँ कुतर्क के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। कुतर्क करने वाला निरुत्तर होकर या तो शङ्का रहित हो जाता है या फिर पलायन कर जाता है।

वस्तु स्वरूप की सिद्धि के लिए, आचार्यों ने चार आयाम नियोजित किये हैं— (१) आगम; आप्त वाणी, (२) युक्ति; तर्क विज्ञान है, (३) गुरुपदेश अर्थात् गुरु आज्ञा, (४) स्वानुभव प्रत्यक्ष, स्वयं के प्रशस्त विवेक से स्वीकार करना।

आगम से आस्था की सिद्धि होती है। युक्ति-तर्क से स्व-मत मण्डन, पर-मत खण्डन होता है। गुरुपदेश से आस्था में स्थिरता आती है। स्वानुभव प्रत्यक्ष में आस्था अचल हो जाती है।

'कुतर्क' से हम; अपने अहङ्कार की, मान्यता की पुष्टी तो कर सकते हैं, किन्तु आगम-सिद्धान्त की सिद्धि नहीं कर सकते हैं, क्योंकि व्यक्ति अपने कुतर्कों

से; दूसरों से उलझ रहा है यानि अपने अज्ञान को ज्ञान सिद्ध करने में लगा है।

जो अपने अज्ञान को ज्ञान मानता है, वह दुनियाँ का सबसे बड़ा मूर्ख है। जो जिस विषय का जानकार नहीं है, वह उस विषय का का अज्ञानी है।

आज मूर्खता और अज्ञानता; दोनों का सम्मिश्रण तेजी से बढ़ रहा है, इसका प्रधान कारण है, भाषा-विज्ञान की विकृति 'भाषा-सङ्करता'।

वैसे तो मनुष्य मात्र को हर तरह की शुद्धता पूज्य है, प्रिय है, किन्तु स्वार्थ, अहङ्कार, धन-यश-इन्द्रिय लिप्सा के कारण 'सङ्करता' को अपना कर प्रसन्नित हो रहा है, जिससे व्यक्ति-परिवार, धर्म-समाज, देश-राष्ट्र; ये सभी प्रदूषित आरक्षणवाद के शिकार हो रहे हैं।

श्रीमद्-भगवद्-गीता में दश प्रकार की 'सङ्करता' का वर्णन है। सङ्करता से दुर्गति के पात्र बनते हैं, ऐसा उसमें कहा गया है। सङ्करता का शुद्ध अर्थ है, शुद्धता में मिलावट; विपरीत गुण-धर्मों का समावेश।

यहाँ प्रसङ्गानुसार 'भाषा-सङ्कर' की चर्चा है। हिन्दी-अंग्रेजी, उर्दू-संस्कृत सभी भाषाओं में सङ्करता का सम्प्रसारण हो रहा है, जिसे एक ही वाक्य में समझा जा सकता है, **'आज की तारीख में स्टेशन पर बहुत-सी ट्रेनें स्थित हैं'** इस वाक्य में 'आज' शब्द **हिन्दी** है, 'तारीख' शब्द **उर्दू** है, 'स्टेशन' शब्द **अंग्रेजी** है, ट्रेनें शब्द अंग्रेजी होते हुए भी अशुद्ध है, क्योंकि ट्रेन शब्द का बहुवचन 'ट्रेनस्' होता है, स्थिति शब्द 'स्था' धातु से बना है, अतः 'स्थित' शब्द **संस्कृत** है, यही भाषा-सङ्करता है।

'नेहरू जी अपनी ही भाषा में' एक घटना का जिक्र है, एक बालक ने नेहरू जी से कहा — ऑटोग्राफ प्लीज ! नेहरू जी ने अपना नाम अंग्रेजी में लिख दिया, बच्चे ने जब देखा कि नेहरू जी ने केवल अपना नाम ही लिखा है तब बालक ने कहा कि इसके साथ कोई सन्देश लिख दीजिए, नेहरू जी ने सन्देश में लिखा-'सदा फूल से महकते रहो'। बालक ने उसे देखकर पुनः कहा-इसमें तारीख नहीं लिखी तब नेहरू जी ने तारीख भी लिख दी। बालक ने जब उसे पूरी तरह पढ़ तो ऑटोग्राफ; अंग्रेजी में, सन्देश; हिन्दी में, तारीख; उर्दू में लिखी थी। बालक ने नेहरू जी से पूँछा तब नेहरू जी ने कहा कि जब तुमने कहा कि—'ऑटोग्राफ प्लीज' तब अंग्रेजी में लिखा, तुमने कहा सन्देश लिखो, सन्देश हिन्दी में लिखा, तुमने कहा—तारीख लिखो, तारीख उर्दू शब्द है, अतः हमने उसे उर्दू में लिखा। यह है बुद्धिमानों की भाषा-बुद्धिमत्ता।

भाषाविद्-शिक्षाविद्-साहित्यकारों का ध्यान इस ओर नहीं है कि भाषा लेखन में; ह्रस्व (छोटा), दीर्घ (बड़ा), विसर्ग (ः), अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) आदि की मात्रायें कहाँ लगना चाहिए ? अर्द्ध विराम (;), अल्प विराम (,), पूर्ण विराम

(।), सम्बोधन (!), प्रश्न वाचक (?) चिन्ह; कहाँ, क्या और क्यों लगाये जाते हैं ?

गूगल-रिसर्च में तीन डब्ल्यू (**WWW.COM**) का मतलब है, **Where, What, Why** (कहाँ, क्या और क्यों) की जानकारी है।

जैन आचार्यों ने वस्तु स्वरूप को समझने के लिए 'सप्त नयों' का कथन किया है, जिसमें एक 'शब्द-नय' भी है। शब्द-नय का अर्थ है, उस शब्द का व्याकरण से शुद्धिकरण । शब्द-नय में; शब्द के लिंग, संख्या, कारक आदि का ध्यान रखा जाता है। शब्द रचना अशुद्ध होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। नुक्ता के फेर से खुदा; जुदा होता है। चिंता और चिता में बिन्दु मात्र का अन्तर है। रोको; मत जाने दो । रोको मत; जाने दो, इन दोनों वाक्यों में मात्र अर्द्ध विराम (;) का अन्तर है।

भाषा; शब्द, अर्थ एवं भाव से शुद्ध होना चाहिए, क्योंकि शब्द-शुद्धि से अर्थ-शुद्धि, अर्थ-शुद्धि से भाव-शुद्धि होती है। पण्डित; शब्द पढ़ते हैं, विद्वान; अर्थ करते हैं, किन्तु ज्ञानी; भाव में रमते हैं।

जीवन में यदि तुम्हें होश है तो, तुम्हारा जीवन ही शब्द कोश है।
खोजो अपनी श्वासों में गहन अर्थ को, अर्थ पाने से ही भावों में जोश है।।

तत्त्वार्थ सूत्र में उमास्वामी आचार्य ने पाँच प्रकार के स्वाध्याय का कथन किया है, जिसमें प्रथम स्वाध्याय विधि का नाम 'वाचना' है। वाचना स्वध्याय में; ग्रन्थ अर्थात् शब्द का, अर्थ का एवं उभय अर्थात् शब्द और अर्थ; इन दोनों का शुद्धरूप से पढ़ना-अर्थ करना, वाचना-स्वाध्याय है।

हमारे पास तीन अमूल्य रत्न हैं, हमारा शरीर, वचन और मन; सम्पदा हैं। जिन- जिन आत्माओं ने अपने शरीर, वचन एवं मन का सदुपयोग किया, उनके नाम का पत्थर; मन्दिरों में रखकर पूजा जाता है और जिन्होंने इनका दुरुपयोग किया, उनके नाम का पुतला; होली और दशहरे पर जलाया जाता है।

संसार के प्रत्येक धर्म ने मनुष्य शरीर को अमूल्य रत्न कहा है, ''नर-तन रतन अमोल'' ।

संसार का प्रत्येक व्यवहार; चाहे वह लौकिक हो अथवा पारलौकिक, ''वचनों'' से जुड़ा है। राजा हरिश्चन्द्र की प्रसिद्धि 'सत्य वचन' से है।

चन्द्र टले सूरज टले, टले जगत व्यवहार ।
पर राजा हरिचन्द्र का, टले न सत्य विचार ।।

पिताश्री राजा दशरथ के वचनों की रक्षा के लिए ही श्रीरामचन्द्र जी ने वनवास स्वीकार किया था ।

'रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाय पर 'वचन' न जाई'

महाभारत की भूमिका में भी 'वचनों' का ही हाथ था। ''अन्धों के अन्धे ही पैदा होते हैं'', अतः नीतिकारों ने कहा है कि —

शब्द सम्हाल कर बोलिए, शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे, एक करत है घाव ॥

धर्म ग्रन्थों की सिद्धि भी उनके **'सत्य'** शब्दों पर आधारित है एवं वक्ता की प्रमाणता से उनके वाक्य प्रमाणित माने जाते हैं, यह न्याय-शास्त्र का सूत्र है। न्याय- लय भी 'सत्य' सिद्धि के लिए बनें हैं, 'जो कुछ कहूँगा; सत्य कहूँगा, सत्य के सिवाय कुछ नहीं कहूँगा'।

व्यापार भी 'वचनों' की प्रमाणिकता-अप्रमाणिकता पर आधारित है, **''मैं धारक को दो हजार रुपये अदा करने का 'वचन' देता हूँ''**, ऐसा भारतीय मुद्रा पर टङ्कित होता है।

यह सब; भाषा, वचनों या शब्दों का माहात्म्य है, अतः भाषा, वचनों या शब्दों की विशालता, प्रायोजनता, प्रासाङ्गिकता के सही अर्थ प्रस्तुत हों, इसके लिए ही शब्द कोशों की रचना की गयी है, क्योंकि राजा, सेठ एवं विद्वान; बिना कोश के भिखारी-दरिद्र के समान हैं।

सूक्ति है **'वचने किं दरिद्रता'** जब बोलना ही है तो अच्छा बोलो, सोचना ही है तो अच्छा सोचो, करना ही है तो अच्छा करो।

वर्तमान समय में आगम-शास्त्र-ग्रन्थों की मूल गाथाओं, श्लोकों एवं सूत्रों के पद्यानुवाद प्रारम्भ हैं, जिनमें कहीं-कहीं पद्य रचना में ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोजन; मात्र तुकबन्दी के लिए ही किया गया है, उन शब्दों का; गाथा, श्लोक या सूत्र से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध ही नहीं है। ऐसे प्रसङ्ग पद्यानुवाद द्वारा भी जिनवाणी-आगम का अवर्णवाद सुनिश्चित है। **'केवलि श्रुत संघ देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य' तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार; केवली, श्रुत, संघ, धर्म एवं चतुर्निकाय के देवों का अवर्णवाद करने से दर्शन मोहनीय कर्म का ७० कोड़ा-कोड़ि का बन्ध होता है, ऐसा कसाय पाहुड़ ग्रन्थ में भी कहा है।**

सन् २००२ की घटना है, जयपुर (राज०) के टोंक रोड, कीर्तिनगर में हमारा वर्षायोग हुआ, उसी समय संत शिरोमणि आचार्य श्रीविद्यासागर जी के प्रबुद्ध शिष्य पूज्य मुनि श्रीक्षमासागर का भी वर्षायोग, भट्टारक जी की नसिया में हो रहा था। सामाजिक व्यवस्थानुसार, क्षमावाणी आदि कार्यक्रम एक ही मञ्च पर होने से कई बार उनके दर्शन का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ।

एक दिन शङ्का-समाधान के कार्यक्रम में पूज्य मुनिश्री से किसी ने प्रश्न

किया कि गुरुदेव! भक्तामर स्तोत्र के संस्कृत पाठ-उच्चारण में एवं उसके हिन्दी-पद्यानुवाद-पाठ के उच्चारण में क्या अन्तर है ? इसके उत्तर में मुनिश्री ने दोनों पाठों के उच्चारणों का सामञ्जस बिठाने की कोशिश की थी। इसके बाद पूज्य मुनिश्री से आज्ञा लेकर हमने कहा कि हिन्दी के पद्यानुवाद एवं संस्कृत के श्लोक उच्चारण में इतना ही अन्तर है, जितना चूरमा और चूरमा के लड्डू के स्वाद में अन्तर होता है। चूरमा बिखरा हुआ होने से मुँह में फैल जाता है, जिससे स्वाद में कम मीठा लगता है, किन्तु उसी चूरमें का लड्डू बन जाने से उसमें घनत्व आ जाता है, जिससे; उसके स्वाद में अधिक मीठापन लगता है।

उसी प्रकार संस्कृत के शब्दों में; सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगने से घनत्व आ जाता है, जिसके कारण कर्मों की निर्जरा अधिक होती है, किन्तु पद्यानुवाद में शब्द बिखरे-बिखरे होते हैं, अतः संस्कृत के पाठ में शुद्धता पूर्णरूप से है। पद्यानुवाद तो मात्र भावों को व्यक्त करने के लिए बाल-भाषा के समान है, लेकिन संस्कृत भाषा; रूखीभाषा को सरस बनाने के लिए है।

जैसे - सब्जी को; धनिया, जीरा, हल्दी, नमक, मिर्च आदि मसाले डालकर संस्कारित करते हैं, जिससे सब्जी स्वादिष्ट बन जाती है। उसी प्रकार भाषा में; सन्धि समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगने से भाषा का स्वाद बढ़ जाता है, अतः शब्द कोश; भाषा की मसालेदानी है, जिसमें शब्दों के भिन्न-भिन्न स्वाद वाले अर्थ-मसाले भरे होते हैं।

प्रस्तुत संस्करण में पं० मोहनलाल शास्त्री, जबलपुर द्वारा सम्पादित नाममाला से पाद टिप्पणों को क्रमशः १,२,३ आदि क्रम से लिखा है। सिद्धान्तरत्न, न्यायरत्न ब्र० कमल भैया एवं सिद्धान्तरत्न, न्यायरत्न ब्र० पवन भैया; वर्तमान सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य क्रमशः मुनिश्री निर्दोषसागर जी, मुनिश्री निर्लोभसागर द्वारा सम्पादित नाममालादि शब्द कोश, जिसमें नाममाला, अनेकार्थ, अनेकार्थ-निघण्डु के साथ ही अमर कवि एवं पुरुषोत्तम कवि के एकाक्षरी शब्द-कोश को भी साथ सङ्कलित किया गया है।

नाममाला के १ श्लोक से लेकर १०० श्लोक तक क्रम संख्या में हैं, किन्तु नाममाला भाष्य प्रति में १०१ श्लोक से २०१ श्लोक में कुछ श्लोकों की संख्या क्रम आगे पीछे हो गये हैं। अर्थ निकालने के लिए भी क्रम प्राप्त खण्ड-श्लोकों का प्रयोग है, अतः शब्दानुक्रमणिका में भी अन्तर आ गया है।

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित एवं पं० शम्भुनाथ त्रिपाठी द्वारा सम्पादित नाममाला भाष्य में जो अनेकार्थ-निघण्डु है, उसके अन्त के १४५ से १५४ तक के

श्लोकों के चरण लिपिकार के द्वारा भूलवश कुछ आगे-पीछे हो गये हैं, जिससे उन श्लोकों का अर्थ; मिश्रित हो गया है, उन श्लोकों के चरणों को एवं उनके अर्थ को भी युक्ति से व्यवस्थित करने का प्रयास किया है।

इसी के अन्त में भाव-प्रकाश ग्रन्थ से उद्धृत; शाक (सब्जी), भोजन (खाद्य-पदार्थ), धान्य, फल, वृक्ष, पुष्प एवं कपूर-मसाले आदि वर्ग के नाम दिये हैं। परिशिष्ट में अकारादि क्रम की शब्दानुक्रमणिका दी है, जिससे पाठकों को श्लोक के अकारादि शब्द सहज मिल जायें।

प्रस्तावना का मूल भाग, शब्द-कोश का इतिहास एवं महत्त्व को सुरक्षित रखते हुए महाकवि धनञ्जय का परिचय भी ज्ञानपीठ से प्रकाशित प्रति से लिया है। इस शब्द कोश की विशेष महत्त्वता दर्शाने के लिए, **कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी, श्रवणबेलगोला ने अपनी मंगल कामना के दो शब्द लिख कर कृति का बहुमान ज्ञापित किया है।**

इन सभी साहित्य सेवियों को आत्मिक आशीर्वाद एवं प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशक श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान, फिरोजाबाद (उ०प्र०), अर्थ सहयोगी दानदाता एवं मुद्रक; महेन्द्रा पब्लिकेशन (प्रा०लि०) ई-४२,४३,४४ सेक्टर ७, नोएडा (उ०प्र०) सभी को अनन्त अनुग्रहाशीष स्वीकृत हों।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

ॐ नमः
ज्येष्ठ शुक्ला पञ्चमी
३०-५-२०१७
श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)

सङ्केतावली

(स्त्री०)	=	स्त्री लिङ्ग
(पुं०)	=	पुल्लिङ्ग
(न०)	=	नपुंसक लिङ्ग
(त्रि०)	=	तीनों लिङ्ग
(अ०)	=	अव्यय

प्रस्तावना

''शब्द ब्रह्मणि निष्णातः परब्रह्माधिगच्छति'' —— ब्रह्मबिन्दु०

शब्दब्रह्म में पारङ्गत व्यक्ति परब्रह्म की प्राप्ति कर सकता है। यह सिद्धान्त इस बात की सूचना देता है कि साधक को पहिले शब्दशक्ति और उसकी मर्यादा तथा भाव का ज्ञान आवश्यक है। यदि उसे शब्द के वाच्यार्थ और तात्पर्यार्थ की प्रक्रिया का बोध नहीं है तो वह भटक सकता है। वस्तुतः शब्द; भावों के ढोने का एक लङ्गड़ा वाहन है। जब तक सङ्केत ग्रहण न हो तब तक उसकी कोई उपयोगिता ही नहीं है। एक ही शब्द सङ्केत; भेद से भिन्न-भिन्न अर्थों का वाचक होता है, इसीलिए दर्शनशास्त्रों में एक पक्ष यह भी उपलब्ध होता है कि शब्द केवल वक्ता की विवक्षा को सूचित करते हैं, पदार्थ के वाचक नहीं हैं। 'घट' शब्द का सङ्केत वक्ता ने जिस रूप में जिस श्रोता को ग्रहण करा दिया है, उसी अभिप्राय का द्योतन वह शब्द उस श्रोता को करा देगा ।

'शब्द' विद्यमान अर्थ को भी कहता है और अविद्यमान को । एक खरविषाण भी शब्द है, जिसका अखण्ड वाच्य पदार्थ इस संसार में नहीं है और घट शब्द भी है, जिसका वाच्य घड़ा मौजूद है, अतः शब्द के सम्बन्ध में यह निश्चय करना कि – यह शब्द अर्थवाची है और यह अनर्थवाची; टेड़ी-खीर है फिर भी शाब्दिकों ने यह प्रयत्न किया है कि शब्द के सार्थक्त्व और अनर्थकत्व का विवेक हो जाये ।

उसका मुख्य उपाय है शक्ति ग्रह या सङ्केत ग्रहण । जिस अर्थ में जिस शब्द का सङ्केत ग्रहण होता है, वह उस अर्थ का वाचक हो जाता है। यह सङ्केत कब-किसने ग्रहण कराया इसका निर्णय कठिन है। ईश्वर को सङ्केत ग्रहण कराने के लिए घसीटना श्रद्धा की वस्तु है। इसका इतना ही अर्थ है कि वृद्धपरम्परा से शब्द सङ्केत का ग्रहण बराबर होता आया है और वह अनादि है। उसमें विशेष हेर-फेर होकर भी सामान्यतया सङ्केत की परम्परा अनादि है। जब से यह जीव है तभी से शब्द सङ्केत है। इस सङ्केत ग्रहण के उपाय निम्न लिखित हैं ——

''शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान, कोशाप्तवाक्याद्-व्यवहारतश्च ।
वाक्यस्य शेषाद्-विवृते-र्वदन्ति, सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ।।''

अर्थात् व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष, विवरण और प्रसिद्ध शब्द के सान्निध्य से सङ्केत ग्रहण होता है। इनमें व्याकरण से यौगिक शब्दों का व्युत्पत्ति द्वारा सङ्केत ग्रहण हो भी जाये पर रूढ़ और योगरूढ़ शब्दों का सङ्केत ग्रहण व्याकरण से नहीं हो सकता । अन्ततः कोश ही एक ऐसा उपाय बचता है, जिससे सभी प्रकार के शब्दों का सङ्केत-ग्रहण हो जाता है।

कोश अर्थात् खजाना या भण्डार । व्याकरण से सिद्ध या वृद्धपरम्परा से प्रसिद्ध कैसे भी यौगिक रूढ़ या योगरूढ़ आदि शब्दों का अनेकार्थ के साथ संग्रह कोश में होता है। भाषा वहीं समृद्ध और जीवित समझी जाती है, जिसका शब्द भण्डार पर्याप्त हो और जिसमें व्यवहार और परमार्थ के लिए उपयोगी सभी शब्द विद्यमान हों। जिसमें अन्य भाषाओं के या विदेशी शब्दों के पचाने की या उन्हें स्व-स्वरूप करने की सामर्थ्य हो, इस दृष्टि से संस्कृत भाषा उतनी समृद्ध नहीं बन सकी । इसका कारण यह रहा है कि इस भाषा पर एक वर्ग का प्रभुत्व रहा और उसने इसकी पाचन शक्ति को धर्म-अधर्म के कल्पित बन्धन से जकड़ दिया था । उस वर्ग ने उस युग में प्रचलित अपभ्रंश और प्राकृत बोलियों का; जो उस समय की जनबोलियाँ थीं, उच्चारण करना पाप घोषित किया था फिर भी संस्कृत की जो प्रकृति-प्रत्यय-उपसर्ग आदि के योग से शब्दोत्पादन शक्ति थी, उसी के कारण यह बन्धनबद्ध होकर भी विद्वद्भोग्य अवश्य बनी रही । संस्कृत को लोकभाषा का पद या सबकी बोली होने का सौभाग्य नहीं मिल सका । इस भाषा सम्बन्धी धर्माधर्म विचार ने संस्कृत के कोशागार को भी सीमित कर दिया ।

भाषा के एकाधिकारियों ने तो यहाँ तक कह डाला है कि अपभ्रंश या अन्य लोकभाषा के शब्दों में वाचक शक्ति ही नहीं है। यष्टि का अपभ्रंश लट्ठी या लाठी है। ये लट्ठी या लाठी शब्द में वाचकशक्ति स्वीकार नहीं करना चाहते । इनका कहना है कि वाचकशक्ति तो 'यष्टि' शब्द में ही है। लट्ठी या लाठी शब्द सुनकर जो श्रोता को लाठी पदार्थ का ज्ञान होता है, उसकी विधि इस प्रकार है — प्रथम ही श्रोता; लाठी शब्द को सुनकर संस्कृत 'यष्टि' शब्द का स्मरण करता है और फिर उस 'यष्टि' शब्द से पदार्थ बोध होता है अर्थात् ऐसे श्रोता को जिसने स्वप्न में भी 'यष्टि' शब्द नहीं सुना, उसे भी लाठी शब्द से पदार्थ बोध के लिए संस्कृत 'यष्टि' शब्द का स्मरण आवश्यक है।

इस भाषाधारित वर्गप्रभुत्व से संस्कृत भाषा एक विशिष्ट वर्ग की भाषा बन कर रह गई । पा० महाभाष्य के पस्पशा आह्निक में लिखा है कि —— "तस्माद् ब्राह्मणेन न म्लेच्छितवै, नापभाषितवै, म्लेच्छो वा एष अपशब्दः" अर्थात् ब्राह्मण को न तो म्लेच्छ शब्दों का व्यवहार करना चाहिए और न अपभ्रंश का ही । अपशब्द म्लेच्छ हैं। अपशब्द का विवरण भी वहीं यह दिया है —— "यदि तावच्छब्दोपदेशः क्रियते, गौरित्येतस्मिन्नुपदिष्टे गम्यत एतद् गाव्यादयोऽपशब्दा इति" अर्थात्-गौ शब्द है और गावी गैया आदि अपशब्द हैं।

यद्यपि भाषा को संस्कृत रखने के लिए व्याकरण का संस्कार आवश्यक है

तभी वह एक अपने निश्चित रूप में रह सकती है, लिंग और वचन का अनुशासन भी इसीलिए आवश्यक होता है, परन्तु उसके उच्चारण में किसी जाति विशेष का या वर्ग विशेष का अधिकार मानने से उसकी व्यापकता तो रुक ही जाती है। नाटकों में स्त्री, शूद्रों तथा दासों से प्राकृत भाषा का बुलवाया जाना उक्त रूढ़ि का ही साक्षी है।

इतना ही नहीं, धर्मक्षेत्र में साधु शब्द अर्थात् संस्कृत शब्द का उच्चारण ही पुण्य माना गया। इसका यह सहज परिणाम था कि धर्म का ठेका भी भाषा प्रभुत्व के द्वारा एक वर्ग विशेष को मिला और हुआ भी यही। धर्म का अधिकार और उससे आर्थिक सम्बन्ध एक वर्ग का हो गया।

इस सम्बन्ध में मौलिक क्रान्ति महाश्रमण महावीर और बुद्ध ने की। उनने भाषा के इस कल्पित बन्धन को तोड़ कर जनभाषा में धर्म का उपदेश दिया और स्त्री, शूद्र तथा पामर से पामर व्यक्तियों के लिए धर्म का क्षेत्र खोला। धर्म के उच्च पद के लिए जाति का कोई बन्धन इनने स्वीकार नहीं किया। इस भाषा क्रान्ति से प्राकृत भाषाओं का विकास हुआ। यह नहीं है कि प्राकृत भाषाएँ; व्याकरण और लिङ्गानुशासन से मुक्त हों, उनके अपने व्याकरण हैं, अपने नियम हैं, जिनके अनुसार वे पल्लवित पुष्पित और फलित होती रही हैं।

महावीर और बुद्ध के काल से लेकर ईसा की तीसरी सदी तक प्राकृत भाषाओं को गति मिलती रही। अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा में उपलब्ध होते हैं। शासनादेश प्राकृत भाषा में चलते रहे हैं, पुनः संस्कृत युग में इन भाषाओं की गति मन्द पड़ी। इस युग में जैन और बौद्ध आचार्यों ने भी ग्रन्थ रचना संस्कृत में ही की। यही कारण है कि दोनों के विपुल साहित्य से संस्कृत का कोशागार भरा हुआ है। दार्शनिक क्षेत्र में उथल-पुथल तो नागार्जुन, दिग्नाग, समन्तभद्र, सिद्धसेन, अकलङ्क आदि के ग्रन्थों से ही मची। तात्पर्य यह कि श्रमण परम्परा ने मध्यकाल में संस्कृत भाषा के विकास में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

नाममाला कोश का एक सुन्दर और व्यवहारोपयोगी आवश्यक शब्दों से समृद्ध ग्रन्थ है। महाकवि धनञ्जय ने २०० श्लोकों में ही संस्कृत भाषा के प्रमुख शब्दों का चयन कर गागर में सागर भर दिया है। शब्द से शब्दान्तर बनाने की इनकी अपनी निराली पद्धति है। जैसे-पृथिवी के नामों के आगे 'धर' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम, 'मनुष्य' के नामों के आगे 'पति' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम, 'वृक्ष' के नामों के आगे 'चर' शब्द जोड़ने पर बन्दर के नामों का बन जाना आदि।

इसके साथ ही एक अनेकार्थ निघण्टु भी मुद्रित किया गया है। इसके अन्त में निम्नलिखित पुष्पिका लेख है —— ''इति महाकवि धनञ्जयकृते निघण्टुसमये

शब्दसंकीर्णे अनेकार्थप्ररूपणे द्वितीय-परिच्छेदः'' इसकी एक मात्र अशुद्धतम प्रति पं॰ जुगलकिशोर जी मुख्तार अधिष्ठाता वीरसेवा-मन्दिर से प्राप्त हुई थी। रचना शैली आदि से यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह उन्हीं धनञ्जय की कृति है, यद्यपि पुष्पिका वाक्य में स्पष्ट रूप से धनञ्जय का उल्लेख है। इसके साथ ही एक अज्ञातकर्तृक एकाक्षरी कोष का भी मुद्रण किया है। इसकी हस्तलिखित प्रति भी वीर-सेवा-मन्दिर से ही प्राप्त हुई थी।

ग्रन्थकार

[महाकवि धनञ्जय]

नाममाला के कर्त्ता महाकवि धनञ्जय हैं। इन्होंने स्वयं अपने किसी ग्रन्थ में अपने समय आदि के बारे में निर्देश नहीं किया है, ये गृहस्थ थे। द्विसन्धानकाव्य के अन्तिम श्लोक की व्याख्या में उसके टीकाकार ने धनञ्जय के पिता का नाम वसुदेव, माता का नाम श्रीदेवी और गुरु का नाम दशरथ सूचित किया है। इनकी ख्याति 'द्विसन्धानकवि' के नाम से थी। नाममाला के अन्त में पाया जाने वाला यह श्लोक स्वयं इसका साक्षी है —

''प्रमाण-मकलङ्कस्य, पूज्यपादस्य लक्षणम्।
द्विसन्धानकवेःकाव्यं, रत्नत्रय-मपश्चिमम्॥''

अर्थात् अकलङ्कदेव का प्रमाण शास्त्र, पूज्यपाद का लक्षण-व्याकरण शास्त्र और द्विसन्धानकवि का द्विसन्धानकाव्य; ये तीनों अपूर्व रत्नत्रय हैं। यह श्लोक नाममाला के भाष्यकार अमरकीर्ति के सामने था, उनने इसकी व्याख्या भी की है। इसमें इनका उपनाम 'द्विसन्धानकवि' सूचित किया गया है। ठीक भी है, क्योंकि महाकवि धनञ्जय की सर्वश्रेष्ठ चमत्कारिणी कृति द्विसन्धानकाव्य ही है। वादिराज सूरि ने पार्श्वनाथ चरित के प्रारम्भ में द्विसन्धान काव्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है —

''अनेकभेदसन्धानाः खनन्तो हृदये मुहुः।
बाणा धनञ्जयोन्मुक्ताः कर्णस्येव प्रियाः कथम्।''

अर्थात् धनञ्जय के द्वारा कहे गए अनेक सन्धान-अर्थभेद वाले और हृदयस्पर्शी वचन; कानों को ही प्रिय कैसे? जैसे कि अर्जुन के द्वारा छोड़े जाने वाले अनेक लक्ष्यों के भेदक मर्मभेदी वाण कर्ण को प्रिय नहीं लगते?

द्विसन्धान काव्य अपने समय में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। इसका उल्लेख धाराधीश भोजराज के समकालीन आचार्य प्रभाचन्द्र ने अपने प्रमेयकमलमार्त्तण्ड

(पृ० ४०२) में किया है।

जल्हण (१२वीं सदी) विरचित सूक्ति-मुक्तावली में राजशेखर के नाम से धनञ्जय की प्रशंसा में निम्नलिखित पद्य उद्धृत है —

''द्विसन्धाने निपुणतां स तां चक्रे धनञ्जयः।
यया जातं फलं तस्य सतां चक्रे धनञ्जयः ।।''

इस श्लोक में राजशेखर ने धनञ्जय के द्विसन्धानकाव्य का मनोमुग्धकर सरणि से उल्लेख किया है।

धनञ्जय कवि के द्वारा एक विषापहार स्तोत्र भी बनाया गया है। यह अपने प्रसाद ओज और गाम्भीर्य के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं कि यह स्तोत्र; कवि ने अपने सर्पदष्ट पुत्र का विष उतारने के लिए बनाया था।

समयविचार —

इनके समय निर्णय के लिए निम्नलिखित प्रमाण हैं —

(१) प्रमेयकमलमार्तण्ड आदि के रचयिता प्रभाचन्द्र (ई० ११वीं सदी) ने इनके द्विसन्धान-काव्य का उल्लेख किया है, अतः ये ११वीं सदी के बाद के विद्वान् तो नहीं हैं।

(२) इसी तरह वादिराज सूरि (सन् १०३५) ने पार्श्वनाथ चरित में धनञ्जय और द्विसन्धान का निर्देश किया है, अतः ये ११वीं सदी के बाद के नहीं हैं।

(३) जल्हण (१२वीं सदी) ने राजशेखर के नाम से सूक्तिमुक्तावली में जो पद्य उद्धृत किया है, वह राजशेखर काव्यमीमांसाकार राजशेखर है। इनका उल्लेख सोमदेव (ई० ९६०) के यशस्तिलक चम्पू में पाया जाता है, अतः राजशेखर का समय ई० १०वीं सदी सुनिश्चित है। राजशेखर के द्वारा प्रशंसित होने के कारण धनञ्जय का समय १०वीं सदी के बाद का नहीं हो सकता।

(४) डॉ० हीरालालजी ने षट्खण्डागम; प्रथम भाग की प्रस्तावना (पृ० ६२) में यह सूचित किया है कि जिनसेन के गुरु; वीरसेन स्वामी ने धवला टीका (पृ० ३८७) में अनेकार्थ नाममाला का निम्नलिखित श्लोक प्रमाणरूप में उद्धृत किया है —

''हेतावेवं प्रकाराद्यैः व्यवच्छेदे विपर्यये।
प्रादुर्भावे समाप्तौ च इति शब्दं विदुर्बुधाः ।।''

यह श्लोक अनेकार्थ नाममाला का है। धवलाटीका वि० सं० ८७३ सन् ८१६ में समाप्त हुई थी, अतः धनञ्जय का समय ९वीं सदी के बाद नहीं हो सकता।

(५) धनञ्जय ने अकलङ्क देव का उल्लेख 'प्रमाणमकलङ्कस्य' श्लोक में किया है। अकलङ्क का समय ई० ७वीं सदी निश्चित है, अतः धनञ्जय ७वीं सदी से पूर्व के

नहीं हो सकते।

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास के लेखकद्वय ने धनञ्जय का समय ई० १२वाँ शतक का मध्य निर्धारित किया है। (पृ० १७४) उनने अपने इस मत की पुष्टि के लिए डॉ० के. बी. पाठक महाशय का यह [1]मत भी उद्धृत किया है कि — -"धनञ्जय ने द्विसन्धान महाकाव्य की रचना ई० ११२३ और ११४० के मध्य में की है", परन्तु उपरोक्त प्रमाणों के आधार से धनञ्जय का समय ई० ८वीं सदी का अन्त और ९वीं का पूर्वार्ध सिद्ध होता है। जल्हण की सूक्ति की सूक्तिमूक्तावली में जो ई० १२वीं सदी की रचना है। राजशेखर के नाम से उद्धृत 'द्विसन्धाने निपुणता' श्लोक; काव्यमीमांसाकार राजशेखर का ही हो सकता है, न कि प्रबन्धकोश के कर्त्ता राजशेखर का। संस्कृत साहित्य के इतिहास के लेखकद्वय यहाँ भ्रान्ति कर बैठे हैं, वे स्वयं जल्हण को १२वीं सदी का विद्वान् लिखकर भी उसमें उद्धृत राजशेखर को १४वीं सदी का जैन राजशेखर बताते हैं।

अतः धनञ्जय का समय उपर्यक्त प्रमाणों के आधार से ई० ८वीं का उत्तर भाग और नवीं का पूर्व भाग प्रमाणित होता है।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

१. इसी के आधार से कल्पद्रु कोश की प्रस्तावना (**P. XXXii**) में श्री रामावतार शर्मा ने भी धनञ्जय का समय १२वीं सदी लिखा है।

धनञ्जय नाममाला शब्द कोश; अकारादि शब्द

अनुक्रमणिका

क्र०	नाम	श्लोक सं०
१.	अँगरखे के नाम	१९८
२.	अँगुली के नाम	१००
३.	अग्नि के नाम	६४,६५
४.	अचानक के नाम	१८२
५.	अन्धकार के नाम	१४९
६.	अवधान के नाम	१५४
७.	अभ्यास के नाम	१८८
८.	अर्जुन के नाम	१४३,१४४
९.	अवस्था के नाम	१२४
१०.	अष्टापद के नाम	९०
११.	आकाश के नाम	५३
१२.	आज्ञा के नाम	१५५
१३.	आदिनाथ के नाम	११५
१४.	आमन्त्रण के नाम	१५८
१५.	आवाजों के नाम	१०५,१०६,१०७
१६.	आश्चर्य के नाम	१७३
१७.	आसन के नाम	११३
१८.	इन्द्रिय के नाम	१३०
१९.	इन्द्र के नाम	५७,५८,५९,६०,१८१
२०.	उत्प्रेक्षा के नाम	१३९
२१.	उत्साह के नाम	१७४
२२.	उपमा के नाम	१३७
२३.	उपमान के नाम	१३७,१३८
२४.	ऊँचे-नीचे का नाम	१८५
२५.	ऊँचे के नाम	१५९
२६.	ऊँट के नाम	९१
२७.	ओष्ठ के नाम	१०१
२८.	कटाक्ष के नाम	९९
२९.	कठोर के नाम	१५६
३०.	कदली के नाम	१८३
३१.	कन्धे के नाम	१००
३२.	कपूर के नाम	११८
३३.	कमर के नाम	१०३
३४.	कमर के आगे-पीछे के नाम	१०३
३५.	कमल के नाम	१६,२०
३६.	कमलिनी के नाम	२३
३७.	करधौनी के नाम	१२०
३८.	कर्ण के नाम	९८
३९.	कलंक के नाम	१५३,१५४
४०.	कल्याण के नाम	२००
४१.	कस्तूरी के नाम	११८
४२.	कष्ट के नाम	१८९
४३.	काम के नाम	७७,८०,८१,८३,८४
४४.	काम एवं धनुष के नाम	८३
४५.	कार्तिकेय के नाम	६६,१२७
४६.	काल (मृत्यु) के नाम	१४६,१४७
४७.	काले रंग के नाम	१४८
४८.	किरण के नाम	४५,४६
४९.	कीचड़ के नाम	२०
५०.	कीर्ति के नाम	१५४,१५५
५१.	कुत्ते के नाम	९२
५२.	कुल के नाम	१२५
५३.	कुवेर के नाम	९५,९६
५४.	कूख के नाम	१०२
५५.	कृष्ण के नाम	७४,७५,७६
५६.	केशर के नाम	११८
५७.	कोट के नाम	१३५
५८.	कोमल के नाम	१५७
५९.	कंजूस के नाम	१७६
६०.	क्रोध के नाम	१०९
६१.	खाई के नाम	१३४
६२.	खूँटी के नाम	१३५

क्र०	नाम	श्लोक सं०	क्र०	नाम	श्लोक सं०
६३.	खून के नाम	१९१	९८.	जानी हुई वस्तु के नाम	१०८
६४.	गङ्गा के नाम	७१,१६३	९९.	जाँघ के नाम	१०३
६५.	गड्ढे के नाम	१९३	१००.	जिनेन्द्रदेव के नाम	११३,११४
६६.	गरुड़ के नाम	१२९,१३०	१०१.	जुवारी के नाम	१२२
६७.	गले के नाम	१०१	१०२.	झरोखे के नाम	१३६
६८.	गहने के नाम	११९	१०३.	टुकड़े के नाम	१९०
६९.	गायों के घेरों का नाम	१६३	१०४.	तट के नाम	२६,२७
७०.	गुप्तचर के नाम	१८१	१०५.	तत्काल के नाम	१५९
७१.	गुप्त बात के नाम	१७५	१०६.	तलवार के नाम	८५
७२.	गोपुर के नाम	१३५	१०७.	तेज के नाम	४६
७३.	गोल के नाम	१८५	१०८.	तेंदुए के नाम	९०
७४.	ग्रन्थकार का लघुता प्रकाशन	२०१	१०९.	दया के नाम	११०
७५.	घमण्डी के नाम	१६९,१७०	११०.	दिक्पाल के नाम	६१
७६.	घुटने के नाम	१०३	१११.	दिग्गज के नाम	६१
७७.	घृत के नाम	१२३	११२.	दिगम्बर के नाम	६१,११७
७८.	घोड़े के नाम	५२	११३.	दिन के नाम	५०
७९.	घोर के नाम	१८६	११४.	दिशा के नाम	६१
८०.	चकवे के नाम	५१	११५.	दुःख के नाम	१८९
८१.	चतुर के नाम	१६६	११६.	दुर्बल के नाम	१७५
८२.	चन्द्रमा के नाम	४६,४७,४८	११७.	दूध के नाम	१२३
८३.	चन्द्रमा के नाम	१२८,१८०	११८.	देर के नाम	१८६
८४.	चाँदी के नाम	९४	११९.	देव के नाम	५६
८५.	चोटी के नाम	१९९	१२०.	देश के नाम	९७
८६.	चोर के नाम	१७०	१२१.	धन के नाम	९५
८७.	छल के नाम	१३८,१९१	१२२.	धनुष्य के नाम	७९
८८.	छज्जे के नाम	१३५	१२३.	धनुष की डोरी के नाम	८२
८९.	छत्र के नाम	१९८	१२४.	धान के नाम	१६४
९०.	छत्ते के नाम	१९८	१२५.	धूर्त के नाम	१६७,१६८
९१.	छाँछ के नाम	१२३	१२६.	धूलि के नाम	१५२
९२.	छाती के नाम	१०२	१२७.	धैर्य के नाम	१७५
९३.	छात्र के नाम	४	१२८.	ध्वजा के नाम	८४
९४.	छिद्र के नाम	१९३	१२९.	नक्षत्र के नाम	४८
९५.	जल के नाम	१५	१३०.	नगरी के नाम	९७
९६.	जवानी के नाम	१२४	१३१.	नदी के नाम	२४
९७.	जबर्दस्ती के नाम	१८२	१३२.	ननद के नाम	४३

क्र०	नाम	श्लोक सं०
१३३.	नरक के नाम	१९३
१३४.	नवीन के नाम	१५७
१३५.	नाम के नाम	१६८
१३६.	नारद के नाम	७३
१३७.	नासिका के नाम	१०२
१३८.	निन्दा के नाम	१९१
१३९.	निषेध के नाम	१५९
१४०.	नीच के नाम	१६९
१४१.	नीचे के नाम	१६०
१४२.	नील रङ्ग के नाम	१५१
१४३.	नेत्र के नाम	९९
१४४.	नौकर के नाम	२९
१४५.	पक्षी के नाम	५४
१४६.	पण्डित के नाम	१११
१४७.	पति के नाम	३७
१४८.	पतिव्रता स्त्री के नाम	३४
१४९.	पत्थर के नाम	१७१
१५०.	पराग के नाम	१५२,१५३
१५१.	पर्वत के नाम	७,८,९
१५२.	पशु के समूह का नाम	१४०
१५३.	पाप के नाम	१३१,१३२
१५४.	पाशबद्ध के नाम	१७७,१७८
१५५.	पिता के नाम	३८
१५६.	पीले रङ्ग के नाम	१५१
१५७.	पुण्य के नाम	१३१
१५८.	पुत्र के नाम	३९
१५९.	पुत्री के नाम	४०
१६०.	पुराने के नाम	१७५,१५८
१६१.	पुष्प के नाम	८०
१६२.	पृथ्वी के नाम	५,६
१६३.	पेट के नाम	१०२
१६४.	पैर के नाम	१०३
१६५.	प्यारी स्त्री के नाम	३३
१६६.	प्रतापी के नाम	१९६
१६७.	प्रातःकाल के नाम	१८२
१६८.	प्रेरितु वस्तु के नाम	१०४
१६९.	बजने वाले बाँस के नाम	१८४
१७०.	बराबर के नाम	१३६,१३७
१७१.	बलभद्र के नाम	१४२
१७२.	बहिन के नाम	४३
१७३.	बहुत के नाम	१७२,१९४
१७४.	बहुत काल के नाम	१८२
१७५.	बाण के नाम	७८
१७६.	बालक के नाम	४०
१७७.	बालों के नाम	१९९
१७८.	बारम्बार	१८८
१७९.	बात के नाम	१५६
१८०.	बाहु के नाम	१००
१८१.	बुड्ढे के नाम	१२४
१८२.	बुद्धि के नाम	११०
१८३.	बँधान के नाम	१३४
१८४.	ब्रह्मा के नाम	७२,१२६
१८५.	भाई के नाम	४२,४३
१८६.	भीम के नाम	६३
१८७.	भील के नाम	१३,१४
१८८.	भेड़िया के नाम	१२७
१८९.	भैंस के नाम	१६५
१९०.	भँवर के नाम	२७
१९१.	भ्रमर के नाम	८२
१९२.	मकान के नाम	१३२,१३३
१९३.	मछली के नाम	१६,१७
१९४.	मदिरा के नाम	१२१
१९५.	मद्यपी के नाम	१२२
१९६.	मन के नाम	८१
१९७.	मनुष्य के नाम	२८
१९८.	महल के नाम	१३५
१९९.	महादेव के नाम	६८,७१
२००.	महावत के नाम	८९
२०१.	महावीर के नाम	११६
२०२.	माता के नाम	३८

क्र०	नाम	श्लोक सं०
२०३.	मामी के नाम	४३
२०४.	मार्ग के नाम	१६३
२०५.	माला के नाम	११९
२०६.	मांस के नाम	५५
२०७.	मित्र के नाम	४१
२०८.	मित्रता के नाम	१८७
२०९.	मुख के नाम	९८
२१०.	मुनि के नाम	३,६१,११७
२११.	मूर्ख के नाम	१६८
२१२.	मृत-प्राणी के नाम	१०८
२१३.	मेघ के नाम	१६,१८
२१४.	मोचा के अर्थ	१८२
२१५.	मोटे के नाम	१८५
२१६.	मोती के नाम	९४
२१७.	मोर के नाम	१२६,१२७
२१८.	युगल के नाम	२
२१९.	युद्ध के नाम	८७
२२०.	युधिष्ठिर के नाम	१४७,१४८
२२१.	युवा पुरुष के नाम	१२४
२२२.	योग्या के नाम	१८८
२२३.	रत्नत्रय के नाम	२०३
२२४.	राक्षस के नाम	५५
२२५.	राग के नाम	१६२
२२६.	राजा के नाम	७,१०,२८
२२७.	रात्रि के नाम	४८
२२८.	लक्ष्मी के नाम	७४
२२९.	लड़ाई के नाम	१९१
२३०.	लता के नाम	२३
२३१.	लम्बे के नाम	१८५
२३२.	लहर के नाम	२७
२३३.	लाल-रङ्ग के नाम	१४९
२३४.	लोहे के नाम	१७१
२३५.	वखतर के नाम	१९८
२३६.	वछड़े के नाम	१६४
२३७.	वज्र के नाम	१९
२३८.	वन के नाम	१३
२३९.	वन्दर के नाम	१२
२४०.	वर के नाम	१९२
२४१.	वर्फ के नाम	१८०,१८१
२४२.	वस्त्र के नाम	११७
२४३.	वाणी के नाम	१०४
२४४.	वायु के नाम	६२,६३
२४५.	विजली के नाम	१८,१९
२४६.	विछुओं के नाम	१०७
२४७.	विद्याधर के नाम	५४
२४८.	विवाह के नाम	१९२
२४९.	विवाहिता स्त्री के नाम	३२
२५०.	वृक्ष के नाम	७,११
२५१.	वेश्या के नाम	३६
२५२.	व्यभिचारणी स्त्री के नाम	३५
२५३.	व्यर्थ के नाम	१५७,१८९
२५४.	व्याना के नाम	१९७
२५५.	शत्रु के नाम	४४
२५६.	शरीर के नाम	३८,३९
२५७.	शास्त्र के नाम	४
२५८.	शिर के नाम	१०४
२५९.	शीघ्र के नाम	१७६,१७७
२६०.	शूकर के नाम	९१
२६१.	शूरवीर के नाम	१९६
२६२.	श्लोकों का परिमाण	२०४
२६३.	सखी के नाम	४१
२६४	सत्य के नाम	१८१
२६५.	सफेद के नाम	१५०
२६६.	सभासद के नाम	११२
२६७.	समीप के नाम	१४१,१४२
२६८.	समुद्र के नाम	१६,२५
२६९.	समूह के नाम	१३९,१४०
२७०.	सम्पूर्ण के नाम	१९०
२७१.	सर्प के नाम	१२८,१२९
२७२.	सहायक के नाम	४२

क्र॰	नाम	श्लोक सं॰
२७३.	सहित के नाम	१६२
२७४.	साथ के नाम	१६०
२७५.	सिंह के नाम	९०
२७६.	सींग वाले पशु के नाम	१६४
२७७.	सुन्दर के नाम	१७८,१७९
२७८.	सुवर्ण के नाम	९३,१७१
२७९.	सूर्य के नाम	४९,५०,५१
२८०.	सेना के नाम	८६
२८१.	सौभाग्यवती स्त्री के नाम	३२
२८२.	संशय के नाम	१५८
२८३.	संसार के नाम	११३,१९५
२८४.	स्तन के नाम	१०२
२८५.	स्त्री के नाम	३०,३४
२८६.	स्पष्ट के नाम	१७२
२८७.	स्वभाव के नाम	१८८
२८८.	स्वर्ग के नाम	५६
२८९.	स्वीकृत के नाम	१९७
२९०.	हथियार के नाम	८३
२९१.	हनुमान के नाम	६३
२९२.	हमेशा के नाम	१६१,१९२
२९३.	हरिण के नाम	१२८
२९४.	हरे रंग के नाम	१५१
२९५.	हर्ष के नाम	१०९
२९६.	हल के नाम	१४२
२९७.	हस्त के नाम	१००
१९८.	हस्ती के नाम	८८,८९
१९९.	हंस के नाम	१२६
२००.	हंसिनी के नाम	१२७

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अनेकार्थ-निघण्टु

अनुष्टुप् छन्द

क्र०	नाम	श्लोक सं०
१.	मंगलाचरण	१
२.	'गो' शब्द के नाम	२
३.	'क' शब्द के नाम	३
४.	कं और अनिमिष शब्द के नाम	४
५.	शिखिन् शब्द के नाम	५
६.	हंस शब्द के नाम	६
७.	सारस और राजा शब्द के नाम	७
८.	विभावसु और हिमाराति शब्द के नाम	८
९.	धनञ्जय और वीभत्स शब्द के नाम	९
१०.	विरोचन शब्द के नाम	१०
११.	पाञ्चजन्य और कम्बु शब्द के नाम	११
१२.	भास्कर और पतङ्ग शब्द के नाम	१२
१३.	कोशिक और शम्भु शब्द के नाम	१३
१४.	शङ्कु और जम्बुक शब्द के नाम	१४
१५.	अर्क और मन्थी शब्द के नाम	१५
१६.	केतु और तमोनुद शब्द के नाम	१६
१७.	मयूख और सतर्षि शब्द के नाम	१७
१८.	वसु और धिष्ण शब्द के नाम	१८
१९.	अम्बर और पय शब्द के नाम	१९
२०.	शिव शब्द के नाम	२०
२१.	क्षर और स्यन्दन शब्द के नाम	२१
२२.	कृष्ण और क्षीर शब्द के नाम	२२
२३.	शव और घृत शब्द के नाम	२३
२४.	विष और कर शब्द के नाम	२४
२५.	कीलाल और भुवन शब्द के नाम	२५
२६.	कोमल और सदन शब्द के नाम	२६
२७.	सद्म और संवर शब्द के नाम	२७
२८.	संवर और इडा शब्द के नाम	२८
२९.	इडा और अदिति शब्द के नाम	२९
३०.	भिदि और वृष शब्द के नाम	३०
३१.	वृषन् और रौहिणेय शब्द के नाम	३१
३२.	शेष और राम शब्द के नाम	३२
३३.	वराह शब्द के नाम	३३
३४.	वराह और अज शब्द के नाम	३४
३५.	अज और शरीरज शब्द के नाम	३५
३६.	पुष्कर और कूल शब्द के नाम	३६
३७.	अनन्त शब्द के नाम	३७
३८.	प्रजापति शब्द के नाम	३८
३९.	वाम शब्द के नाम	३९
४०.	आगोप और अङ्क शब्द के नाम	४०
४१.	वासर और विभावसु शब्द के नाम	४१
४२.	शर्वरी और सान्द्र शब्द के नाम	४२
४३.	स्व शब्द के नाम	४३
४४.	ककुप् शब्द के नाम	४४
४५.	क्षय और प्लव शब्द के नाम	४५
४६.	प्रसाद और घन शब्द के नाम	४६
४७.	घन और वरूथ शब्द के नाम	४७
४८.	वर्म और असुर शब्द के नाम	४८
४९.	नाग और गन्धर्व शब्द के नाम	४९
५०.	तार्क्ष्य और वालेय शब्द के नाम	५०
५१.	तृणी और शिखरी शब्द के नाम	५१
५२.	द्विज और मलिम्लुच शब्द के नाम	५२
५३.	आत्मज और कीनाश शब्द —— —— के नाम	५३,५४
५४.	अवदात और ज्योति शब्द के नाम	५५
५५.	अब्द और बलाहक शब्द के नाम	५६
५६.	तोयद और जीमूत शब्द के नाम	५७
५७.	पौलस्त्य और शुचिकृत् शब्द के नाम	५८
५८.	ज्योति और प्रधान शब्द के नाम	५९
५९.	पर्यजन्य और शिलीमुख शब्द के नाम	६०
६०.	लेखा और अम्वरीष शब्द के नाम	६१
६१.	पुंस और असु शब्द के नाम	६२

क्र०	नाम	श्लोक सं०
६२.	माया और मधु शब्द के नाम	६३
६३.	मधु और खं शब्द के नाम	६४,६५
६४.	प्रभाकर और सफेद शब्द के नाम	६६
६५.	काला और नकुल शब्द के नाम	६७
६६.	बिल्ली और यम शब्द के नाम	६८
६७.	लक्ष्मण शब्द के नाम	६९
६८.	दक्ष शब्द के नाम	७०
६९.	निपुण और आदित्य शब्द के नाम	७१
७०.	रोग और नितम्ब शब्द के नाम	७२
७१.	वसु और सारङ्ग शब्द के नाम	७३
७२.	कदली और मेघ शब्द के नाम	७४
७३.	आत्मा और कर्ष शब्द के नाम	७५
७४.	पांसा और कमल शब्द के नाम	७६
७५.	आयतन और पुष्प शब्द के नाम	७७
७६.	वाजी शब्द के नाम	७८
७७.	हरि, ललाम और शुक्र के नाम	७९,८०
७८.	वक्रवक्त्र और पुलिन के नाम	८१
७९.	पाप, शीघ्र और प्रातःकाल के नाम	८२
८०.	तिलक और निकष शब्द के नाम	८३
८१.	मञ्जूष और केसरि शब्द के नाम	८४
८२.	कल और अलात शब्द के नाम	८५
८३.	भाव और विलास शब्द के नाम	८६
८४.	कबन्ध और पगड़ी शब्द के नाम	८७
८५.	मण्डूक शब्द के नाम	८८
८६.	शिवा, शङ्कर, किसान शब्द के नाम	८९
८७.	कानीन और उकृष्ट शब्द के नाम	९०
८८.	हस्तिदाँत और हस्ति बन्धन के नाम	९१
८९.	घनाघन और बुद्धि शब्द के नाम	९२
९०.	वृक्ष और नदी शब्द के नाम	९३
९१.	रुदन और कच्चे मांस के नाम	९४
९२.	मोती शब्द के नाम	९५
९३.	बाँस, मेघ, और चतुर शब्द के नाम	९६
९४.	आकूत और मुख शब्द के नाम	९७
९५.	श्याम, कपिल और दूर के नाम	९८
९६.	श्रेष्ठ और स्नेह शब्द के नाम	९९
९७.	चर्मकार, नाई एवं लावण्य के नाम	१००
९८.	रोग शब्द के नाम	१०१
९९.	वेग और क्यारी शब्द के नाम	१०२
१००.	चिड़िया, समान, सफेद एवं —— —— गमन शब्द के नाम	१०३
१०१.	मन्दिर, इन्द्र और युद्ध के नाम	१०४
१०२.	हरे, नीले रङ्ग, बैल और —— ——भैंसा शब्द के नाम	१०५
१०३.	बन्ध्या स्त्री और बाँस के नाम	१०६
१०४.	काम और पाप शब्द के नाम	१०७
१०५.	राजा और रत्न शब्द के नाम	१०८
१०६.	दीर्घ और बहुत शब्द के नाम	१०९
१०७.	हवा और प्रिय वाक्य के नाम	११०
१०८.	बाजा शब्द के नाम	१११
१०९.	सुमना, बौर, लता और प्रपा —— —— शब्द के नाम	११२
११०.	आयु शब्द के नाम	११३
१११.	कर्ण का नाम	११४
११२.	अग्नि और भीम शब्द के नाम	११५
११३.	पुण्य श्लोक और युद्धशौण्ड —— —— शब्द के नाम	११६
११४.	समूह शब्द के नाम	११७,११८
११५.	उपमावाची एवं व्यक्तवादी —— —— शब्द के नाम	११९
११६.	यम और मन्द शब्द के नाम	१२०
११७.	कृतघ्न और अध्यात्म शब्द —— —— के नाम	१२१,१२२
११८.	समाधि और दान्त शब्द के नाम	१२३
११९.	समाधिस्थ शब्दों के नाम	१२४
१२०.	बहुत बोलने वाले शब्द के नाम	१२५
१२१.	प्रीति का लक्षण	१२६
१२२.	ख्याति का लक्षण	१२७
१२३.	उदारता का लक्षण	१२८
१२४.	उदक्या का लक्षण एवं —— —— उसके प्रति कर्त्तव्य	१२९

क्र०	नाम	श्लोक सं०
१२५.	तेज शब्द के नाम	१३०
१२६.	नास्तिक शब्द के नाम	१३१
१२७.	षड्वद शब्द के नाम	१३१
१२८.	अमृत और गोलक शब्द के नाम	१३२
१२९.	कुण्डाशी एवं परचित्त —— —— शब्द का नाम	१३३,१३४
१३०.	वस्त्रों के भेद	१३५
१३१.	स्त्री के भेद	१३६
१३२.	वरवर्णिनी का स्वरूप	१३७
१३३.	सुन्दर स्त्री शब्द के नाम	१३८
१३४.	अन्न शब्द के नाम	१३९
१३५.	लोहितग्रीव और रावण का लक्षण	१४०
१३६.	न्यग्रोध का लक्षण	१४१
१३७.	राजीव-लोचन की परिभाषा	१४२
१३८.	राजीव-लोचन का लक्षण	१४३,१४४
१३९.	श्लोक अपूर्ण	१४५
१४०.	भार्या शब्द के नाम	१४६
१४१.	अग्नि एवं सूर्य शब्द के नाम	१४७
१४२.	कोटरस्था जन्तु शब्द के नाम	१४८
१४३.	पल्लव शब्द के नाम	१४९
१४४.	दूरी नापने का यन्त्र एवं —— —— प्रस्थ शब्द का नाम	१५०
१४५.	जङ्गल शब्द का नाम	१५१
१४६.	वर्फ, प्रदोष एवं निशीथ का लक्षण	१५२

प्रज्ञाश्रमण मुनि

नाममाला

प्रवेश-टीका सहित

मङ्गलाचरण

तन्नमामि परं ज्योति-रवाङ्-मनस-गोचरम् ।
उन्मूलयत्य-विद्यां यद्-विद्या-मुन्मील-यत्यपि ॥१॥

अन्वयार्थ - [अहम्; मैं] तत्=उस, परं ज्योतिः=उत्कृष्ट ज्योति-स्वरूप केवलज्ञान को; नमामि=नमस्कार करता हूँ, यत्=जो, अवाङ् मनस्-अगोचरम्=वचन और मन के अगोचर [अस्ति] है, अविद्याम्=अज्ञान को, उन्मूलयति=नष्ट करता है [च]=और विद्याम्=ज्ञान को, उन्मीलयति=प्रकाशित करता है।

भावार्थ - मैं अर्थात् धनञ्जय कवि; उस उत्कृष्ट ज्योति-स्वरूप 'केवलज्ञान' को [१]नमस्कार करता हूँ, जो यद्यपि अज्ञान को दूर कर; ज्ञान का प्रकाश करता है, जो वचन और मन से भी नहीं जाना जाता है।

युगल (जोड़े) के नाम

द्वयं द्वितय-मुभयं, यमलं युगलं युगम् ।
युग्मं द्वन्द्वं यमं द्वैतं, पादयोः पातु जैनयोः ॥२॥

अर्थ - द्वय, द्वितय, उभय, यमल, युगल, युग, युग्म, द्वन्द्व, यम और द्वैत (न०); ये १० [२]युगल (जोड़े) के नाम हैं। (जैनयोः) श्री जिनेन्द्रदेव के (पादयोः) चरणों का युगल (जोड़ा) सबकी (पातु) रक्षा करे।

मुनि के नाम

ऋषि-र्यति-र्मुनि-र्भिक्षु-स्तापसः [३]संयितो व्रती ।
तपस्वी संयमी योगी, वर्णी साधुश्च पातु वः ॥३॥

अर्थ - ऋषि, यति, मुनि, भिक्षु, तापस, संयत, व्रतिन्, तपस्विन्,

---

१. 'यो हि यद्गुणलब्ध्यर्थो स तं वन्द्यमानो दृष्टः' इस नियम के अनुसार यहाँ पर ज्ञान की चाह से सर्वाधिक; पूर्ण और अनन्त 'केवल-ज्ञान' को नमस्कार किया गया है। मनस शब्द अकारान्त भी है।

२. किन्हीं दो चीजों के जोड़ को युगल कहते हैं।

३. संशितो; भाष्य प्रतौ।

संयमिन्, योगिन्, वर्णिन् और साधु (पुं०); ये १२ मुनि के नाम हैं, वे [४]मुनि (वः) तुम्हारी (पातुः) रक्षा करें।

विशेष : श्लोक सं० २ और ३ के चतुर्थ चरण से क्रमशः अर्हद् भगवान और दिगम्बर मुनि को नमस्कार द्योतित होता है।

शास्त्र और शिष्य के नाम

कृतान्ताऽऽगम सिद्धान्ताः, ग्रन्थः शास्त्र-मतः परम् ।
दीक्षितं मौण्ड्यं शिष्यं च, तमन्ते-वासिनं विदुः ॥४॥

अर्थ - कृतान्त, आगम, सिद्धान्त, ग्रन्थ (पुं०) और शास्त्र (न०); ये ५ शास्त्र के नाम हैं। इनके आगे दीक्षित्, मौण्ड्य, शिष्य और अन्तेवासिन् (पुं०); ये ४ छात्र के नाम जानना चाहिए।

नोट :- छात्र के नामों के अन्त में 'स्त्री बोधक' प्रत्यय जोड़ देने से छात्रा के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - शिष्या, दीक्षिता, मौण्ड्या और अन्तेवासिनी (स्त्री०) आदि।

विशेष : विदुः क्रिया पद के कारण दीक्षित आदि शब्द द्वितीयान्त हो गये हैं, नपुंसक लिंग नहीं हैं।

पृथ्वी (जमीन) के नाम

भूमि-र्भूः पृथिवी पृथ्वी, गह्वरी मेदिनी मही ।
धरा वसुमती धात्री, क्षमा विश्वम्भराऽवनिः ॥५॥
वसुधा धरणी क्षोणी, क्ष्मा धरित्री क्षितिश्च कुः ।
कुम्भिनी-लोर्वरा चोर्वी, जगती गौ-र्वसुन्धरा ॥६॥

अर्थ - भूमि, भू, पृथिवी, पृथ्वी, गह्वरी, मेदिनी, मही, धरा, वसुमती, धात्री, क्षमा, विश्वम्भरा, [५]अवनि, वसुधा, धरणी, क्षोणी, क्ष्मा, धरित्री, क्षिति, कु, कुम्भिनी, इला, उर्वरा, उर्वी, जगती, गो और वसुन्धरा (स्त्री०); ये २७ पृथ्वी (जमीन) के नाम हैं।

४.मुनि के नाम; श्लोक सं० ६१ और ११७ में भी आये हैं। श्लोक सं० ३ में 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्यः' इस पाणिनीय व्याकरण के नियम से व्रती आदि पदों में नकार लुप्त हो गया है।

५.अवनी, घरणि, क्षोणि और ऊर्वि; ये पाठान्तर भी हो सकते हैं, क्योंकि इनसे वैकल्पिक डीष्प्रत्यय होता है।

पर्वत, राजा और वृक्ष के नाम

तत्पर्याय-धरः शैलः, तत्पर्याय-पति-र्नृपः ।
तत्पर्याय-रुहो वृक्षः, शब्द-मन्यञ्च योजयेत् ।।७।।

अर्थ - तत्पर्याय अर्थात् पृथ्वी के नामों के अन्त में 'धर' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - भूमिधर और भूधर (पुं०) आदि। 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - भूमिपति और भूपति (पुं०) आदि तथा 'रुह' शब्द जोड़ देने से वृक्ष के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - भूमिरुह, क्षितिरुह, कुरुह और भूरुह (पुं०) आदि।

'शब्द-मन्यं च योजयेत्' अर्थात् पृथ्वी के नामों के अन्त में अन्य शब्द जोड़कर और भी नाम बनाये जा सकते हैं, 'भृत्' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - भूमिभृत् और भूभृत् (पुं०) आदि। 'ध्र' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - भूमिध्र और भूध्र (पुं०) आदि ।

'स्वामी वाचक' तथा 'पाल' शब्द जोड़े देने से राजा के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - भूस्वामी और भूपाल (पुं०) आदि। इसी प्रकार अन्य शब्द जोड़कर और भी शब्द बनाये जा सकते हैं, **जैसे** - 'चर' शब्द जोड़कर 'भूचर' (पुं०) आदि; भूमिगोचरी मनुष्य के नाम बनाये जा सकते हैं और 'देव' शब्द जोड़कर भूदेव (पुं०); ब्राह्मण के नाम बनाये जा सकते हैं, इत्यादि ।

पर्वत के (दूसरे) नाम

दरीभृ-दचलः श्रृङ्गी, पर्वतः सानु-मान्गिरिः ।
नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च, शिखरी त्रिक-कुन्मरुत् ।।८।।

अर्थ - दरीभृत्, अचल, श्रृङ्गिन्, पर्वत, सानुमत्, गिरि, नग, शिलोच्चय, अद्रि, शिखरिन्, त्रिककुत् और मरुत् (पुं०); ये १२ पर्वत (पहाड़) के नाम हैं।

पर्वत के (तीसरे) नाम

प्रस्थं पार्श्वं तटं सानु-र्मेखलो-पत्यका तटी ।
नितम्ब-मन्तो दन्तश्च, तद्-वा-नपि गिरिःस्मृतः ।।९।।

अर्थ - प्रस्थ (पुं०न०); पर्वत की चोटी या समभूमि, पार्श्व (पुं०न०);

पर्वत का पिछला भाग, तट (त्रि०); पर्वत का किनारा, सानु (पुं०न०); पर्वत का शिखर या चोटी, मेखला (स्त्री०); पर्वत का मध्य भाग, उपत्यका (स्त्री०); पर्वत के पास की जमीन, तटी (स्त्री०); पर्वत का किनारा, नितम्ब (पुं०न०); पर्वत का मध्य भाग, अन्त (पुं०); पर्वत का समीप भाग, दन्त (पुं०); निकुञ्ज अर्थात् लतागृह या अधनिकली चट्टान का नाम है।

इन सबके अन्त में 'सम्बन्ध' और 'आधार वाचक' मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से पर्वत के नाम स्मरण किये जाते हैं अर्थात् बन जाते हैं, **जैसे-** [६]प्रस्थवत् आदि।

×राजा के नाम

राजाऽधिपः पतिः स्वामी, नाथः परिवृढः प्रभुः ।
ईश्वरो विभु-रीशानो, भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥१०॥

अर्थ - राजन्, अधिप, पति, स्वामिन्, नाथ, परिवृढ, प्रभु, ईश्वर, विभु, ईशान, भर्तृ, इन्द्र, इन और ईशितृ (पुं०); ये १४ राजा के नाम हैं।

+वृक्ष के नाम

अनोकहस्तरुः शाखी, विटपी फलिनो नगः ।
द्रुमोऽङ्घ्रिपः%फलेग्रही, पादपोऽगो वनस्पतिः ॥११॥

अर्थ - अनोकह, तरु, शाखिन्, विटपिन्, फलिन्, नग, द्रुम, अङ्घ्रिप, फलेग्राहिन्, पादप, अग और वनस्पति (पुं०); ये १२ वृक्ष (पेड़) के नाम हैं।

वन्दर के नाम

तत्पर्याय-चरो ज्ञेयो, हरि-र्बलिमुखः कपिः ।
वानरः प्लवगश्चैव, गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥१२॥

अर्थ - तत्पर्याय अर्थात् वृक्ष के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़

---

६. 'मादुपधायाश्च०' इत्यादि पाणिनीय सूत्र से अकारान्त शब्दों के अन्त में स्थित मतुप् के म् को व् हो जाता है।

× राजा के नाम; श्लोक सं० ७,२८ और ११२ में भी आये हैं।

+ वृक्ष के नाम; ७वें श्लोक में भी आये हैं।

% स्युरवन्ध्यःफलेग्राही, फलवान् फलिनः फली । तथा दधित्थग्राहिमन्मथाः; अमरकोश के इन आधारों से फला ग्राही पाठान्तर भी सम्भव है, जिसका फलिन और ग्राहिन् अर्थ होगा।

देने से बन्दर के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - अनोकहचर और तरुचर (पुं०) इत्यादि तथा हरि, बलिमुख, कपि, वानर, प्लवग (प्लवङ्ग) गोलाङ्गूल और मर्कट (पुं०); ये ७ बन्दर के नाम हैं।

वन (जङ्गल) और भील के नाम

विपिनं गहनं कक्ष-मरण्यं काननं वनम् ।
कान्तार-मटवी दुर्गं, तच्चरः स्याद्वनेचरः ॥१३॥

अर्थ - विपिन, गहन, कक्ष, अरण्य, कानन, वन, कान्तार (न०); अटवी (स्त्री०) और दुर्ग (न०); ये ९ वन अर्थात् जंगल के नाम हैं, इनके अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से [७]वनेचर अर्थात् भील के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - विपिनचर, गहनचर (पुं०) आदि।

भील के नाम

पुलिन्दः शवरो दस्यु-र्निषादो व्याध-लुब्धकौ ।
धानुष्कोऽथ किरातश्च, सोऽरण्यानीचरः स्मृतः ॥१४॥

अर्थ - पुलिन्द, शवर, दस्यु, निषाद, व्याध, लुब्धक, धानुष्क और किरात (पुं०); ये अरण्यानीचर (पुं०) अर्थात् भील के नाम हैं।

[८]अरण्यानी (स्त्री०) बड़ी-पहाड़ी अर्थात् जंगल का नाम स्मरण किया गया हैं, उसमें रहने के कारण भील को 'अरण्यानीचर' कहते हैं।

जल के नाम

वा-र्वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु, पाथोऽर्णः सलिलं जलम् ।
[९]सरं वनं कुशं नीरं, तोयं जीवन-मब्विषम् ॥१५॥

अर्थ - वार्, वारि, कं, पयस्, अम्भस्, अम्बु, पाथस्, अर्णस्, सलिल, जल, सर, वन, कुश, नीर, तोय, जीवन (न०), अप् (स्त्री०बहु०) और विष (न०); ये १८ जल के नाम हैं।

---

७. ''हलदन्तात्सप्ताम्याः संज्ञायाम्' इस पाणिनीय सूत्र से यहाँ सप्तमी विभक्ति का लोपाभाव हो गया है।

८. 'महदरण्यम् अरण्यानी' अर्थात् बड़ा जङ्गल।

९. शरं; भाष्य प्रतौ ।

मछली, मेघ, कमल और समुद्र के नाम

तत्पर्याय-चरो मत्स्यस्-तत्पर्याय-प्रदो घनः ।
तत्पर्यायोद्भवं पद्मं, [१०]तत्पर्याय-धरोऽम्बुधिः ॥१६॥

अर्थ - तत्पर्याय अर्थात् पानी के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से मत्स्य अर्थात् मछली के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - वाश्चर, पाथश्चर, अर्णश्चर और वारिश्चर (पुं०) इत्यादि। 'प्रद' शब्द जोड़ देने से मेघ के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - वाःप्रद, वारिप्रद (पुं०) आदि।

'उद्भव' शब्द जोड़ देने से कमल के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - वारुद्भव और वार्युद्भव (न०) इत्यादि तथा 'धर' शब्द जोड़ देने से मेघ के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - जलधर, वार्धर, पयोधर, अम्बुधर, सलिलधर और अम्भोधर (पुं०) इत्यादि।

मछली के नाम

पृथुरोमा षडक्षीणो, यादो वैसारिणो झषः ।
विसारी शफरी मीनः, पाठीनोऽनिमिषस्तिमिः ॥१७॥

अर्थ - पृथरोमन्, षडक्षीण (पुं०); यादस् (न०); वैसारिण, झष, विसारिन्, सफर, मीन, पाठीन, अनिमिष और तिमि (पुं०); ये ११ मछली के नाम हैं। [११]'विसार' यह पाठान्तर भी है।

मेघ, विजली और वज्र के नाम

घनाघनो घनो मेघो, जीमूतोऽभ्रं बलाहकः ।
पर्जन्यो मुदिरोऽनभ्राट्, शम्पा [१२]सौदामिनी तडित् ॥१८॥
आकालिकी क्षणरुचि-र्विद्युत् तत्पति-रम्बुदः ।
निर्घात-मशनि-र्वज्र-मुल्का शब्दं च योजयेत् ॥१९॥

अर्थ - घनाघन, घन, मेघ, जीमूत (पुं०), अभ्र (न०) [१३]बलाहक,

---

१०. 'अतो रोरप्लुतादप्लुते' इस सूत्र से रु को उत्व हुआ है। यह 'ऽ' चिन्ह अकार (अ) का है। तत्पर्यायधिरम्बुधिः, ऐसा पाठान्तर भी है अर्थात् जल के नामों के अन्त में धि शब्द जोड़ देने से अम्बुधि (समुद्र) के नाम बन जाते हैं।

११ 'विसारः शकुली चाथ, मीनो वैसारिणोऽण्डजः'; अमर कोश वारिवर्ग श्लोक सं० १७।

१२. 'तडित्सौदामनी विद्युत' इत्यमरः ।

१३. वीराणां वाहकः इति विग्रहे 'अचतुर-विचतुर०' इत्यादिना सिद्धः।

पर्जन्य, मुदिर और [१४]अनभ्राज् (पुं०); ये ९ मेघ के नाम हैं। शम्पा, सौदामिनी अथवा सौदामनी, तडित्, आकालिकी, क्षणरुचि और विद्युत् (स्त्री०); ये ६ विजली के नाम हैं।

निर्घात् (न०), अशनि (स्त्री०,पुं०) और वज्र (पु०,न०); ये ३ वज्र और गाज के नाम हैं। बिजली और वज्र के नामों तथा उल्का अर्थात् रेखाकार तेज शब्द के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से भी मेघ के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - शम्पापति, निर्घातपति और उल्कापति (पुं०) इत्यादि।

कीचड़ और कमल के नाम

परिषत्कर्दमः पङ्कस्- तज्जं तामरसं विदुः ।
कमलं नलिनं पद्मं, सरोजं सरसीरुहम् ॥२०॥
खरदण्डं कोकनदं, पुण्डरीकं महोत्पलम् ।
इन्दीवरं चारविन्दं, शतपत्रं च पुष्करम् ॥२१॥
स्यादुत्पलं कुवलय-मथ नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्, सिते कुमुद-कैरवे ॥२२॥[१५]

अर्थ - परिषत्, कर्दम और पङ्क (पुं०); ये ३ कीचड़ के नाम हैं। इनके अन्त में 'ज' शब्द जोड़ देने से तामरस (न०) अर्थात् कमल के नाम होते हैं, **जैसे** - परिषज्ज, कर्दमज, पङ्कज आदि ।

अर्थ - कमल, नलिन (न०), पद्म (न०,पुं०), सरोज, सरसीरुह, खरदण्ड, कोकनद, पुण्डरीक, महोत्पल, इन्दीवर, अरविन्द, शतपत्र, पुष्कर, उत्पल और कुवलय (न०); ये १५ सामान्य कमल के नाम हैं। नीलाम्बुजन्मन् और इन्दीवर (न०); ये २ नील कमल के नाम हैं तथा कुमुद और कैरव (न०); ये २ श्वेत कमल के नाम हैं ।

लता और कमलिनी के नाम

तद्वती विसिनी ज्ञेया, व्रतती-र्वल्लरी लता ।
वल्ली नामानि योज्यानि, वारिधि-र्वर्ण्यतेऽधुना ॥२३॥

अर्थ - तद्वती अर्थात् कमल के नामों के अन्त में 'स्त्री प्रत्यन्त' मतुप्

१४. 'व्रश्चभ्रस्जेति०' षस्य डः। 'वावसाने' इति डकारस्य टकारः ।

१५. यह श्लोक अमरकोश में भी सर्वथा इसी प्रकार है।

प्रत्यय जोड़ देने से विसिनी (स्त्री०) अर्थात् कमलिनी के नाम जानना चाहिये, **जैसे** - कमलवती (स्त्री०) इत्यादि। व्रतती, वल्लरी, लता और वल्ली (स्त्री०); ये ४ लता के नाम हैं। कमल के नामों के अन्त में लता के नामों को जोड़ देने से भी कमलिनी के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- कमलव्रतती, पद्मवल्ली और सरोजलता (स्त्री०) इत्यादि। अधुना अर्थात् अब वारिधिः अर्थात् जलाशय के नाम वर्ण्यते अर्थात् कहे जाते हैं।

नदी के नाम

स्त्रोतस्विनी धुनी सिन्धुः, स्त्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा ।
नदी नदो द्विरेफश्च, सरिन्नाव्या तरङ्गिणी ॥२४॥

अर्थ - [१६]स्त्रोतस्विनी, धुनी, सिन्धु, स्त्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, नदी (स्त्री०), नद, [१७]द्विरेफ (पुं०), सरित्, [१८]नाव्या और तरङ्गिणी (स्त्री०); ये १२ नदी के नाम हैं। यहाँ मूल पाठ 'सरिन्नामा' है, परन्तु संशोधित पाठ ही उपयुक्त है।

समुद्र के नाम

तत्पतिश्च भवत्यब्धिः, पारावारोऽमृतोद्भवः।
अपारवार-कूपारो, रत्न मीनाऽभिधा-करः॥२५॥
समुद्रो वारिराशिश्च, सरस्वान्सागरोऽर्णवः।

अर्थ - तत्पतिः अर्थात् नदी के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से अब्धि अर्थात् समुद्र के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - सरित्पति (पुं०) आदि तथा अब्धि, पारावार, अमृतोद्भव, [१९]अपारवार्, अकूपार, [२०]रत्नाकर, मीनाकर, समुद्र, वारिराशि, सरस्वत्, सागर और अर्णव (पुं०); ये १२ [२१]समुद्र के नाम हैं।

१६. स्त्रोतस्वती पाठान्तर भी है 'अस्मायामेधास्त्रजो विनिः' इति विनिप्रत्ययः। तदुक्तम् 'स्त्रोतस्वती द्वीपपती,, स्त्रवन्ता निम्नगापगा'; अमरकोश वारिवर्ग श्लोक सं० ३०।

१७. निझरिणी त्रिस्त्रोता आदि।

१८. नावा तार्या नाव्या। तदुक्तम्-"नाव्या सुप्रतरा नदी, रघुवंश सर्ग ४, श्लोक सं० ३१।

१९. अपार वार् यह शब्द रेफान्त है। अपार = अधिक, वार् = जल है जिसमें।

२०. रत्न तथा मछली के नामों के अन्त में खनि वाचक शब्द जोड़ देने से भी समुद्र के नाम बन जाते है, जैसे रत्नाकर और मीनाकर आदि।

२१. पानी के नामों के अन्त में पति वाचक शब्द जोड़ देने से भी समुद्र के नाम बन जाते हैं,—

तट, भँवर और लहर के नाम

सीमोप-कण्ठं तीरं च, पारं रोधोऽवधिस्तटम् ॥२६॥
पाली वेला तटोच्छ्वासो, विभ्रमोऽयमुदन्वतः ।
भङ्गस्तरङ्ग-कल्लोलौ, वीचि-रुत्कलिकाऽऽवलिः॥२७॥

अर्थ - सीमा, सीमन् (स्त्री०), उपकण्ठ, तीर, पार, रोधस् (न०), अवधि (पु०), तट (त्री०) पाली और बेला (स्त्री०); ये १० तीर के नाम हैं। तटोच्छ्वास (पुं०) यह समुद्र की विभ्रम (भँवर-भौंर) का नाम है। भङ्ग, तरङ्ग, कल्लोल (पुं०), वीचि (पुं०,स्त्री०), उत्कलिका और आवलि (स्त्री०); ये ६ जल की लहर के नाम हैं।

मनुष्य और राजा के नाम

मनुष्यो मानुषो मर्त्यो, मनुजो मानवो नरः ।
ना पुमान् पुरुषो गोधा, धवः स्यात्तत्पति-र्नृपः ॥२८॥

अर्थ - मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, नृ, पुमान्, पुरुष (पुं०), गोधा (स्त्री०) और धव (पुं०) ; ये ११ मनुष्य के नाम हैं। तत्पतिः अर्थात् मनुष्य के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम होते हैं, **जैसे** - मनुष्यपति और नृपति (पुं०) आदि।

नौकर के नाम

भृत्योऽथ भृतकः पत्तिः, पदातिः पदगोऽनुगः ।
भटोऽनु-जीव्यनु-चरः, शस्त्रजीवी च किङ्करः ॥२९॥

अर्थ - [२२]भृत्य, भृतक, पत्ति, पदाति, पदग, अनुग, भट, अनुजीविन्, अनुचर, शस्त्रजीविन् और किङ्कर (पुं०); ये ११ नौकर के नाम हैं।

स्त्री के नाम

स्त्री नारी वनिता मुग्धा, भामिनी भीरु-रङ्गना ।
ललना कामिनी योषिद्, योषा सीमन्तिनी वधूः ॥३०॥

—**जैसे**- पाथसाम्पति, जलपति, अपाम्पति और वारिपति इत्यादि।

२२. स्त्री वाचक प्रत्यय जोड़ देने से; ये शब्द स्त्रीलिङ्ग भी हो जाते हैं, **जैसे**- भृत्या और अनुजी-विनी इत्यादि।

नितम्बिन्य-बला बाला, कामुकी वामलोचना ।
भामा तनूदरी रामा, सुन्दरी युवतीश्चला ॥३१॥

अर्थ - स्त्री, नारी, वनिता, मुग्धा, भामिनी, भीरु, अङ्गना, ललना, कामिनी, योषित्, योषा, सीमन्तिनी, वधू, नितम्बिनी, अबला, बाला, कामुकी, वामलोचना, भामा, तनुदरी, रामा, सुन्दरी, युवति और चला (स्त्री०); ये २४ सामान्य स्त्री के नाम हैं।

विवाहिता और सौभाग्यवती स्त्री के नाम

भार्या जाया जनिः कुल्या, कलत्रं गेहिनी गृहम् ।
महिला मानिनी पत्नी, तथा[२३] दाराः[२४] पुरन्ध्रिका ॥३२॥

अर्थ - भार्या, जाया, जनि, जनी, कुल्या (स्त्री०), कलत्र (न०), गेहिनी (स्त्री०), गृह (न०), महिला, मानिनी, पत्नी (स्त्री०) और दारा (पुं०); ये १२ विवाहिता स्त्री के नाम हैं। पुरन्ध्रिका, पुरन्ध्रि और पुरन्ध्री (स्त्री०); ये ३ पुत्र और पति वाली अर्थात् सौभाग्यवती स्त्री के नाम हैं।

प्यारी स्त्री के नाम

वल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा, रमणी दयिता प्रिया ।
इष्टा च प्रमदा कान्ता, चण्डी प्रणयिनी तथा ॥३३॥

अर्थ - वल्लभा, प्रेयसी, प्रेष्ठा, रमणी, दयिता, प्रिया, इष्टा, प्रमदा, कान्ता, चण्डी और प्रणयिनी (स्त्री०); ये ११ प्यारी स्त्री के नाम हैं।

पतिव्रता स्त्री के नाम

सती पतिव्रता साध्वी, पतिवत्येकपत्यपि ।
मनस्विनी भवत्यार्या, विपरीता निरूप्यते ॥३४॥

अर्थ - सती, पतिव्रता, साध्वी, पतिवत्नी, एकपत्नी, मनस्विनी और आर्या (स्त्री०); ये ७ पतिव्रता अर्थात् सदाचारिणी (आर्या) स्त्री के नाम हैं। अब आगे के श्लोक में इससे विपरीत अर्थात् व्यभिचारिणी स्त्री के नाम कहते हैं।

---

२३. पुंसि भूम्नि च दाराः स्यात्' इस अमरकोशीय प्रमाण के अनुसार पुल्लिङ्ग दारा शब्द केवल बहुवचन में चलता है, **जैसे**- दाराः, दारान् दारैः, दारेभ्यः, दारेभ्यः, दाराणाम्, दारेषु ।

२४. पुरन्ध्रयः; भाष्य प्रतौ।

व्यभिचारिणी और दूती के नाम

बन्धकी कुलटा मुक्ता, पुनर्भूः पुंश्चली खला ।
स्पर्शाऽभि-सारिका दूती, स्वैरिणी सम्फली तथा ।।३५।।

अर्थ - बन्धकी, कुलटा, मुक्ता, पुनर्भूः, पुंश्चली और खला (स्त्री॰); ये ६ व्यभिचारिणी स्त्री के नाम हैं। स्पर्शा, [२५]अभिसारिका, दूती, स्वैरिणी और सम्फली (स्त्री॰); ये ५ दूती के नाम हैं।

वेश्या के नाम

गणिका लञ्जिका वेश्या, रूपाजीवा विलासिनी ।
पण्यस्त्री दारिका दासी, कामुकी सर्ववल्लभा ।।३६।।

अर्थ - गणिका, लञ्जिका, वेश्या, रूपाजीवा, विलासिनी, पण्यस्त्री, दारिका, दासी, कामुकी और सर्ववल्लभा (स्त्री॰); ये १० वेश्या के नाम हैं। दाशी पाठान्तर भी है।

पति के नाम

कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः, प्रियः कामी च कामुकः ।
वल्लभोऽसुपतिः प्रेयान्, [२६]विटश्च रमणो वरः ।।३७।।

अर्थ - कान्त, इष्ट, दयित, प्रीत, प्रिय, कामिन्, कामुक, वल्लभ असुपति, प्रेयस्, विट, रमण और वर (पुं॰); ये १३ पति के नाम हैं।

माता-पिता और शरीर के नाम

सवित्री जननी माता, सविता जनकः पिता ।
देहोऽपघन-कायाङ्गं, वपुः संहननं तनुः ।।३८।।

अर्थ - सवित्री, जननी और मातृ (स्त्री॰); ये ३ माता के नाम हैं। सवितृ, जनक और पितृ (पुं॰); ये ३ पिता के नाम हैं। देह (पुं॰, न॰), अपघन (पुं॰) काय (पुं॰,न॰), अङ्ग, वपुस्, संहनन (पुं॰), तनु, तनू (स्त्री॰)इसके आगे—

---

२५. 'स्वार्थे कः' इति सूत्रेणात्र कः प्रत्ययः । 'प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः इत्यादिना इत्वं च।

२६. 'विटश्च' के स्थान पर 'धवश्च' पाठ सुन्दर प्रतीत होता है। विट तो उपपति अर्थात् यार का भी नाम है। 'विधवा-सधवा' आदि शब्दों में धव शब्द पति अर्थ में प्रयुक्त भी होता है।

शरीर, पुत्र, बालक और पुत्री के नाम

कलेवरं शरीरं च, मूर्ति-रस्माद्-भवः सुतः ।
पुत्रः सूनु-रपत्यं च, तुक् तोकं चात्मजः प्रजा ॥३९॥
उद्वहस्तनयः पोतो, दारको नन्दनोऽर्भकः ।
स्तनन्धयोत्तानशयौ, स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः ॥४०॥

—**अर्थ** - कलेवर, शरीर (न०) और मूर्ति (स्त्री०); ये ११ शरीर के नाम हैं। अस्मात् भवः सुताः अर्थात् शरीर के नामों के अन्त में 'भव' या 'भू' वाचक शब्द जोड़ देने से पुत्र के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - देहभवं, आत्मभू, तनुज (पुं०) आदि। मूर्तिरस्माद्भवः सुताः; यह पाठान्तर भी है।

सुत, पुत्र, सूनु (पुं०), अपत्य (न०), तुक् (पुं०), तोक (न०), आत्मज (पुं०), प्रजा (स्त्री०); ये ८ पुत्र के नाम हैं। उद्वह, तनय, पोत, दारक, नन्दन, अर्भक, [२७]स्तनन्धय और उत्तानशय (पुं०); ये ८ बालक के नाम हैं।

स्त्रीत्वे दुहितरं अर्थात् पुत्र के नामों के अन्त में 'स्त्रीलिङ्ग बोधक' प्रत्यय जोड़ देने से दुहितृ (स्त्री०) अर्थात् पुत्री के नाम जानना चाहिए, **जैसे**- सुता, पुत्री और दारिका (स्त्री०) आदि।

नोटः अपत्य और तोक शब्द; नपुंसकलिङ्ग में रहते हुए ही पुत्र व पुत्री दोनों के वाचक हैं ।

सखी और मित्र के नाम

वयस्याऽऽली सहचरी, सध्रीची सवयाः सखी ।
आली विवर्जितं मित्रं, सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ॥४१॥

अर्थ - वयस्या, आली [२८]आलि, सहचरी, सध्रीची, सवयस् और सखी (स्त्री०); ये ७ सखी के नाम हैं । इनमें से आली शब्द को छोड़कर; शेष शब्द 'स्त्री बोधक' प्रत्यय निकाल देने से मित्र के नाम बन जाते हैं। **जैसे**- वयस्य, सहचर, सध्र्यच्, सवयस् और सखि (पुं०), मित्र (न०),

---

२७. स्तनन्धय-दूध पीते बालक का और उत्तानशय-चित्त (ऊपर को मुख किये) सोने वाले बालक का नाम है।

२८. 'अलिः सखी वयस्याथ' इत्यमरः। ऐसी स्थिति में 'वयस्याली' यह पद द्विवचनान्त जानना चाहिए। वैकल्पिक ङीष् से आलि और आली शब्द बनते हैं।

सम्बन्ध, मित्रयुज् और सुहृत् (पुं०); ये ९ मित्र के नाम हैं।

सहायक, भाई, भाभी, बहिन, नन्द व मामी के नाम

सहकृत्वा सहकारी, सहायः सामवायिकः ।
सनाभिः बन्धु सगोत्रौ, सोदर्योऽवरजोऽनुजः ॥४२॥
कनीया-नग्रजो ज्येष्ठो, भ्रातृजानी स्वासाऽनुजा ।
भर्तुःस्वसा ननान्दा स्यान्-मातुलानी प्रियाम्बिका ॥४३॥

अर्थ - सहकृत्वन्, सहकारिन्, सहाय और सामवायिक (पुं०); ये ४ सहायक के नाम हैं। सनाभि, बन्धु, सगोत्र और सोदर्य (पुं०); ये ४ सगे भाई के नाम हैं। अवरज, अनुज और कनीयस् (पुं०); ये ३ छोटे भाई के नाम हैं। अग्रज और ज्येष्ठ (पुं०); ये २ बड़े भाई के नाम हैं ।

भ्रातृजानी और स्वसृ (स्त्री०); ये २ भाभी एवं बहिन के नाम हैं। अनुजा (स्त्री०) यह छोटी बहिन का नाम है। ननान्दृ (स्त्री०) यह पति की बहिन अर्थात् ननद का नाम है तथा [२९]मातुलानी और प्रियाम्बिका (स्त्री०); ये २ मामी अर्थात् मामा की स्त्री के नाम हैं।

शत्रु के नाम

वैर्य-राति-रमित्रोऽरि-र्द्विट् सपत्नो द्विषद्-रिपुः ।
***असेव्यो दुर्जनः शुत्र-र्दुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥४४॥**

अर्थ - [३०]वैरिन्, अराति, अमित्र, अरि, द्विष्, सपत्न, द्विषत्, रिपु, असेव्य, दुर्जन, शत्रु, दुष्ट, द्वेषिन्, खल और अहित (पुं०); ये १५ शत्रु के नाम हैं।

किरण और तेज के नाम

दीधिति-र्भानु-रुस्त्रोंऽशु-र्गभस्तिः किरणः करः ।
पादो रुचि-र्मरीचि-र्भा-स्तेजोऽर्चि-र्गौ-र्द्युतिःप्रभाः ॥४५॥
दीप्ति-र्ज्योति-र्महो धाम, रश्मिरूर्जो विभावसुः ।
शीतोष्ण-[३१]प्रायपूर्वाञ्चौ, तद्धन्ता-विन्द-भास्करौ ॥४६॥

---

२९. मातलोपाध्याययोरानुस्वा, इस पाणिनीय वार्तिक के अनुसार 'मातुली वा' यह पाठान्तर भी हो सकता है। *भ्रातृव्य; भाष्य प्रतौ ।

३०. स्त्रीवाचक प्रत्यय जोड़ देने से; ये शब्द स्त्रीलिंग भी हो जाते हैं, **जैसे** वैरिणी आदि।

३१. सूर्य और चन्द्र के नाम बनाने के लिए किरण के नामों के अन्त में मतुपर्थक प्रत्यय जितने—

अर्थ - दीधिति (स्त्री०), भानु, उस्त्र, अंशु, [३२]गभस्ति, किरण, कर, पाद (पुं०), रुचि (स्त्री०), मरीचि (पुं०, स्त्री०), भास् (स्त्री०), तेजस्, अर्चिष्; (न०), गो (स्त्री०, पुं०), द्युति और प्रभा (स्त्री०); ये १६ किरण के नाम हैं।

दीप्ति (स्त्री०), ज्योतिष्, ज्योति, महस्, धामन् (न०), रश्मि (पुं०), ऊर्जस् (न०) और विभावसु (पुं०); ये ८ तेज के नाम हैं।

तदवन्तौ अर्थात् किरण और तेज के नामों के आदि में 'शीत' शब्द और अन्त में मतुप् कप्रत्यय जोड़ देने से इन्दु अर्थात् चन्द्रमा के नाम तथा आदि में 'उष्ण' शब्द और अन्त में मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से सूर्य के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - शीतदीधितिमत्, शीतकिरणवत् तथा उष्णदीधितिमत् और उष्णकिरणवत् (पुं०) आदि।

चन्द्रमा के नाम

शशी विधुः सुधासूतिः, [३३]कौमुदी कुमुदप्रियः ।
कलाभृच्चन्द्रमाश्चन्द्रः, कान्तिमा-नौषधीश्वरः ॥४७॥

अर्थ - शशिन्, विधु, सुधासूति, कौमुदिन्, कुमुदप्रिय, कलाभृत्, चन्द्रमस्, चन्द्र, कान्तिमत् और ओषधीश्वर (पुं०); ये १० चन्द्रमा के नाम हैं। औषधेश्वरः पाठान्तर भी हो सकता है।

नक्षत्र, चन्द्रमा और रात्रि के नाम

उडूनि भानि तारर्क्षं, नक्षत्रं तत्पति-र्निशा ।
क्षणदा रजनी नक्तं, दोषा श्यामा क्षिपाकरः ॥४८॥

अर्थ - उडु, भा (न०), तारा (स्त्री०), ऋक्ष और नक्षत्र (न०); ये ५ नक्षत्र के नाम हैं। इनके अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से [३४]चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - उडुपति, तारापति इत्यादि।

— आवश्यक हैं, उतने शीत और उष्ण शब्द आवश्यक नहीं है, इनके सहयोग के बिना भी भानुमान् आदि प्रयोग होते हैं, इसलिए 'प्रायः' शब्द की उक्ति चरितार्थ होती है।

३२. वर्णागमो गवेन्द्रादौ, सिंहे वर्ण विपर्ययः।
षोडशादौ विकारस्तु, वर्णनाशः पृषोदरे ॥

३३. 'कौमुदी' के स्थान में कुमोदी, कुमोद और कौमोद (पुं०) पाठान्तर हैं।

३४. चन्द्रमा के नाम; श्लोक सं० ४६,४८,१२८ और १८० में भी आये हैं। श्लोक सं० १२८ में रात्रि का नाम शर्वरी भी है।

निशा, क्षणदा, रजनी (स्त्री०), नक्तं (अ०), दोषा, श्यामा और क्षिपा (स्त्री०); ये ७ रात्रि के नाम हैं। इनके अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से भी चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - निशाकर और क्षपाकर (पुं०) आदि।

[३५]सूर्य, दिन और चकवे के नाम

तरणिस्तपनो भानु-र्ब्रध्नः पूषाऽर्यमा रविः ।
तिग्मः पतङ्गो द्युमणि-र्मार्तण्डोऽर्को ग्रहाधिपः ॥४९॥
इनः सूर्यस्तमोध्वान्त, तिमिराऽरि-र्विरोचनः ।
दिनं दिवाहऽर्दिवसो, वासरस्तत्करश्च सः ॥५०॥
चक्रवाकाऽब्ज-पर्याय-बन्धुः कुमुद-विप्रियः ।
यमुना-यम-कानीन-जनकः सविता मतः ॥५१॥

अर्थ - तरणि, तपन, भानु, ब्रध्न, पूषन्, अर्यमन्, रवि, तिग्म, पतङ्ग, द्युमणि, मार्तण्ड, अर्क, ग्रहाधिप, इन, सूर्य, [३६]तमोऽरि, ध्वान्तारि, तिमिरारि और विरोचन (पुं०); ये १९ सूर्य के नाम हैं।

दिन (न०), दिवा (अ०), अहन् (न०), दिवस और वासर (पुं०); ये ५ दिन के नाम हैं। तत्करः अर्थात् दिन के नामों के अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - दिनकर आदि ।

[३७]कोक, चक्र, चक्रवाक और रथाङ्ग (पुं०); ये ४ चकवे के नाम हैं। अब्जपर्याय अर्थात् चकवे के नामों के अन्त में और पूर्वोक्त कमल के नामों के अन्त में 'बन्धु वाचक' शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - कोकबन्धु और कमलबन्धु (पुं०) आदि तथा कुमुदविप्रिय, यमुनाजनक, यमजनक और कानीनजनक (पुं०); ये भी सवितृ (पुं०) अर्थात् सूर्य के नाम हैं।

---

३५. सूर्य के नाम; श्लोक सं० ४६ में भी आये हैं।

३६. अन्धकार के नामों के अन्त में अरि-शत्रु वाचक शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- तमोद्विट् इत्यादि।

३७. 'कोकश्चक्रश्चक्रवाको, रथाङ्गा ह्यनामकः' इत्यमरः।

घोड़े के नाम

वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी, हयो धुर्यस्तुरङ्गमः ।
सप्ति-रर्वा [३८]हरी रथ्यः, सप्ताद्यश्वो मयूखवान् ।।५२।।

अर्थ - वाह, अश्व, तुरग, वाजिन्, हय, धुर्य, तुरङ्गम, सप्ति, अर्वन्, हरि और रथ्य (पुं०); ये ११ घोड़े के नाम हैं। सप्ताद्यश्वो अर्थात् घोड़े के नामों के आदि में 'सप्त' शब्द जोड़ देने से मयूखवत् (पुं०) अर्थात् सूर्य के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - सप्तवाह, सप्तवाजिन्, सप्तसप्ति और सप्ताश्व (पुं०) आदि।

आकाश के नाम

खं विहायो वियद्-व्योम, गगनाकाश-मम्बरम् ।
द्यौ-र्नभोऽभ्रोऽन्तरिक्षं च, मेघवायु-पथोऽप्यथ ।।५३।।

अर्थ - ख (न०), [३९]विहायस् (पुं०,न०), वियत्, व्योमन्, गगन, आकाश, अम्बर (न०), द्यो, दिव् (स्त्री०) नभस्, अभ्र, अन्तरिक्ष, अन्तरीक्ष (न०), [४०]मेघपथ और वायुपथ (पुं०); ये १५ आकाश के नाम हैं।

विद्याधर और पक्षी के नाम

तच्चरः खेचरस्तद्गः, पक्षी पत्री पतत्र्यपि ।
शकुन्तिः शकुनि-र्विश्च, पतङ्गो विष्किरो वयः ।।५४।।

अर्थ - तच्चरः अर्थात् आकाश के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से विद्याधर के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - खेचर और विहायश्चर (पुं०) आदि तथा 'ग' शब्द जोड़ देने से पक्षी और विद्याधर के नाम हो जाते हैं, **जैसे** - खग, विहायोग, नभोग और वियद्ग (पुं०) आदि तथा पक्षिन्, पत्रिन्, [४१]पतत्रिन्, शकुन्ति, पतङ्ग, शकुनि,वि, विष्किर (पुं०) और वयस्

---

३८. 'हरी रथ्यः' पद में 'रो रि' इस सूत्र में रेफ का लोप होने पर 'द्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस पणिनीय सूत्र से इकार दीर्घ हो गया है।

३९. यह शब्द अकारान्त भी है, **जैसे**- विहायः, विहायौ, विहायः इत्यादि।

४०. मेघ और वायु के नामों के अन्त में पथ (मार्ग) वाचक शब्द जोड़ देने से आकाश के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- मेघपथ और वायुपथ इत्यादि।

४१. 'हलदन्तात्सप्ततेभ्या' इस सूत्र से यहाँ सप्तमी का लोप नहीं हुआ, अतः पतित्र, शकुन्त,शकुन और पत; ये शब्द पाठान्तर भी हो सकते हैं।

(न०); ये ९ पक्षी के नाम हैं।

नोट - नभचर इत्यादि शब्दों के प्रयोग से ध्वनित होता है कि— आकाश के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से भी पक्षी के नाम बन जाते हैं।

मांस तथा राक्षस के नाम

जाङ्गलं पिशितं मांसं, पलं पेशी च तत्प्रियः।
यातुधानस्तथा रक्षो, रात्र्यादिचर इष्यते ॥५५॥

अर्थ - जाङ्गल, पिशित, मांस, पल (न०) और पेशी (स्त्री०); ये ५ मांस के नाम हैं। इनके अन्त में 'प्रिय' शब्द जोड़ देने से राक्षस के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - मांसप्रिय (पुं०) आदि। यातुधान (पुं०) और [42]रक्षस् (न०); ये दो राक्षस के नाम हैं तथा (रात्र्यादि चर) अर्थात् रात्रि के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से भी राक्षस के नाम माने जाते हैं, **जैसे**- रात्रिचर और निशाचर (पुं०) आदि।

देव और स्वर्ग के नाम

सुतोऽदितेस्तडिद्धन्वा, सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः ।
स्व-र्द्यौः स्वर्गोऽथ नाकश्च, तद्वासस्त्रिदशो मतः ॥५६॥

अर्थ - सुतोऽदिते अर्थात् अदिति शब्द के अन्त में 'पुत्र वाचक' शब्द जोड़ देने से देव के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - अदितिसुत और अदितिसूनु आदि तथा तडिद्धन्वन्, सेन्द्र, देव, सुर और अमर (पुं०); ये ५ देव के नाम हैं। स्वर् (अ०), [43]द्यौः, दिव्, द्यो (स्त्री०), नाक (पुं०); ये ५ स्वर्ग के नाम हैं। तद्वासः अर्थात् स्वर्ग के नामों के अन्त में 'वास शब्द' जोड़ देने से भी त्रिदश (पुं०) अर्थात् देव के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- स्वर्वास, द्युवास और द्योवास (पुं०) इत्यादि।

---

४२. 'रक्षः एव' एक प्रकार के विग्रह में 'स्वार्थेऽण्' इस सूत्र से स्वार्थ में 'अण् प्रत्यय' करने पर राक्षस (पुं०) शब्द भी बनता है।

४३. 'अचोञ्णिति तथा ''दिव औत्' इन दोनों सूत्रों के नियम के अनुसार 'द्यौः' पद से दिव् और द्यो पद निकलता है।

इन्द्र के नाम

तत्पतिः शक्र इन्द्रश्च, सुनाशीरः शतक्रतुः ।
प्राचीनबर्हीः सूत्रामा, वज्री चाखण्डलो हरिः ॥५७॥
शत्रु-र्बलस्य गोत्रस्य, पाकस्य नमुचे-रपि ।
वृत्रहा च सहस्राक्षो, गीर्वाणेशः पुरन्दरः ॥५८॥
विडौजाश्चाप्सरोनाथो, वासवो हरिवाहनः ।
मरुत्पति-र्मरुत्वाँश्च, वृषा चैरावणाधिपः ॥५९॥
शतमन्युस्तुराषाट् च, पुरुहूतश्च कौशिकः ।
सङ्क्रन्दनोऽथ मघवान्, पुलोमारि-र्मरुत्सखः ॥६०॥

अर्थ - तत्पतिः अर्थात् देव और स्वर्ग के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से इन्द्र के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - त्रिदशपति, देवपति, स्वर्गपति और नाकपति (पुं०) आदि तथा शक्र, इन्द्र, सुनाशीर, शतक्रतु, प्राचीनबर्हिष्, [४४]सूत्रामन्, वज्रिन, आखण्डल, हरि, बलशत्रु, गोत्रशत्रु, पाकशत्रु, नमुचिशत्रु वृत्रहन्, सहस्राक्ष, गीर्वाणेश, पुरन्दर, [४५]विडौजस्, अप्सरोनाथ, वासव, हरिवाहन, मरुत्पति, मरुत्वात्, वृषन्, ऐरावणाधिप, शतमन्यु, तुराशाह, पुरुहूत, कौशिक, सङ्क्रन्दन, मघवत्, पुलोमारि और मरुत्सख (पुं०); ये ३३ इन्द्र अर्थात् देवराज के नाम हैं।

दिशा और दिगम्बर मुनि के नाम

काष्ठा ककुब् दिगाशा च, दक्षकन्या तथा हरित् ।
[४६]तत्पर्याय परं योज्यं, प्राज्ञैः पाल गजाम्बरम् ॥६१॥

अर्थ - काष्ठा, ककुप्, दिश्, आशा, दक्षकन्या और हरित् (स्त्री०); ये ६ दिशा के नाम हैं। तत्पर्याय परं अर्थात् दिशा के नामों के अन्त में 'पाल' शब्द जोड़ देने से कष्ठापाल और दिक्पाल (पुं०) आदि दिक्पाल के 'गज' शब्द जोड़ देने से दिग्गज (पुं०) आदि दिग्गज के तथा वस्त्र वाचक 'अम्बर' आदि शब्द जोड़ देने से दिगम्बर, काष्ठाम्बर और दिग्वासस् (पुं०) आदि

४४. सुत्रामा, सूत्रामान् और सुत्रामान्; ऐसा पाठान्तर भी है।

४५. विद् व्यापकमोजः यस्य' विडौजाः । अपसरस्यां नाथः अप्सरोनाथः।

४६. तत्पर्यायेभ्यः परम् = अग्रे इत्यर्थेः।

दिगम्बर मुनि के नाम बन जाते हैं।

वायु, भीम और हनुमान के नाम

पवनः पवमानश्च, वायु-र्वातोऽनिलो मरुत् ।
समीरणो गन्धवाहः, श्वसनश्च सदागतिः ॥६२॥
नभस्वान् मातरिश्वा च, चरण्यु-र्जवनश्चलः।
प्रभञ्जनोऽस्य पर्याय, पुत्रौ भीमाञ्जनात्मजौ ॥६३॥

अर्थ - पवन, पवमान, वायु, वात, अनिल, मरुत्, समीरण, गन्धवाह, गन्धवह, श्वसन, सदागति, नभस्वत्, मातरिश्वन्, [४७]चरण्यु, जवन, चल और प्रभञ्जन (पुं०); ये १७ वायु के नाम हैं।

अस्य पर्याय पुत्र अर्थात् वायु के नामों के अन्त में 'पुत्र वाचक' शब्द जोड़ देने से भीम के तथा अञ्जना के नामों के अन्त में 'आत्मज' शब्द जोड़ देने से हनुमान् के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - पवनपुत्र, वायुसूनु और अञ्जनात्मज (पुं०) आदि।

अग्नि के नाम

तत्सखोऽग्निः शिखी वह्निः, पावकश्चाऽऽशु-शुक्षणिः।
हिरण्यरेताः सप्तार्चि - र्जातवेदास्तनूनपात् ॥६४॥
स्वाहापति-र्हुताशश्च, ज्वलनो दहनोऽनलः ।
वैश्वानरः कृशानुश्च, रोहिताश्वो विभावसुः ॥६५॥
वृषाकपिः समीगर्भो, हव्यवाहो हुताशनः ।

अर्थ - तत् अर्थात् पवन के नामों के अन्त में 'सखि' आदि 'मित्र वाचक' शब्द जोड़ देने से अग्नि के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - [४८]पवनसख (पुं०) आदि तथा अग्नि, शिखिन्, वह्नि, पावक, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस् (पुं०), सप्तार्चिष् (न०), जातवेदस्, तनूनपात्, स्वाहापति, हुताश, ज्वलन, दहन, अनल, वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, विभावसु, वृषाकपि, समीगर्भ हव्यवाह और हुताशन (पुं०); ये २२ अग्नि के नाम हैं।

---

४७. चराचर् यातीति चरण्युः।

४८. राजाहः सखिभ्यष्ट च । वायुमित्र इत्यादि।

कार्तिकेय के नाम

तदादिसूनुः सेनानीः, स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥६६॥
कार्तिकेयो विशाखश्च, कुमारः षण्मुखो गुहः ।
शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च, स्वामी शरवणोद्भवः ॥६७॥

अर्थ - अग्नि के नामों के अन्त में 'सुनु' आदि 'पुत्र वाचक' शब्द जोड़ देने से कार्तिकेय के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- अग्निसूनु, वह्निपुत्र (पुं०) आदि तथा सेनानी, स्कन्द, [४९]शिखिवाहन, कार्तिकेय, विशाख, कुमार, षण्मुख, गुह, शक्तिमत् क्रौञ्चभेदिन्, स्वामिन् और शरवणोद्भव (पुं०); ये १२ कार्तिकेय के नाम हैं।

[५०]महादेव के नाम

तत्पिता शङ्करः, शम्भुः, शिवः स्थाणु-र्महेश्वरः ।
त्र्यम्बको धूर्जटिः शर्वः, पिनाकी प्रमथाधिपः ॥६८॥
त्रिपुरारि-[५१]र्विशालाक्षो, गिरीशो नीललोहितः ।
रुद्रेन्दुमौली-र्यज्ञारि - स्त्रिनेत्रो वृषभध्वजः ॥६९॥
उग्रः शूली कपाली च, शिपिविष्टो भवो हरः ।
उमापति-र्विरूपाक्षो, विश्वरूपः कपर्द्यपि ॥७०॥

अर्थ - तत्पिता अर्थात् कार्तिकेय के नामों के अन्त में 'पितृ वाचक' शब्द जोड़ देने से महादेव के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - सेनानीपितृ और गुहजनक (पुं०) आदि तथा शङ्कर, रम्भु, शिव, स्थाणु, महेश्वर, [५२]त्र्यम्बक, धूर्जटि, शर्व, पिनाकिन्, प्रमथाधिप, त्रिपुरारि, विशालाक्ष, [५३]गिरीश, नीललोहित, रुद्र, [५४]इन्दुमौलि, यज्ञारि, त्रिनेत्र, वृषभध्वज, उग्र, शूलिन्, कपालिन्, शिपिविष्ट, भव, हर, उमापति, विरूपाक्ष, विश्वरूप और कपर्दिन्

४९. मयूर की सवारी होने से शिखिवाहन तथा छह मुख होने से कार्तिकेय को षण्मुख कहते हैं।
५०. महादेव के नाम श्लोक सं० ७१ में भी आये हैं।
५१. श्लोक सं० ६८ और ६९ में विशेषाक्षो, गिरिशो; ये पाठान्तर भी हो सकते हैं।
५२. 'इकः परो यणचीत्येके' जैनेन्द्रव्याकरण के इस वार्तिक के अनुसार विकल्प से 'त्रियम्बक' रूप भी बनता है।
५३. गिरौ पर्वते शेते इति गिरिशः गिरीशश्च।
५४. तीन नेत्र होने से त्रियम्बक, मस्तक पर चन्द्र होने से इन्दुमौलि और त्रिशूलधारक होने से शूली कहते हैं।

(पुं०); ये २९ महादेव के नाम हैं।

गङ्गा और महादेव के नाम

भागीरथी त्रिपथगा, जाह्नवी हिमवत्सुता ।
मन्दाकिनी द्युपर्याय - धुनी गङ्गा नदीश्वरी ॥७१॥

अर्थ - भागीरथी, त्रिपथगा, जाह्नवी, हिमवत्सुता, मन्दाकिनी, गङ्गा और नदीश्वरी (स्त्री०); ये ७ गङ्गा के नाम हैं। द्युपर्याय धुनी अर्थात् स्वर्ग के नामों के अन्त में 'धुनी' आदि 'नदी वाचक' शब्द जोड़ देने से भी गङ्गा के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - स्वर्धुनी, नाकनदी, स्वर्गधुनी (स्त्री०)। 'नदीश्वरः' पाठान्तर है, जिससे नदी के नामों के अन्त में 'ईश्वर' शब्द जोड़ देने से महादेव के नाम बनते हैं, ऐसा ध्वनित होता है।

ब्रह्मा और नारद के नाम

विधि-र्वेधा विधाता च, द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः ।
पद्म-पर्याय-योनिश्च, पितामह विरिञ्चनौ ॥७२॥
हिरण्यगर्भः स्त्रष्टा च, प्रजापतिस्सहस्त्रपात् ।
ब्रह्मात्मभू-रनन्तात्मा, कस्तत्पुत्रोऽथ नारदः ॥७३॥

अर्थ - विधि, वेधस्, विधातृ, द्रुहिण, अज, चतुर्मुख, [५५]पितामह, [५६]विरिञ्चन, हिरण्यगर्भ, स्त्रष्टन्, प्रजापति, सहस्त्रपात्, ब्रह्मन्, आत्मभू, अनन्तात्म, और क (पुं०); ये १६ ब्रह्मा के नाम हैं।

तथा पद्मपर्याय अर्थात् कमल के नामों के अन्त में 'योनि' शब्द जोड़ देने से भी ब्रह्मा के नाम बन जाते हैं। **जैसे** - कमलयोनि, पद्मयोनि और कुमुदयोनि (पुं०) आदि । तत्पुत्रो अर्थात् ब्रह्मा के नामों के अन्त में 'पुत्र वाचक' शब्द जोड़ देने से नारद के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - विधिपुत्र और ब्रह्मसूनु (पुं०) आदि।

कृष्ण और लक्ष्मी के नाम

कृष्णो दामोदरो विष्णु - रुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः ।
केशवश्च हृषीकेशः, शार्ङ्गी नारायणो हरिः ॥७४॥

---

५५. 'पितृव्य मातुल मातामह पितामहः' इत्यादि गणसूत्रेण डामहच्प्रत्ययान्तप्रयोगः।

५६. विरिञ्च और विरिञ्चि पाठान्तर भी हो सकते हैं तथा चोक्तम्-'विरिञ्चः' कमलासनः; अमरकोश स्वर् वर्ग श्लोक सं० १२।

केशी मधु-र्बलि-र्बाणो, हिरण्य-कशिपु-र्मुरः।
तदादि-सूदनः शौरिः, पद्मनाभोऽप्यधोऽक्षजः ॥७५॥
गोविन्दोवासुदेवश्च,[५७] लक्ष्मीःश्री-र्गोमिनीन्दिरा।
तत्पतिः शैलभूम्यादि-धरश्चक्रधरस्तथा ॥७६॥

अर्थ - कृष्ण, दामोदर, विष्णु, उपेन्द्र, पुरुषोत्तम, केशव, हृषीकेश, शार्ङ्गिन्, नारायण, हरि, केशिसूदन, मधुसूदन, बलिसूदन, बाणसूदन, हिरण्यकशिपुसूदन, मुरसूदन, [५८]शौरि, पद्मनाभ, अधोऽक्षज, गोविन्द और वासुदेव (पुं०); ये २१ कृष्ण के नाम हैं।

लक्ष्मी, श्री, गोमिनी और इन्दिरा (स्त्री०); ये ४ लक्ष्मी अर्थात् कृष्ण की स्त्री के नाम हैं। तत्पतिः अर्थात् कृष्ण के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द तथा शैल, भूमि आदि पर्वत और भूमि के नामों के अन्त में 'धर' शब्द जोड़ देने से भी चक्रधर अर्थात् कृष्ण के नाम बन जाते हैं, **जैसे**-लक्ष्मीपति, पर्वतधर और [५९]भूमिधर (पुं०) आदि। चक्रधर भी कृष्ण का नाम है।

[६०]कामदेव के नाम

तत्पुत्रो मन्मथः कामः, सूर्पकारि-रनन्यजः।
कायपर्याय रहितो, मदनो मकरध्वजः ॥७७॥

अर्थ - तत्पुत्रः अर्थात् कृष्ण के नामों के अन्त में 'पुत्र वाचक' शब्द और काय पर्यायः अर्थात् शरीर के नामों के अन्त में 'रहित' शब्द अथवा आदि में 'अ' शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम बन जाते हैं, **जैसे**-कृष्णपुत्र, शौरिसूनु, काय रहित और अकाय (पुं०) आदि तथा मन्मथ, काम, [६१]सूर्पकारि, अनन्यज, मदन और मकरध्वज (पुं०); ये ६ कामदेव

---

५७. अवी-तन्त्री-तरी-लक्ष्मी, धी-ह्री श्रीणा-मुणादिषु।
सप्त-स्त्रीलिंग-शब्दानां, न सुलोपः कदाचन ॥
इस पाणिनीय कारिका के अनुसार श्रीः और लक्ष्मीः शब्द के 'सु' का लोप नहीं होता है।

५८. 'देवकीनन्दनः शौरिः; इत्यमरः।

५९. यह पर्वत का भी नाम है।

६०. काम के नाम; श्लोक सं० ८०,८१,८२,८३,८४ में भी हैं।

६१. 'शम्बरारिः, शङ्करारि पाठान्तर भी हो सकता है, 'शम्बरारि-र्मनसिजः; इति अमरः।

के नाम हैं।

बाण के नाम

शिलीमुखः शरो बाणो, मार्गणो रोपणः कणः।
इषु काण्डं क्षुरप्रं च, नाराचं तोमरं खगः ॥७८॥

अर्थ - शिलीमुख, शर, बाण, मार्गण, रोपण, कण, इषु (पुं०), काण्ड, क्षुरप्र, नाराच, तोमर (पुं०,न०) और खग (पुं०); ये १२ बाण के नाम हैं।

धनुष और धनुष की कोटि के नाम

कार्मुकं धन्व चापं च, धर्मं कोदण्डकं धनुः ।
शिलीमुखाद्य-मासनं, [६२]तत्कोटि-मटनीं विदुः ॥७९॥

अर्थ - कार्मुक, धन्वन् (न०); चाप, धर्मन्, धर्म, कोदण्डक और धनुष (पु०न०); ये ७ धनुष के नाम हैं तथा (सिली मुखादि आसनं) अर्थात् बाण के नामों के अन्त में 'आसन वाचक' शब्द जोड़ देने से भी धनुष के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - शिलीमुखासन, शरासन और इष्वासन (न०) आदि। तत्कोटिम् अर्थात् धनुष की कोटि अर्थात् अग्रभाग या नोक को अटनी या अटनि (स्त्री०) जानना चाहिए।

पुष्प और काम के नाम

पुष्पं सुमनसः फुल्लं, लतान्तं प्रसवोद्गमौ।
प्रसूनं कुसुमं ज्ञेयं, तदाद्यस्त्र शरः स्मरः ॥८०॥

अर्थ - पुष्प (न०), सुमनसः (स्त्री,बहु०), फुल्ल, लतान्त (न०), प्रसव, उद्गम (पुं०), प्रसून और [६३]कुसुम (न०); ये ८ पुष्प अर्थात् फूल के नाम हैं। तदादि अस्त्र अर्थात् पुष्प के नामों के अन्त में 'अस्त्र' अर्थात् हथियार वाचक शब्द और शर अर्थात् बाण के नामों को जोड़ देने से स्मर अर्थात् काम के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- पुष्पास्त्र, कुसुमायुध, प्रसूनहेति, पुष्पशर और प्रसूनबाण (पुं०) आदि। इस श्लोक में [६४]सुमनसः यह बहुवचन का

---

६२. 'तत्कोटिमटनिं विदुः' यह पाठान्तर भी हो सकता है, क्योंकि ऐसे स्त्रीलिंग शब्दों में वैकल्पिक ङीप होता है, **जैसे**- रात्रिः, रात्री, शकटिः, शकटी, आलिः, आली इत्यादि।

६३. कौ-पृथिव्यां शोभां सूते इति कुसुमम्।

६४. स्त्रियः सुमनसः पुष्पम्।

रूप है।

मन और कामदेव के नाम

स्वान्त-मास्वनितं चित्तं, चेतोऽन्तःकरणं मनः।
हृदयं विशिखाऽऽकूतं, मारस्तत्रोद्भवो मतः ॥८१॥

अर्थ - स्वान्त, आस्वनित, चित्त, चेतस् अन्तःकरण, मनस्, हृदय, विशिख और आकूत (न०); ये ९ मन के नाम हैं। इनके अन्त में 'भव' अथवा 'उद्भव' वाचक शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम माने जाते हैं, **जैसे**- मनोभव, स्वान्तोद्भव, मनोज और चित्तजन्य (पुं०) आदि ।

धनुष की डोरी और भ्रमर के नाम

मौर्वी जीवा गुणो गव्या, ज्याऽलि-भृङ्गः शिलीमुखः।
भ्रमरः षट्पदो ज्ञेयो, द्विरेफश्च मधुव्रतः ॥८२॥

अर्थ - मौर्वी, जीवा (स्त्री०), गुण (पुं०), गव्या और ज्या (स्त्री०); ये ५ धनुष की डोरी के नाम हैं। अलि, भृङ्ग, शिलीमुख, भ्रमर, षट्पद, द्विरेफ और मधुव्रत (पुं०); ये ७ भ्रमर के नाम जानना चाहिए।

हथियारों के नाम

मौर्व्यादि-प्रान्त-मल्यादि, कन्दर्पस्यैक्षवं धनुः।
हेति-रस्त्राऽयुधं शस्त्रं, पुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः॥८३॥

अर्थ - मौर्व्यादिप्रान्तम् अर्थात् अलि आदि भ्रमर के नामों के अन्त में मौर्वी आदि डोरी के नामों को जोड़ देने से 'काम' के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- अलिमौर्वी (स्त्री०) आदि। काम के धनुष को ऐक्षव (न०) कहते हैं। हेति (स्त्री०), अस्त्र, आयुध और शस्त्र (न०); ये ४ हथियार के नाम हैं। पुष्पाद्यस्त्र अर्थात् पुष्प के नामों के अन्त में 'हथियार' और 'बाण' के नामों को जोड़ देने से भी 'कामदेव' के नाम माने जाते हैं, **जैसे**- पुष्पहेति और पुष्पबाण (पु०) आदि।

ध्वजा और काम के नाम

ध्वजा पताका केतुश्च, चिह्नं तद्वैजयन्त्यपि ।
तत्तदन्तो झषाद्यादिः, शम्भो-र्विघ्नकरः स्मरः ॥८४॥

अर्थ - [६५]ध्वजा (त्रि०), पताका (स्त्री०), केतु (पु०), चिह्न (न०), वैजयन्ती (स्त्री०); ये ५ ध्वजा के नाम हैं। झषाद्यादि अर्थात् मछली के नामों के अन्त में तत्तदन्तो अर्थात् ध्वजा के नामों को अन्त में जोड़ देने से और शङ्कर के नामों के अन्त में 'विध्नकर' शब्द जोड़ देने से 'कामदेव' के मान बन जाते हैं, **जैसे** - झषध्वज, मीनकेतु और शिव [६६]विध्नकर (पु०) इत्यादि।

तलवार के नाम

कौक्षेयकोऽसि-र्निस्त्रिंशः, कृपाणः करवालकः।
तरवारि-र्मण्डलाग्रः, [६७]खड्ग-नामावलि-र्मता ॥८५॥

अर्थ - कौक्षेयक, असि, निस्त्रिंश, कृपाण, करवालक, तरवारि, मण्डलाग्र और खड्ग (पुं०); ये ८ तलवार के नाम (मता) माने गये हैं।

सेना के नाम

[६८]अक्षौहिणी बलानीकं, वाहिनी साधनं चमूः।
ध्वजिनी पृतना सेना, सैन्यं दण्डो वरूथिनी ॥८६॥

अर्थ - अक्षौहिणी (स्त्री०), बल, अनीक (न०), वाहिनी (स्त्री०), साधन (न०), चमू, ध्वजिनी, [६९]प्रतना, सेना (स्त्री०), सैन्य (न०), दण्ड (पु०) और वरूथिनी (स्त्री०); ये १२ सेना के नाम हैं।

युद्ध के नाम

कदनं समरं युद्धं, संयुगं कलहं रणम्।
सङ्ग्रामं सम्परायाजी, संयदाहु-र्महाहवम् ॥८७॥

अर्थ - [७०]कदन, समर (पुं०,न०), युद्ध (न०) संयुग, कलह (पु०), रण

---

६५. ते ते ध्वजपर्याया अन्ते यस्य। झषादिमीनपर्यायश्चादौ यस्य। अर्धर्चादिगणे पाठात् पुल्लिंग नपुँसकलिंगाश्च।

६६. काम ने शिव जी की तपस्या में विघ्न किया था।

६७. खड्गनामावलिं विदुः; इति मूलपाठः।

६८. २१८७० रथ, २१८७० हाथी, ३५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल सेना के समूह को अक्षौहिणी कहते हैं। 'पूर्व-पदात्संज्ञायामगः' इस वार्तिक में इस शब्द में णत्व हुआ है।

६९. 'प्रतनाऽनीकिनी चमूः' इत्यमरः।

७०. घटादिगणे 'कदि-कदि क्लदि' इति पठित्वा त्रयोऽप्यनिदिताः इति नान्दी। तन्मतेन कदनमिति प्रयोगः। अन्यत्र मते तु कन्दनम् इति विशेषः।

(पुं०, न०), संग्राम,सम्पराय (पुं०) आजि, संयत् (स्त्री०) और महाहव (पुं०); ये १२ युद्ध के नाम हैं।

हस्ती (हाथी) और महावत के नाम

गजो मतङ्गजो हस्ती, वारणोऽनेकपः करी ।
दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी, द्विरदेभ मितङ्गमाः ।।८८।।
शुण्डालः सामजो नागो, मातङ्गः पुष्करी द्विपः ।
करेणुः सिन्धुरस्तेषु, यन्ता याता निषाद्यपि ।।८९।।

अर्थ - गज, मतङ्गज, हस्तिन्, वारण, अनेकप, [७१]करिन्, दन्तिन्, स्तम्बेरम, कुम्भिन्, द्विरद, इभ, [७२]मितङ्गम, शुण्डाल, सामज, नाग, मातङ्ग, पुष्करिन्, द्विप, करेणु और सिन्धुर (पुं०); ये २० हाथी के नाम हैं। इनके अन्त में यन्तृ, यातृ और निषादिन् (पुं०) शब्द जोड़ देने से 'महावत' के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- गजयन्तृ, गजयातृ और गजनिषादिन् (पुं०) आदि।

सिंह, तेंदुए और अष्टापद के नाम

नागाद्यरिः कण्ठीरवो, मृगेन्द्रः केशरी हरिः ।
व्याघ्रश्चमूरः शार्दूलः, शरभोऽष्टापदोऽष्टपात् ।।९०।।

अर्थ - हस्ती के नामों के अन्त में 'अरि' वाचक शब्द जोड़ देने से सिंह के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - गजारि (पुं०) आदि तथा कण्ठीरव, मृगेन्द्र, केशरिन् या [७३]केसरिन् और हरि (पुं०); ये ५ सिंह के नाम हैं। व्याघ्र, चमूर और शार्दूल (पुं०); ये ३ तेंदुए के नाम हैं। शरभ, अष्टापद और अष्टपात् (पुं०); ये ३ अष्टापद के नाम हैं।

शूकर और ऊँट के नाम

क्रोडो वराहो दंष्ट्री च, घृष्टिः पोत्री च शूकरः ।
उष्ट्रो मयः श्रृङ्खलिकः, करभः शीघ्रगामुकः ।।९१।।

अर्थ - क्रोड, वराह, दष्ट्रिन्, घृष्टि, पोत्रिन् और शूकर (पुं०); ये ६ शूकर के नाम हैं। उष्ट्र, मय, श्रृङ्खलिक, करभ और शीघ्रगामुक (पुं०); ये

७१. इदन्तोऽपि करिशब्दः।

७२. मितं गच्छतीति मितङ्गमः।

७३. 'हर्यक्षः केसरी हरिः' इत्यमरः। सिंहवर्गे श्लोकः सं० १।

५ ऊँट के नाम हैं। सूकर; यह पाठान्तर भी है।

कुत्ते के नाम

कौलेयकः सारमेयो, मण्डलः श्वा पुरोगतिः ।
जिह्वापो ग्रामशार्दूलः, कुक्कुरो रात्रिजागरः ॥९२॥

अर्थ - कौलेयक, सारमेय, मण्डल, श्वन्, पुरोगति, जिह्वाप, ग्रामशार्दूल, कुक्कर और रात्रिजागर (पुं॰); ये ९ कुत्ते के नाम हैं।

सुवर्ण (सोने), चाँदी के और मोती नाम

हेम चाष्टापदं स्वर्णं, कनकार्जुन-काञ्चनम् ।
सुवर्णं हिरण्यं भर्म, जातरूपं च हाटकम् ॥९३॥
तपनीयं कलधौतं, कार्तस्वरं शिलोद्भवम् ।
रूप्यं रजतं गुलिका, शुक्तिजं मौक्तिकं तथा ॥९४॥

अर्थ - हेमन् (न॰), अष्टापद (पुं॰,न॰), स्वर्ण, कनक, अर्जुन, काञ्चन, सुवर्ण, हिरण्य, भर्मन्, जातरूप, हाटक, तपनीय, कलधौत, कार्तस्वर और शिलोद्भव (न॰); ये १५ सुवर्ण के नाम हैं।

रजत, रूप्य (न॰) और गुलिका (स्त्री॰); ये ३ चाँदी के नाम हैं। शुक्तिज और मौक्तिक (न॰); ये २ मोती के नाम हैं।

धन और कुवेर के नाम

वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं, स्वार्थ[७४]रा द्रविणं धनम् ।
कस्वरं तत्पतिं प्राहुः, कुवेरं चैकपिङ्गलम् ॥९५॥
वैश्रवणं राजराज - मुत्तराशापतिं तथा ।
अलकानिलयं श्रीदं, धनपर्याय दाय दम् ॥९६॥

अर्थ - वित्त, वस्तु, वसु, द्रव्य (न॰), स्व (पुं॰, न॰), अर्थ, रै, (पुं॰), द्रविण, धन और कस्वर (न॰); ये १० धन के नाम हैं। तत्पतिं अर्थात् धन के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से कुवेर के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- धनपति और द्रविणबल्लभ (पुं॰) आदि ।

अर्थ- कुवेर, एकपिङ्गल, वैश्रवण, राजराज, उत्तराशापति, अलकानिलय

७४. 'रायो हलि' इस सूत्र से ऐकार को आकार हो गया है।

और श्रीद (पुं०); ये ७ कुबेर के नाम हैं तथा धन पर्याय दाय दम् अर्थात् धन के नामों के अन्त में 'दाय' वा 'द' शब्द जोड़ देने से भी कुवेर के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - धनदाय और धनद (पुं०) आदि।

देश और नगरी के नाम

राष्ट्रं जनपदो निर्गो, जनान्तो विषयः स्मृतः ।
पूः पुरं पुरी नगरी, पत्तनं पुटभेदनम् ॥९७॥

अर्थ - राष्ट्र (न०), जनपद, निर्ग, जनान्त और विषय (पुं०); ये ५ देश के नाम हैं। पुर् (स्त्री०), पुर (न०), पुरी, नगरी (स्त्री०), पत्तन और पुटभेदन (न०); ये ६ नगरी के नाम हैं।

मुख और कर्ण अर्थात् कान के नाम

वक्त्रं लपन-मास्य च, वदनं मुख-माननम् ।
श्रवणं श्रोत्रं श्रवश्चापि, कर्णं चैव श्रुतिं विदुः ॥९८॥

अर्थ - वक्त्रं, लपन, आस्य, वदन, मुख और आनन (न०); ये ६ मुख के नाम हैं। श्रवण, श्रोत्र, श्रवस् (न०), कर्ण (पुं०) और श्रुति (स्त्री०); ये ६ कान के नाम जानना चाहिए।

नेत्र और कटाक्ष के नाम

दृगक्षि चक्षु-र्नयनं, दृष्टि-र्नेत्रं विलोचनम् ।
कटाक्षः केकरापाङ्गं, विभ्रमस्तस्य वैकृतम् ॥९९॥

अर्थ - दृश् (स्त्री०), अक्षि, चक्षुष्, नयन (न०), दृष्टि (स्त्री०), नेत्र और विलोचन (न०); ये ७ नेत्र के नाम हैं। कटाक्ष (पुं०, न०), केकर (पुं०), अपाङ्ग (पुं०, न०) और विभ्रम (पुं०); ये ४ नेत्रविकार अर्थात् आँख चलाने या आँख मारने के नाम हैं।

बाहु, हास्थ, कन्धा और अँगुलियों के नाम

दो-र्दोषा च भुजो बाहुः, पाणि-र्हस्त करस्तथा ।
प्राहु-र्बाहुशिरोऽसश्च, हस्त-शाखा-कराङ्गुलिः ॥१००॥

अर्थ - दोष (पुं०, न०), दोषा (स्त्री०), भुज और बाहु (पुं०, स्त्री०); ये ४ बाँह के नाम हैं। पाणि, हस्त और कर (पुं०); ये ३ हाथ के नाम

हैं। बाहुशिरस् और अंस (नं०); ये २ कन्धे के नाम हैं। हस्त के नामों के अन्त में 'शाखा' शब्द जोड़ देने से अँगुलियों के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- हस्तशाखा और करशाखा (स्त्री०) आदि तथा कराङ्गुलि (स्त्री०), यह भी अँगुली का नाम हैं।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

नाममाला उत्तरार्ध

ओष्ठ और गले के नाम

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठो, वर्णितो दशनच्छदः।
शिरोधरो गलो ग्रीवा, कण्ठश्च धमनी धमः ॥१०१॥

अर्थ - [७५]दन्तवासस्, अधर, ओष्ठ, [७६]दशनच्छद (पुं०); ये ४ ओष्ठ अर्थात् ओंठ के नाम हैं। शिरोधर, गल (पुं०), ग्रीवा (स्त्री०), कण्ठ (पुं०), धमनी (स्त्री०), धम (पुं०); ये ६ गले के नाम हैं।

नासिका, छाती, कूख, पेट और स्तन के नाम

नासा घ्राण-मुरो-वक्षः, कुक्षिः स्याज्जठरोदरम्।
स्तनः पयोधरः कुचौ, वक्षोज इति वर्णितः ॥१०२॥

अर्थ - नासा (स्त्री०), घ्राण (न०); ये २ नासिका अर्थात् नाक के नाम हैं। उरस्, वक्षस् (न०); ये २ छाती के नाम हैं। कुक्षि (पुं०); यह कूख अर्थात् गर्भस्थली का नाम है।

जठर, उदर (न०, पुं०); ये २ पेट के नाम हैं। स्तन, पयोधर, कुच, वक्षोज (पुं०); ये ४ स्तन के नाम वर्णित किए गए हैं।

कमर, नितम्ब, घुटने और पैर के नाम

कटिः श्रोणि-र्नितम्बश्च, जघनं जानु जह्नु च।
चलनं चरणं पादं, क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदं विदुः ॥१०३॥

अर्थ - कटि, श्रोणि और [७७]श्रेणी (स्त्री०); ये ३ कमर के नाम हैं। नितम्ब (पुं०); यह कमर के पिछले भाग का नाम हैं। जघन (न०); यह स्त्री की कमर के अगले भाग का नाम हैं।

जानु और जह्नु (न०); ये २ जाँघ या घुटने के नाम हैं। चलन (न०), चरण, पाद (पुं०, न०), क्रम, अङ्घ्रि (पुं०), पद (न०); ये ६ पग अर्थात् पैर के नाम जानना चाहिए।

विशेषः- पैर के नामों के अन्त में 'शाखा' शब्द जोड़ देने से पैर की

---

७५. 'ओष्ठाधर तु रदन-च्छदौ दशनवाससी' इत्यमरः। इत्यमरप्रमाणेन सकरान्तोऽयं शब्दं।

७६. 'रदनच्छदः' इति पाठान्तरम्।

७७. 'कटिः श्रोणिः ककद्मती: इति तथा स्त्रीकटयाः जघनं पुरः' इत्यमरः।

अँगुलियों के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- चरणशाखा आदि।

शिर, प्रेरित वस्तु और वाणी के नाम

शिरो मूर्धोत्तमाङ्गं कं, प्रारभ्यं प्रेरितेरितम् ।
वाग्वचो वचनं वाणी, भारती गीः सरस्वती ॥१०४॥

अर्थ - शिरस् (न०), मूर्द्धन् (पुं०) उत्तमाङ्ग, क (न०); ये ४ शिर के नाम हैं। प्रारभ्य, प्रेरित, ईरित (त्रि०); ये ३ प्रेरित वस्तु के नाम हैं, **जैसे**- प्रेरित पुरुष, प्रेरिता स्त्री और प्रेरित वचन आदि। वाच् (स्त्री०), वचस्, वचन (न०), वाणी, भारती, गिर्, सरस्वती (स्त्री०); ये ७ वाणी के नाम हैं।

सिंह, हाथी, मेघ, घोड़ा, गाय के बच्चे की आवाज के नाम

सिंह द्विप घने गर्जो, हेषाऽश्वे बृन्हितं गजे ।
स्फीत्कृतं धेनुकलभे, स्तनितं जलदे तथा ॥१०५॥

अर्थ - सिंह, हाथी और मेघ की आवाज को गर्ज (पुं०) कहते हैं। घोड़े के हींसने को हेषा (स्त्री०) कहते हैं। हाथी की बोली को बृन्हित (न०) कहते हैं। गाय के बच्चे की बोली को स्फीत्कृत (न०) कहते हैं। मेघ की गर्जना को स्तनित (न०) भी कहते हैं।

रथ, मन्त्र, योध्दा, शूकर, मैथुन आदि की आवाजों के नाम

स्यन्दने चीत्कृतं मन्त्रे, भटे घृष्टौ च हुङ्कृतं ।
सीत्कृतं मणितं कामे, खन्कृतं श्रृङ्खलायुधे ॥१०६॥

अर्थ - रथ के शब्द को चीत्कृत (न०) कहते हैं। मन्त्र और योद्धा अर्थात् मल्ल और सुअर की आवाज को हुङ्कृत (न०) कहते हैं। मैथुन के शब्द को सीत्कृत और मणित (न०) कहते हैं तथा श्रृङ्खला अर्थात् शाङ्कल और आयुध अर्थात् हथियार के शब्द को खन्कृत (न०) कहते हैं।

विछुओं के नाम तथा वायु, क्रौंच, हंस की आवाज के नाम

मञ्जीरकं तुलाकोटि-नूंपुरं तत्र संसृतम् ।
झाङ्कृतं चाथ मारुति, क्रेङ्कृतं क्रौञ्च हंसयोः ॥१०७॥

अर्थ - मञ्जीरक (न०), तुलाकोटि (पुं०), नूपुर (न०); ये ३ विछुओं के

नाम हैं। विछुआ अर्थात् स्त्री का वह जेवर जो पैरों की अँगुलियों में पहिना जाता है, उसके शब्द को 'संसृत' (न०) कहते हैं। वायु के शब्द को झाङ्कृत (न०) कहते हैं। क्रौंच पक्षी तथा हंस की बोली को क्रेङ्कृत (न०) कहते हैं।

जानी हुई वस्तु और मृत प्राणी के नाम

प्रतीतं संस्तुतं लब्धं, दृष्टं परिचितं स्मृतम् ।
संस्थितं दशमीस्थं च, परासुं च मृतं विदुः ॥१०८॥

अर्थ - प्रतीत, संस्तुत, लब्ध, इष्ट, परिचित, स्मृत (त्रि०); ये ६ स्मृत अर्थात् जानी हुई वस्तु के नाम हैं। संस्थित, दशमीस्थ, परासु, मृत (त्रि०); ये ४ मरे हुए प्राणी के नाम जानना चाहिए।

क्रोध और हर्ष के नाम

खेदो द्वेषोऽप्यमर्षश्च, रुट् कोप-क्रोध-मन्यवः ।
हर्षः प्रमोदः प्रमदो, मुत्तोषानन्द उत्सवः ॥१०९॥

अर्थ - खेद, द्वेष, अमर्ष (पुं०), [७८]रुष् (स्त्री०), कोप, क्रोध, मन्यु (पुं०); ये ७ क्रोध के नाम हैं। हर्ष, प्रमोद, प्रमद (पुं०), मुत् (स्त्री०), तोष, आनन्द, उत्सव (पुं०); ये ७ हर्ष के नाम हैं।

दया और बुद्धि के नाम

कृपाऽनुकम्पाऽनुक्रोशो-ऽहन्तोक्तिः करुणा दया ।
शेमुषी धिषणा प्रज्ञा, मनीषा धीस्तथाऽऽशयः ॥११०॥

अर्थ - कृपा, अनुकम्पा (स्त्री०), अनुक्रोश (पुं०), हन्तोक्ति, करुणा, दया (स्त्री०); ये ६ दया के नाम हैं।

शेमुषी, धिषणा, प्रज्ञा, मनीषा, धी (स्त्री०), [७९]आशय (पुं०); ये ६ बुद्धि के नाम हैं।

पण्डित के नाम

प्राज्ञ मेधाविनौ विद्वा-नभिरूपो विचक्षणः ।
पण्डितः सूरि-राचार्यो, वाग्मी नैयायिकः स्मृतः ॥१११॥

अर्थ - प्राज्ञ, मेधाविन्, विद्वस्, अभिरूप, विचक्षण, पण्डित, सूरि,

७८. 'प्रतिधो रुट्क्रुधौ स्त्रियौ' इत्यमरः ।
७९. 'मतिः इति पाठान्तरम्।

आचार्य, वाग्मिन्, नैयायिक (पुं०); ये १० पण्डित अर्थात् बुद्धिमान् या विद्वान् के नाम माने गए हैं।

सभासद, सभा, राजा और राजयज्ञ के नाम

पारिषद्यो बुधः सभ्यः, सदस्यः सत्सभोचितः ।
परिषत्सभा-ऽऽस्थान-पती, राजसूयो नृपक्रतुः ।।११२।।

अर्थ - पारिषद्य, बुध, सभ्य, सदस्य, सदुचित, सभोचित (पुं०); ये ६ सभासद के नाम हैं। परिषत्, सभा (स्त्री०); आस्थान (नं०); ये ३ सभा के नाम हैं। सभा के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- परिषत्पति, सभापति (पुं०) आदि। राजसूय, नृपसूय (पुं०); ये २ राजयज्ञ के नाम हैं।

आसन, संसार और जिनेन्द्र के नाम

विष्टरं मल्लिकां पीठ-मासन्दी-मासनं विदुः।
विष्टपं भुवनं लोको, जगत्तस्य पति-र्जिनः ।।११३।।

अर्थ - विष्टर (पुं०), मल्लिका (स्त्री०), पीठ (न०), आसन्दी (स्त्री०), आसन (न०); ये ५ आसन के नाम जानना चाहिए। विष्टप, भुवन (न०), लोक (पुं०), जगत् (न०); ये ४ संसार के नाम हैं। तस्य पतिः अर्थात् संसार के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से जिनेन्द्र भगवान् के नाम बन जाते हैं, **जैसे** - विष्टपपति (पुं०) आदि।

सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, केवली धर्मचक्र-भृत् ।
तीर्थङ्कर-स्तीर्थकर-स्तीर्थकृद्दिव्य-वाक्पति ।।११४।।

अर्थ - जिन, सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हत्, केवलिन् धर्मचक्रभृत, तीर्थङ्कर, तीर्थकर, तीर्थकृत, दिव्यवाक्यपति (पुं०); ये १० जिनेन्द्र भगवान् के नाम हैं।

आदिनाथ के नाम

वर्षीयान्वृषभो ज्यायान्, पुरुराद्यः प्रजापतिः ।
ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा, गौतमो नाभिजोऽग्रजः ।।११५।।

अर्थ - वर्षीयस्, वृषभ, ज्यायस्, पुरु, आद्य, प्रजापति, ऐक्ष्वाकु,

काश्यप, ब्रह्मन्, गौतम, नाभिज और अग्रज (पुं०); ये १२ आदिनाथ; इस अवसर्पिणी के प्रथम जैन तीर्थङ्कर के नाम हैं।

महावीर स्वामी के नाम

सन्मति-र्महति-र्वीरो, महावीरोऽन्त्यकाश्यपः।
नाथान्वयो वर्द्धमानो, यत्तीर्थ-मिह साम्प्रतम् ॥११६॥

अर्थ - सन्मति, महति, वीर, महावीर, अन्त्यकाश्यप, नाथान्वय और वर्धमान (पुं०); ये ७ चौबीसवें जैन तीर्थंकर महावीर या वर्द्धमान स्वामी के नाम हैं। साम्प्रतम् इह यत् तीर्थम् अर्थात् इस समय इस भरतक्षेत्र में इन्हीं का बताया धर्म चल रहा है।

वस्त्र और दिगम्बर मुनि के नाम

चेलं निवसनं वास-श्चीर-मम्बर-मंशुकम् ।
वस्त्राद्यन्तो दिगाद्यादिः, संज्ञितो वृषभेश्वरः ॥११७॥

अर्थ - चेल, चैल, निवसन, वासस्, चीर, अम्बर और अंशुक (न०); ये ७ वस्त्र के नाम हैं। दिगाद्यादिः अर्थात् दिशा के नामों के अन्त में वस्त्राद्यन्तो अर्थात् 'चेल' आदि वस्त्र के नामों को जोड़ देने से वृषभेश्वर (पुं०) अर्थात् दिगम्बर मुनि के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- दिगम्बर आदि।

केशर, कस्तूरी और कपूर के नाम

कुङ्कुमं रुधिरं रक्तं, कस्तूरी मृग-नाभिजम्।
कर्पूरं घनसारं च, हिमं सेवेत पुण्यवान् ॥११८॥

अर्थ - कुङ्कुम, रुधिर, रक्त (नं०); ये ३ केशर के नाम हैं। कस्तूरी, मृगनाभिजा (स्त्री०); ये २ कस्तूरी के नाम हैं। कर्पूर (पुं०, न०), घनसार, हिम (पुं०); ये ३ कपूर के नाम हैं। इन सब वस्तुओं का भोग पुण्यात्मा करते हैं।

लेपन, गहने और पुष्प माला के नाम

समा-लम्भोऽङ्ग-रागश्च, प्रसाधन विलेपनम् ।
भूषणा-भरणं रुच्यं, माल्यं माला गुण-स्त्रजौ ॥११९॥

अर्थ - समालम्भ, अङ्गराग (पुं०), प्रसाधन, विलेपन (न०); ये ४ लेपन

(लेप) के नाम हैं। भूषण, आभरण, रुच्य (न०); ये ३ गहने अर्थात् जेवर के नाम हैं।

माल्य (न०), माला (स्त्री०), गुण (न०), स्रज् (स्त्री०); ये ४ पुष्पमाला के नाम हैं।

करधौनी (कटडोरा) के नाम

मेखला रशना काञ्ची, हेमपर्याय-सूत्रकम् ।
श्रोणिबिम्बं कटीसूत्रं, मानसूत्र-मिवाहितम् ॥१२०॥

अर्थ - मेखला, रशना, रसना, काञ्ची, काञ्चि (स्त्री०), कटीसूत्र (न०); ये ६ करधौनी के नाम हैं तथा हेमपर्याय अर्थात् सुवर्ण के नामों के अन्त में 'सूत्र' शब्द जोड़ देने से भी 'करधौनी' के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- सुवर्णसूत्र और हेमसूत्र (न०) आदि।

मानसूत्रम् इव-आहितम् अर्थात् वह करधौनी या श्रोणि कमर में ऐसी शोभती है, मानों कमर के नापने का सूत्र अर्थात् कपड़े का गज या फुट ही हो ।

मदिरा (शराब) के नाम

मदिरां मद्य-मैरयं, शीधुं कादम्बरी-मिराम् ।
प्रसन्नां वारुणीं हालां, मधुवारां सुरां विदुः ॥१२१॥

अर्थ - मदिरा (स्त्री०), मद्य, मैरेय (न०), शीधु (पुं०, न०), कादम्बरी, इरा, प्रसन्ना, वारुणी, हाला, मधुवारा, सुरा (स्त्री०); ये ११ मदिरा अर्थात् शराब के नाम जानना चाहिए।

मदिरा, मद्यपी और जुआरी के नाम

शुण्डाऽऽसवस्तद्विधायी, शौण्डो गद्येत मद्यपः ।
सक्तोऽक्ष-द्यूत-पानेषु, विचित्रा शब्दपद्धतिः ॥१२२॥

अर्थ - शुण्डा (स्त्री०); यह एक प्रकार के आसव (पुं०) अर्थात् मदिरा का नाम है। तद्विधायी अर्थात् मदिरा बनाने वाले और पीने वाले को शौण्ड (पुं०) कहा जाता हैं तथा जो पाँसों से खेलने में, जुवा खेलने में और मद्य पीने में आसक्त होता है, उसे मद्यप (पुं०) कहते हैं।

यद्यपि मद्य पीने वाले को ही मद्यप कहना चाहिए, किन्तु जुआरी को नहीं, परन्तु 'शब्दानामनेकार्था' इन नियम के अनुसार शब्दों के प्रयोग की परिपाटी विचित्र ही है, इसलिए जुआरी को भी मद्यप कहते हैं।

घृत, दूध और छाँछ के नाम

सर्पि-र्हैयङ्गवीनाज्यं, दुग्धं क्षीराममृतं पयः ।
उदश्विन्मथितं तक्रं, कालशेयं पिवेद्-गुरुः ॥१२३॥

अर्थ - सर्पिष्, हैयङ्गवीन, आज्य (न०); ये ३ घृत अर्थात् घी के नाम हैं। दुग्ध, क्षीर, अमृत, पयस् (न०); ये ४ दूध के नाम हैं। उदश्वित्, मथित, तक्र, कालशेय (न०); ये ४ छाँछ के नाम हैं, इनका सेवन धनवान् करते हैं।

अवस्था, जवान, जवानी और वृद्ध (बुड्ढ़े) के नाम

प्रायो वयो दशानेहा, पूर्णं यौवनकं विदुः ।
तारुण्यं यौवनं चान्त्यो, वार्द्धीनः स्थविरो मतः ॥१२४॥

अर्थ - प्रायस्, वयस् (न०); दशा (स्त्री०); अनेहस् (पुं०); ये ४ अवस्था के नाम जानना चाहिए। इनके अन्त में 'पूर्ण' शब्द जोड़ देने से यौवन (पुं०) अर्थात् युवा पुरुष के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- प्रायःपूर्ण, वयापूर्ण और दशापूर्ण (पुं०) इत्यादि। तारुण्य और यौवन (पुं०); ये २ जवानी के नाम हैं तथा अन्त्य, वार्द्धीन और स्थविर (पुं०); ये ३ वृद्ध (बुड्ढे) व्यक्ति के नाम माने गए हैं।

कुल (वंश या गोत्र) के नाम

वंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्या-दाम्नायः सन्ततिः कुलम् ।
ओघो वर्गश्च सन्तानः, काव्य-मेव कवैः स्थितिः ॥१२५॥

अर्थ - वंश, अन्वय, अन्ववाय, आम्नाय (पुं०), सन्तति (स्त्री०), कुल (न०), ओघ, वर्ग, सन्तान (पुं०); ये ९ कुल के नाम हैं। कवि लोगों का कुल; काव्य ही है।

हंस, ब्रह्मा, मोर, हंसिनी और भेड़िया के नाम

हंसो मरालश्चक्राङ्गो, हंसवाहः सनातनः ।
मयूरो बर्हिणः केकी, शिखी प्रावृषिकस्तथा ॥१२६॥

नीलकण्ठः कलापी च, शिखण्डी तत्पति-र्गुहः।
वरटा वारली हंसी, कोक ईहामृगो वृकः ॥१२७॥

अर्थ- हंस, मराल और चक्राङ्ग (पुं०); ये ३ हंस के नाम है। हंस के नामों के अन्त में 'वाह' शब्द जोड़ देने से सनातन अर्थात् ब्रह्मा के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- हंसवाह (पुं०) आदि।

मयूर, बर्हिण, केकिन्, शिखिन्, प्रावृषिक, नीलकण्ठ, कलापिन् और शिखण्डिन् (पुं०); ये ८ मयूर के नाम हैं।

तत्पतिः अर्थात् मयूर के नामों के अन्त में 'पति वाचक' शब्द जोड़ देने से गुह अर्थात् 'कार्तिकेय' के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- मयूरपति (पुं०) आदि। वरटा, वारली, हंसी (स्त्री०); ये ३ हंसिनी के नाम हैं। कोक, ईहामृग, वृक (पुं०); ये ३ भेड़िये के नाम हैं।

हरिण, चन्द्रमा, गरुड़ और सर्प के नाम

हरिणो मृगः पृषत-स्तदङ्कः शर्वरीकरः ।
पन्नगोऽहि-र्विषधरो, लेलिहानो भुजङ्गमः ॥१२८॥
नागोरगौ फणी सर्प-स्तद्वैरी विनतात्मजः ।
सुपर्णो गारुड़स्तार्क्ष्यो, गरुत्मान् शकुनीश्वरः॥१२९॥
इन्द्रजिन्मन्त्र-पूतात्मा, वैनतेयो विषक्षयः ।

अर्थ - हरिण, मृग, पृषत (पुं०); ये ३ हरिण के नाम। तदङ्क अर्थात् हरिण के नामों के अन्त में 'अङ्क' शब्द और शर्वरीकर अर्थात् रात्रि के नामों के अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- हरिणाङ्क और श्यामाकर (पुं०) आदि।

पन्नग, अहि, विषधर, लेलिहान, भुजङ्गम, नाग, उरग, फणिन्, सर्प (पुं०); ये ९ सर्प के नाम हैं। तद्वैरी अर्थात् सर्प के नामों के अन्त में 'वैरिन्' वाचक शब्द जोड़ देने से विनतात्मज (पुं०) अर्थात् गरुड़ के नाम बन जाते हैं। **जैसे**- पन्नगवैरिन् (पुं०) आदि । सुपर्ण, गरुड़, तार्क्ष्य, गरुत्मत्, शकुनीश्वर, इन्द्रजित्, मन्त्रपूतात्मन्, वैनतेय, विषक्षय (पुं०); ये ९ भी गरुड़ के नाम हैं।

इन्द्रिय के नाम

खमिन्द्रियं हृषीकं च, श्रोतोऽक्षं करणं विदुः ॥१३०॥

अर्थ - ख, इन्द्रिय, हृषीक, श्रोतस्, अक्ष, करण (न०); ये ६ इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण) के नाम जानना चाहिए ।

पुण्य-पाप और जिनेन्द्र के नाम

पुण्यं भाग्यं च सुकृतं, भागधेयं च सत्कृतम् ।
अघ-मंहश्च दुरितं, पाप्मा पापं च किल्विषम् ॥१३१॥
वृजिनं कलिल-मेनो, दुष्कृतं तज्जयी जिनः ।

अर्थ - पुण्य, भाग्य, सुकृत, भागधेय और सत्कृत (न०); ये ५ पुण्य के नाम हैं। अघ, अंहस्, दुरित (न०) [८०] पाप्मन् (पुं०), पाप, किल्विष, वृजिन, कलिल, एनस् और दुष्कृत (न०); ये १० पाप के नाम हैं। तज्जयी अर्थात् इस पुण्य और पाप के जीतने वाले को जिन कहते हैं।

मकान के नाम

सदनं सद्म भवनं, धिष्ण्यं वेश्माथ मन्दिरम् ॥१३२॥
गेहं निकेतनागारं, निशान्तं निवृतं गृहम् ।
वसत्यवसथावासं, स्थानं धामास्पदं पदम् ॥१३३॥
निकायं निलयं पस्त्यं, शरणं विदुरालयम् ।

अर्थ - सदन, सद्मन्, भवन, धिष्ण्य, वेश्मन्, मन्दिर, गेह, निकेतन, आगार, निशान्त, निवृत (न०), [८१]गृह (न०, पुं०), वसति, अवसथ, आवास (पुं०), स्थान्, धामन्, आस्पद, पद (न०), निकाय, निलय (पुं०), पस्त्य, शरण, आलय (न०); ये २४ मकान के नाम जानना चाहिए।

खाई और बँधान के नाम

खेयं खातं च परिखा, वप्रं स्याद्-धूलिकुट्टिमम् ॥१३४॥

अर्थ - खेय, खात (न०), परिखा (स्त्री०); ये ३ खाई के नाम हैं। वप्र,

---

८०. अस्त्री पंकः पुमान्पाप्मा, पापं किल्विषकल्मषम्' इत्यमरः। अत एव पाप्मन्शब्दः पुल्लिंगः।

८१. गृहशब्दस्य रूपाणि नपुँसके वचनत्रयेऽपि दानशब्दवत् चलन्ति, किन्तु 'गृहाः पुँसि च भूम्नेव' इत्यमरवाक्यमनुकृत्य गृहशब्दस्य पुँलि-प्रयोगो बहुवचने एव जायते। यथा- 'गृहानिव नृपानिति' धर्मशर्माभ्युदये ३ सर्गे, १० दशम श्लोके।

धूलिकुट्टिम् (न०); ये २ खाई के ऊपर रहने वाले मिट्टी के कूट अर्थात् बँधान के नाम हैं।

कोट, गोपुर, गली, महल, खूँटी और टण्डों के नाम

प्राकारः परिधिः सालः, प्रतोली गोपुराकृतिः।
प्रासाद सौध-हर्म्याणि, निर्व्यूहो मत्तवारणम् ॥१३५॥

अर्थ - प्राकार (पुं०), परिधि (स्त्री०), साल (पुं०); ये ३ कोट या वाड़ के नाम हैं। गोपुर नगर के दरवाजे का आकार जिसमें से लोग आते-जाते हैं, उसको प्रतोली कहते हैं। प्रतोली; गली का भी नाम है। प्रासाद (पुं०), सौध (पुं०, न०), हर्म्य (न०); ये ३ बड़े महल के या क्रमशः देवालय, राजभवन और धनिगृह के नाम हैं। निर्व्यूह (पुं०); खूँटी का नाम हैं। मत्तवारण (न०); छज्जे के नीचे के टण्डे या छपरी का नाम है।

झरोखे, बराबर और उपमा के नाम

वातायनं *मनालम्ब-मालम्ब्यं सुखासनम् ।
समः सवर्णः सजातिः, सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥१३६॥
तुल्यः सधर्मः सरूप-स्तुला कक्षोप-माभिधा।

अर्थ - वातायन, अनालम्ब, आलम्ब्य, सुखासन (न०); ये ४ झरोखे के नाम हैं। सम, सवर्ण, सजाति, सदृक्ष, सदृश, सदृक् तुल्य, सधर्म, सरूप (त्रि०); ये ९ समान अर्थात् बराबर के नाम हैं। तुला, कक्षा (स्त्री०); ये २ उपमा के नाम हैं।

उपमा-उपमान के नाम

विन्मन्यो विद्यमानश्च, गुरुस्थानोऽम्बुजाननाः ॥१३७॥
सिंहादीनि च पर्याय-मुपमानेषु योजयेत् ।

अर्थ - विन्मन्य, विद्यमान, गुरुस्थान, अम्बुजानन तथा सिंह (पुं०) इत्यादि शब्द [८२]उपमान के द्योतक हैं अर्थात् ये शब्द उपमानों में जोड़ना चाहिए।

---

८२. जिस वस्तु से उपमा दी जाती है, वह वस्तु उपमान कहलाती है। जिस वस्तु को उपमा दी जाती है, वह वस्तु उपमेय कहलाती है, **जैसे**- मुख; चन्द्रमा के समान है। यहाँ चन्द्रमा उपमान है और मुख उपमेय है। * मतालम्ब।

छल और उत्प्रेक्षा के नाम

व्यपदेशो निभं व्याजः, पदं व्यक्तिकरं छलम् ।।१३८।।
छद्म वृत्तान्त-मुत्प्रेक्षा, शब्द-मन्यं च निर्णयेत् ।

अर्थ - व्यपदेश, निभ, व्याज (पुं०, न०), पद (न०), व्यक्तिकर (पुं०, न०), छल, छद्म (न०); ये ७ छल के नाम हैं। वृत्तान्त (न०), उत्प्रेक्षा (स्त्री०); ये २ वार्ता के नाम हैं। इसी तरह और भी शब्दों के विषय में निर्णय करना चाहिए।

समूह (समुदाय) के नाम

व्रातः पूगः समाजश्च, समूहः सन्तति-र्व्रजः ।।१३९।।
व्यूहो निकायो निकरो, निकुरम्बं कदम्बकम् ।
ओघः समुदयः सङ्घः, सङ्घातः समितिस्ततिः ।।१४०।।
निचयः प्रकरः पङ्क्तिः, पशूनां समजो व्रजः ।

अर्थ - व्रात, पूग, समाज, समूह, सन्तति, व्रज, व्यूह, निकाय, निकर (पुं०), निकुरम्ब, कदम्बक (न०), ओघ, समुदय, सङ्घ, सङ्घात (पुं०), समिति, तति (स्त्री०), निचय, प्रकर (प्र०), पङ्क्ति (स्त्री०); ये २० समूह के नाम हैं। समज (पुं०); यह पशुओं के समुदाय का नाम है।

समीप (पास) के नाम

समीपाभ्यास-मासन्न-मभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ।।१४१।।
अविदूरं च निकट-मवलग्न-मनन्तरम् ।

अर्थ - समीप, [८३] अभ्याश, आसन्न, अभ्यर्ण, (न०) सन्निधि, (स्त्री०), अविदूर, निकट, अवलग्न, अनन्तर (न०); ये ९ पास के नाम जानना चाहिए।

हल और बलभद्र के नाम

जित्या हलि-र्हलं सीरं, लाङ्गलं तत्करो बलः ।।१४२।।
रेवती-दयितो नील-वसनः केशवाग्रजः ।

अर्थ - जित्या, हलि (स्त्री०), हल, सीर, लाङ्गल (न०); ये ५ हल के

८३. 'सन्देशाभ्याशसविध-' इत्यमरः। विशेषनिघ्नवर्ग श्लोक सं० ६७ में यह अभ्याश शब्द इसी प्रकार शकारयुक्त आया है।

नाम हैं। तत्करः अर्थात् हल के नामों के अन्त में हस्त वाचक 'कर' आदि शब्द जोड़ देने से बलभद्र के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- जित्याकर और सीरपाणि (पुं०) आदि। बल, रेवतीदयित, नीलवसन और केशवाग्रज (पुं०); ये ४ भी बलभद्र के नाम हैं। **नोट**:- नील शब्द के अन्त में 'वस्त्र' के नामों को जोड़ने से भी नीलवसन आदि बलभद्र के नाम बनते हैं।

अर्जुन और भीम के नाम

अर्जुनः फल्गुनो जिष्णुः, श्वेतवाजी कपिध्वजः ॥१४३॥
गाण्डीवी कार्मुकी सव्य-साची मध्यम-पाण्डवः।
वृषसेनः सुनिर्मोको, दैत्यारिः शक्रनन्दनः ॥१४४॥
कर्णशूली किरीटी च, शब्दभेदी धनञ्जयः।
कुरु-कीचकयोः शत्रु-र्वायुपुत्रो वृकोदरः ॥१४५॥

अर्थ - अर्जुन, फल्गुन, जिष्णु, श्वेतवाजिन्, कपिध्वज, गाण्डीविन्, कार्मुकिन्, सव्यसाचिन्, मध्यमपाण्डव, वृषसेन, सुनिर्मोक, दैत्यारि, शक्रनन्दन, कर्णशूलिन्, किरीटिन्, शब्दभेदन्, धनञ्जय (पुं०); ये १७ अर्जुन के नाम है।

कुरुशत्रु, कीचकशत्रु, वायुपुत्र, वृकोदर (पुं०); ये ४ भीम (द्वितीय-पाण्डव) के नाम हैं।

काल (मौत) के नाम

समवर्ती यमः कालः, कृतान्तो मृत्यु-रन्तकः।
धर्मराजः पितृपतिः, सूरसूनुः परेतराट् ॥१४६॥
यमुनो यमुनाभ्राता, श्राद्धदेवश्च दण्डभृत्।

अर्थ - समवर्तिन्, यम, काल, कृतान्त, मृत्यु, अन्तक, धर्मराज, पितृपति, सूरसूनु, परेतराज्, [८४]यमुन, यमुनाभ्रातृ, श्राद्धदेव, दण्डभृत् (पुं०); ये १४ काल अर्थात् मौत के नाम हैं।

युधिष्ठिर (प्रथम पाण्डव) के नाम

तदात्मजोऽजातरिपुः, कौन्तेयो भरतान्वयः ॥१४७॥
कौरव्यो राजलक्ष्मा च, सोमवंश्यो युधिष्ठिरः।

८४.यमनं बन्धनं चौपरतौ, क्लीवं तु यमे पुमान्; इति मेदिनी, शमनः इति पाठान्तरमप्यर्हति। नाशकः इति तदर्थः।

अर्थ - यमात्मज, [८५]अजातरिपु, कौन्तेय, भरतान्वय, कौरव्य, [८६]राज लक्ष्मन्, सोमवंश्य, युधिष्ठिर (पुं०); ये ८ युधिष्ठिर अर्थात् प्रथम पाण्डव के नाम हैं।

काले रंग के नाम

कृष्णं नीलासितं कालं, धूमं धूम्रमलिप्रभम् ॥१४८॥

अर्थ - कृष्ण, नील, असित, काल (त्रि०); ये ४ काले रंग के नाम हैं। धूम, धूम्र, अलिप्रभ (त्रि०); ये ३ विशेष काले रङ्ग के नाम हैं।

अन्धकार और लाल रंग के नाम

तमोऽन्धकारं तिमिरं, ध्वान्तं सन्तमसं तमम् ।
लोहितं रक्त-माताम्रं, पाटलं विशदारुणम् ॥१४९॥

अर्थ - अन्धकार, तिमिर, ध्वान्त, सन्तमस्, तमस्, तम (न०); ये ६ अन्धकार के नाम हैं। लोहित, रक्त, आताम्र (त्रि०); ये ३ लाल रंग के नाम हैं। श्वेत-मिश्रित लाल रंग को पाटल (त्रि०) कहते हैं।

सफेद रंग के नाम

श्वेतोऽर्जुनः शुचिः श्येतो, वलक्षं सित पाण्डुरम्।
शुक्लावदातं धवलं, पाण्डुं शुभ्रं शशिप्रभम् ॥१५०॥

अर्थ - [८७]श्वेत, अर्जुन, शुचि, श्येत, वलक्ष, सित, पाण्डुर, शुक्ल, अवदात, धवल, पाण्डु, शुभ्र, शशिप्रभ (त्रि०); ये १३ सफेद रंग के नाम है।

पीले, नीले, हरे, रक्तवर्ण वा पञ्चवर्ण के नाम

पीतं गौरं हरिद्राभं, पालाशं हरितं हरित् ।
हरिणी लोहिनी शोणी, गौरी श्येनी पिशङ्ग्यपि ॥१५१॥
सारङ्गी शबली काली, कल्माषी *नीलपिङ्गलीः ।

अर्थ - पीत, गौर, हरिद्राभ (त्रि०); ये ३ पीले वर्ण के नाम हैं।

---

८५. काल के नामों के अन्त में पुत्र वाचक शब्द जोड़ देने से भी युधिष्ठिर के नाम बन जाते हैं, धर्मात्मज, जातरिपु ।

८६. राजलक्ष्मी इति पाठान्तरम्। *नीलपिञ्जरी; भाष्य प्रतौ ।

८७. 'गुणाः शुक्लादयः पुँसि, गुणिलिङ्गास्तु तद्वति,' इत्यमरः। गुण (रंग) वाचक श्वेत आदि शब्द तो पुँलिङ्ग ही है, किन्तु गुण सहित वस्तु के अर्थ में; ये शब्द गुणवान् के लिङ्ग युक्त हो जाते हैं।

पालाश, हरित, हरित् (त्रि०); ये ३ हरे वर्ण के नाम हैं। हरिणी, लोहिनी, शोणी, गौरी, श्येनी, पिशङ्गी (स्त्री०); ये ६ रक्त वर्ण के नाम हैं। सारङ्गी, शबली, काली, कल्माषी, नीलपिङ्गली (स्त्री०); ये ५ पञ्च वर्ण के नाम हैं।

पराग और धूलि के नाम

परागं मधु किञ्जल्कं, मकरन्दं च कौसुमम् ॥१५२॥
उपचाराद्रजः पांशुं, रेणुं धूलिं च योजयेत् ।

अर्थ - [८८] पराग, मधु (न०), किञ्जल्क, मकरन्द (पुं०), कौसुम (न०); ये ५ पराग के नाम हैं। रजस् (न०), पांशु, रेणु (पुं०), धूलि, धूली (स्त्री०); ये ५ धूलि के नाम हैं। लोकाचार से पुष्प के नामों के अन्त में इन धूलि के नामों को जोड़ देने से भी पराग के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- पुष्परजस् (न०) और प्रसूनरेणु (पुं०) इत्यादि।

कलङ्क के नाम

कलङ्कावद्य मलिनं, किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम् ॥१५३॥
निर्बोध-मधमं पङ्क, मलीमस-मपि त्यजेत् ।

अर्थ - कलङ्क (पुं०), अवद्य, मलिन (न०) किञ्जल्क (पुं०), लक्ष्मन्, लाञ्छन (न०), निर्बोध, अधम, पङ्क, मलीमस (पुं०, न०); ये १० कलङ्क के नाम हैं, इसे छोड़ देना चाहिए।

कीर्ति (यश) और साहस के नाम

जनोदाहरणं कीर्तिं, साधुवादं यशो विदुः ॥१५४॥
वर्णं गुणावलिं ख्याति-मवधानं तु साहसम्।

अर्थ - जनोदाहरण (न०), कीर्ति (स्त्री०), साधुवाद (पुं०), यशस्, वर्ण (न०), गुणावलि, ख्याति (स्त्री०); ये ७ कीर्ति के नाम जानना चाहिए। अवधान, साहस (न०); ये २ साहस के नाम हैं।

आज्ञा, बात और कठोर के नाम

प्रेष्यादेशनिदेशाऽऽज्ञा-नियोगाः शासनं तथा ॥१५५॥
सन्देशः प्रिययो-र्वार्ता, प्रवृत्तिः किंवदन्त्यपि ।
कठोरं कठिनं स्तब्धं, कर्कशं परुषं दृढम् ॥१५६॥

---

८८. अमरस्तु-'परागः सुमनोरजः'। 'किञ्जल्कः केशरोऽस्त्रियाम्'। 'मकरन्दः पुष्परसः इत्यादि।

अर्थ - प्रेष्य, आदेश, निदेश (पुं०), आज्ञा (स्त्री०), नियोग (पुं०), शासन (न०); ये ६ आज्ञा के नाम हैं। प्रिय व्यक्ति के मौखिक समाचार को सन्देश (पुं०) कहते हैं। वार्ता, प्रवृत्ति, किम्वदन्ती (स्त्री०); ये ३ नवीन बात के नाम हैं। कठोर, कठिन, स्तब्ध, कर्कश, परुष, दृढ़ (त्रि०); ये ६ कठोर के नाम हैं।

व्यर्थ, कोमल और नवीन के नाम

अश्लीलं काहलं फल्गु, कोमलं मृदु पेशलम्।
प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं, नवं नूतन-मग्रिमम् ॥१५७॥

अर्थ - अश्लील, काहल, फल्गु (न०); ये ३ व्यर्थ के नाम हैं। कोमल, मृदु, पेशल (त्रि०); ये ३ कोमल के नाम हैं। प्रत्यग्र, साम्प्रत, नव्य, नव, नूतन, अग्रिम (त्रि०); ये ६ नवीन अर्थात् नई वस्तु के नाम हैं ।

पुराने, आमन्त्रण और संशय के नाम

पुराणं जरठं जीर्णं, प्राक्तनं सुचिरन्तनम् ।
भो रे हंहो हे चामन्त्रे, किञ्चत्किञ्चन संशये ॥१५८॥

अर्थ - पुराण, जरठ, जीर्ण, प्राक्तन, सुचिरन्तन (त्रि०); ये ५ पुराने के नाम हैं। भो, रे, अरे, हंहो, हे (अ०); ये ५ आमन्त्रण अर्थात् सम्बोधन वाचक हैं। किञ्चित्, किञ्चन (अ०); ये २ संशय के नाम हैं।

तत्काल, निषेध और ऊँचे के नाम

द्राक्क्षणेऽह्नाय सपदि, निषेधे मा न खल्वलम् ।
उच्चै-रुच्चावचं तुङ्ग-मुच्चा-मुन्नत-मुच्छ्रितम् ॥१५९॥

अर्थ - द्राक्क्षणे, अह्नाय, सपदि (अ०); ये ३ तत्काल के नाम हैं। मा, न, खलु, [८९]अलम् (अ०); ये ४ निषेध करने में आते हैं। उच्चैः (अ०) उच्चावच, तुङ्ग, उच्चा, उन्नत, उच्छ्रित (त्रि०); ये ६ ऊँचे के नाम हैं।

नीचे और साथ के नाम

नीचं न्यगानतं कुब्जं, नीचै-र्ह्रस्वं नयेत्परम् ।
अमा सह समं साकं, सार्द्धं सत्रा सजूः समाः ॥१६०॥

---

८९. 'मा स्म मालं च वारणे' इत्यमरः। नामवर्ग श्लोक सं० ११।

अर्थ - नीच, न्यच्, आनत, कुब्ज (त्रि०), नीचैस् (अ०), ह्रस्व (त्रि०); ये ६ नीचे के नाम जानना चाहिए। अमा, सह, सम, साक, सार्द्ध, सत्रा (अ०) सजुष् (स्त्री०), समा (स्त्री०, अ०); ये ७ 'साथ' के नाम हैं।

हमेशा और विरह के नाम

सर्वदा [९०] सततं नित्यं, शश्वदात्यन्तिकं सदा।
वियोगं मदनावस्थां, विरहं [९१] मल्लकं विदुः ॥१६१॥

अर्थ - सर्वदा, सततवम्, नित्यम्, शश्वत्, आत्यन्तिकम्, सदा (अ०); ये ६ हमेशा के नाम हैं। वियोग (पुं०), मदनावस्था (स्त्री०), विरह, मल्लक (पुं०); ये ४ काम के विरह के नाम जानना चाहिए।

राग और सहित के नाम

प्रेमाभिलाष-मालभ्यं, रागं स्नेह-मतः परम्।
संहितं सहितं युक्तं, सम्पृक्तं सम्भृतं युतम् ॥१६२॥
संस्कृतं समवेतं च, प्राहु-रन्वीत-मन्वितम्।

अर्थ - प्रेमन्, अभिलाष (पुं०), आलभ्य (न०), राग, स्नेह (पुं०); ये ५ राग के नाम हैं। सहित, संहित, युक्त, सम्पृक्त, सम्भृत, युत, संस्कृत, समवेत, अन्वीत, अन्वित (त्रि०); ये १० सहित अर्थात् युक्त के नाम कहे गए हैं।

मार्ग, गंगा और गायों के घेरा के नाम

वर्त्माध्वा सरणिः पन्थाः, मार्गः प्रचर सञ्चरौ ॥१६३॥
त्रि-मार्गनाम-गा गङ्गा, घोषो गोमण्डलं व्रजः।

अर्थ - वर्त्मन् (न०), अध्वन् (पुं०), सरणि, शरणि (स्त्री०), पथिन्, मार्ग, प्रचर, सञ्चर (पुं०); ये ८ मार्ग के नाम हैं। मार्ग के नामों के आदि में 'त्रि' शब्द और अन्त में 'गा' शब्द जोड़ देने से गङ्गा के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- त्रिमार्गगा और त्रिपथगा (स्त्री०) इत्यादि। घोष (पुं०), गोमण्डल (न०), व्रज (पुं०); ये ३ गायों के घेरे के नाम हैं।

---

९०. 'समो वा हित तयोस्तु काममनसोरपि' इति कारिकया विकल्पेन मकारलोपः।
९१. पल्लकः इति पाठान्तरं; भाष्य प्रतौ।

धान, सींग वाले पशु और बछड़े के नाम

षाष्ठिकः कलमः शालिः, ब्रीहीः स्तम्बकरिस्तथा ॥१६४॥
शृङ्गी दृतिहरि-र्नाथ, हरिस्तिर्यक् च शृङ्गिणः ।
वत्सः शकृत्करि-र्जातः, षोडन् षड्दशनः स्मृतः ॥१६५॥
गौश्चतुष्पात् पशुस्तत्र, महिषी नाम देहिका ।

अर्थ - षाष्ठिक, कलम, शालि, सालि, ब्रीहि, स्तम्बकरि (पुं०); ये ६ धान के नाम हैं। शृङ्गिन्, दृतिहरि, नाथहरि, तिर्यच् (पुं०); ये ४ सींग वाले पशु के नाम हैं।

वत्स, शकृत्करि, जात (पुं०); ये ३ बछड़े के नाम हैं। षोड़, षड्दशन (पुं०); ये २ छह दाँत वाले बछड़े के नाम हैं। गो, चतुष्पात्, पशु, तिर्यञ्च (पुं०) ; ये ४ पशु के नाम हैं। महिषी और देहिका (स्त्री०); ये २ भैंस के नाम हैं।

चतुर और धूर्त के नाम

कृति नदीष्णो निष्णातः, कुशलो निपुणः पटुः ॥१६६॥
क्षुण्णः प्रवीणः प्रगल्भः, कोविदश्च विशारदः ।
विदग्धश्चतुरो धूर्तश्-चाटुकृत्कितवः शठः ॥१६७॥

अर्थ - कृतिन्, नदीष्ण, निष्णात, कुशल, निपुण, पटु, क्षुण्ण, प्रवीण, प्रगल्भ, कोविद, विशारद, विदग्ध, चतुर (त्रि०); ये १३ चतुर या कुशल के नाम हैं। धूर्त, चाटुकृत्, कितव, शठ (पुं०); ये ४ धूर्त के नाम हैं।

धूर्त, नाम और मूर्ख के नाम

क्वापि नागरिको ज्ञयो, गोत्रं संज्ञाङ्क नाम तत् ।
मुग्धो मूढ़ो जड़ो नेड़ो, मूको मूर्खश्च कद्वदः ॥१६८॥
स देवानां-प्रियोऽप्राज्ञो, मन्दो-धीनाम वर्जितः ।

अर्थ - कहीं-कहीं पर नागरिक (पुं०) को भी धूर्त कहते हैं। गोत्र (न०), संज्ञा (स्त्री०), अङ्क, नाम (न०); ये ४ नाम के नाम है। मुग्ध, मूढ़, जड़, नेड़, मूक, मूर्ख, कद्वद, देवानांप्रिय, अप्राज्ञ, मन्द (पुं०); ये १० मूर्ख के नाम हैं। बुद्धि के नामों के अन्त में वर्जित अर्थात् रहित वाचक शब्द

जोड़ देने से भी मूर्ख के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- धीवर्जित, बुद्धिविहीन (पुं०) आदि ।

घमण्डी और नीच के नाम

शौण्डीरो गर्वितः स्तब्धो, मानी चाहंयु-रुद्धतः ॥१६९॥
उद्ग्रीव उद्धरो दृप्तो, नीचश्च पिशुनोऽधमः ।

अर्थ - शौण्डीर, गर्वित, स्तब्ध मानिन्, अहंयु, उद्धत, उद्ग्रीव, उद्धर, दृप्त (त्रि०); ये ९ अहंकारी अर्थात् घमण्डी के नाम हैं। नीच, पिशुन, अधम (त्रि०); ये ३ नीच के नाम हैं।

चोर के नाम

चौरैकागारिक स्तेनास्, तस्करः प्रतिरोधकः ॥१७०॥
निशाचरो [९२] गूढचरो, हेरिकः [९३]प्रणिधिश्च सः ।

अर्थ - चोर, एकागारिक, स्तेन, तस्कर, प्रतिरोधक, निशाचर, गूढ़चर, हेरिक, प्रणिधि (पुं०); ये ९ चोर के नाम हैं।

पत्थर, लोहा और सुवर्ण के नाम

प्रस्तरोपल-पाषाण-दृषद्धातुः शिला घनः ॥१७१॥
तत्र जात-मयो लोहं, शातकुम्भं नयेत्परम् ।

अर्थ - प्रस्तर, उपल, पाषाण (पुं०), दृषत् (स्त्री०), धातु (पुं०), शिला अथवा शिली (स्त्री०), घन (पुं०); ये ७ पत्थर के नाम हैं। पत्थर के नामों के अन्त में 'जाति वाचक' शब्द जोड़ने से लोहे के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- उपलजात (पुं०) आदि। अयस् (न०), लोह (पुं०, न०); ये भी लोहे के नाम हैं। उपल आदि पत्थर के नामों के अन्त में 'जाति वाचक' शब्द जोड़ देने से स्वर्ण और शिलाजीत के नाम बन जाते हैं, **जैसे**-उपलजात आदि।

बहुत, स्पष्ट और आश्चर्य के नाम

साधीयोऽत्यर्थ-मत्यन्तं, नितान्तं सुष्ठु वै भृशम् ॥१७२॥
स्फुटं साधु खलु स्पष्टं, विशदं पुष्कलामलम् ।
चित्रश्चर्याद्भुतं चोद्यं, विस्मयः कौतुकोऽप्यहो ॥१७३॥

---

९२. गूढनरो; भाष्य प्रतौ।

९३. पारिपान्थिकः; पाठान्तर ।

अर्थ - साधीयस् (न०), अत्यर्थम्, अत्यन्तम्, नितान्तम्, सुष्ठु, भृशम् (अ०); ये ६ बहुत के नाम हैं। स्फुट, साधु, (न०), खलु (अ०), स्पष्ट, विशद, पुष्कल, अमल (न०); ये ७ स्पष्ट के नाम हैं। चित्रम्, आश्चर्यम्, अद्भुतम्, चोद्यम् (न०), विस्मय (पुं०), कौतुक, कुतुक (पुं०, न०), अहो (अ०); ये ८ आश्चर्य के नाम हैं।

उत्साह, दुर्बल, धैर्य, पुराने और एकान्त के नाम

अभियोगोद्य-मोद्योगा, उत्साहो विक्रमो मतः।
क्षामं क्षान्तं कृशं क्षीणं, हीनं जीर्णं वैरिणाम् ॥१७४॥
शीर्णावसानं दूनं च, धैर्यं शौर्यं च पौरुषम्।
रहोऽनुरहसोपांशु, रहस्यं च भिनत्ति कः ॥१७५॥

अर्थ - अभियोग, उद्यम, उद्योग, उत्साह, विक्रम (पुं०); ये ५ उत्साह के नाम माने गए हैं। क्षाम, क्षान्त, कृश, क्षीण, हीन, जीर्ण, पुरातन, शीर्ण, अवसान, दून (त्रि०); ये १० दुर्बल और पुराने के नाम हैं।

धैर्य, शौर्य, पौरुष (न०); ये ३ धैर्य अर्थात् धीरज के नाम हैं। रहस् (अ०, न०), अनुरहस् (न०), उपांशु (अ०), रहस्य (त्रि०); ये ४ एकान्त या गुप्त बात के नाम हैं। रहस्यं कः भिनत्ति अर्थात् किसी की गुप्त बात का प्रकट करना ठीक नहीं है।

कंजूस के नाम

कीनाशः कृपणो लुब्धो, [९४] गृध्नु-र्दीनोऽभिलाषुकः।

अर्थ - कीनाश, कृपण, लुब्ध, गृध्नु, दीन, अभिलाषुक (पुं०); ये ६ कंजूस के नाम हैं।

शीघ्र के नाम

क्षिप्राशु मङ्क्ष्वरं शीघ्रं, सहसा झटिति द्रुतम् ॥१७६॥
तूर्णं जवः स्यदो रंहो, रयो वेगस्तरो लघु।

अर्थ - क्षिप्र (न०), आशु, मङ्क्षु, अर, शीघ्र (न०), सहसा, झटिति (अ०), द्रतु, तूर्ण (न०), जव, स्यद (पुं०), रंहस् (न०), रय, वेग (पुं०),

९४. 'अगृध्नु-र्धनमाददे' इति रघुवंशे प्रथम सर्गे। स्त्रीलिंगबोधक टाप् प्रत्यय जोड़ देने से; ये शब्द स्त्रीलिंग भी हो सकते हैं।

तरस्, लघु (न०); ये १६ शीघ्र के नाम हैं।

पाशबद्ध शत्रु के नाम

पाशनीतः सितो बद्धः, सन्धानीतो नियन्त्रितः ॥१७७॥
नियमितः शृङ्खलितः, पिनद्धः पाशितो रिपुः ।

अर्थ - पाशनीत, सित, बद्ध, सन्धानीत, नियन्त्रित, नियमित, शृङ्खलित, पिनद्ध, पाशित (पुं०); ये ९ पाशबद्ध शत्रु के नाम हैं।

सुन्दर के नाम

कान्तं कमनं कम्रं च, कमनीयं [९५]मनोहरम् ॥१७८॥
अभिरामं रमणीयं, रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् ।
चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं, प्रशस्तं हृद्य-बन्धुरम् ॥१७९॥
दर्शनीयं मनोज्ञं च, चित्तपर्याय-हारि च ।

अर्थ - कान्त, कमन, कम्र, कमनीय, मनोहर, अभिराम, रमणीय, रम्य, सौम्य, सुन्दर, चारु, श्लक्ष्ण, रुचिर, प्रशस्त, हृद्य, बन्धुर, दर्शनीय, मनोज्ञ (त्रि०); ये १८ सुन्दर के नाम हैं।

चित्त पर्याय हारि अर्थात् चित्त अर्थात् मन के नामों के अन्त में 'हारिन्' शब्द जोड़ देने से 'सुन्दर' के नाम हो जाते हैं, **जैसे**- चित्तहारिन् (त्रि०) आदि।

वर्फ और चन्द्रमा के नाम

अवश्यायं तुषारं च, प्रालेयं तुहिनं हिमम् ॥१८०॥
नीहारं तत्करं विद्धि, मृगाङ्कं रोहिणीपतिम् ।

अर्थ - अवश्याय, तुषार (पुं०), प्रालेय, तुहिन, हिम (न०), नीहार (पुं०); ये ६ वर्फ के नाम हैं। तत्करं अर्थात् वर्फ के नामों के अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से रोहिणीपति अर्थात् चन्द्रमा के नाम बनते हैं, **जैसे**- अवश्यायकर (पुं०) आदि। मृगाङ्क, रोहिणीपति (पुं०); ये २ भी चन्द्रमा के नाम हैं।

---

९५. 'मनोरमम्' यह भी पाठान्तर हो सकता है।

गुप्तचर, इन्द्र और सत्य के नाम

चारोऽपसर्पः प्रणिधि-र्निगूढ़पुरुषश्चरः ॥१८१॥
तद्वानुक्तः सहस्त्राक्षः, सत्यार्थे ऋतसूनृते ।

अर्थ - चार, [९६]अपसर्प, प्रणिधि, निगूढ़पुरुष, चर (पुं०); ये ५ गुप्तचर के नाम हैं। गुप्तचर के नामों के अन्त में 'मतुप्' प्रत्यय जोड़ देने से सहस्त्राक्ष (पुं०) आदि इन्द्र के नाम बन जाते हैं, **जैसे**- चारवत् (पुं०) आदि। ऋत, सूनृत (नं०); ये २ सत्य के नाम हैं।

बहुत, बहुतकाल, प्रातःकाल, अचानक, जबर्दस्ती के नाम

अत्यन्ताय चिरायेति, प्राह्लेऽकस्माद् बलादिति ॥१८२॥
प्रायेणेति कृते चेति, विभक्ति प्रतिरूपकम् ।

रम्भा, कदली और मोचा आदि शब्दों के अर्थ

रम्भास्त्री कदली चिह्नं, मोचा सारतरुश्च सा ॥१८३॥

अर्थ - अत्यन्ताय (अ०); यह बहुत का नाम है। चिराय (अ०); यह बहुतकाल का नाम है। प्राह्ले (अ०); यह प्रातःकाल का नाम है। अकस्मात् (अ०); यह अचानक का नाम है। बलाद् (अ०); यह जबर्दस्ती का नाम है।

प्रायेण - यह बहुधा अर्थात् प्रायः का नाम है। कृते; यह 'के लिए' का नाम है। ये सातों विभक्ति प्रतिरूपक अर्थात् विभक्ति के समान मालूम होने वाले [९७]अव्यय हैं।

रम्भा (स्त्री०) - स्त्री और कदली अर्थात् केले के वृक्ष का नाम है।

कदली (स्त्री०)-यह चिह्न अर्थात् ध्वजा और मोचा अर्थात् सेमर और केले के वृक्ष का नाम है। **चिह्न** - यह ध्वजा का नाम है तथा **मोचा** (स्त्री०)-यह सारतरु अर्थात् सेमर के वृक्ष और कदली अर्थात् केले के वृक्ष का नाम है।

[९८]**भावार्थ** - रम्भा, कदली और मोचा; ये ३ केले के वृक्ष के नाम हैं। **रम्भा** - यह स्त्री, वेश्या और देवाङ्गना का भी नाम है । **कदली** - यह ध्वजा और सेमर के वृक्ष का भी नाम है। **चिह्न** - यह ध्वजा का नाम है।

---

९६. अवसर्पः इति पाठान्तरम् ।

९७. सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ।

९८. यह इस श्लोक के पाँचवें, छठवें चरण का भावार्थ है।

मोचा - यह सेमर के वृक्ष का भी नाम है। **सारतरु** - यह भी सेमर के वृक्ष का नाम है।

बजने वाले बांस, गायन के शब्द आदि के नाम

कीचको ध्वनि-मद्वेणुस्-तालो-गेयक्रमोद्भवः ।
पुष्करं मुरजं पद्मं, हस्ति-हस्ताग्र-नामकम् ॥१८४॥

अर्थ - बजने वाले बांस को कीचक (पुं०) कहते हैं। गाने की आवाज के क्रम अर्थात् चढ़ा-उतार से जो शब्द निकलता है, उसे ताल (पुं०) कहते हैं। पुष्कर (न०); मृदङ्ग, कमल और हाथी की सूँड़ के अग्रभाग का नाम है।

गोल, ऊँच-नीच, लम्बे और मोटे के नाम

निस्तलं वर्तुलं वृत्तं, स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
दीर्घं प्रांशुं विशालं च, बहुलं पृथुलं पृथुः ॥१८५॥

अर्थ - निस्तल, वर्तुल, वृत्त (त्रि०); ये ३ गोल के नाम हैं। 'ऊँचे-नीचे'; विषम-स्थल को स्थफुट (त्रि०) कहते हैं। दीर्घ, प्रांशु, विशाल (त्रि०); ये ३ लम्बे या बड़े के नाम हैं। बहुल, पृथुल, पृथु (त्रि०); ये ३ मोटे, अधिक या बहुत के नाम हैं।

घोर और देर के नाम

उल्वणं दारुणं तिग्मं, घोरं तीव्रोग्र-मुत्कटम् ।
शीतलं तिमिरं याथं, मन्दं विद्धि विलम्बितम् ॥१८६॥

अर्थ - उल्वण, दारुण, तिग्म, घोर, तीव्र, उग्र, उत्कट (त्रि०); ये ७ घोर के नाम हैं। शीतल, तिमिर, याथं, मन्द, विलम्बित (न०); ये ५ देर के नाम जानों।

मित्रता के नाम

सौहार्दं सौहृदं हार्दं, सौहृद्यं सख्य-सौरभम् ।
मैत्री मैत्रेयिकाजर्यं, सहाय्यं सङ्गतं मतम् ॥१८७॥

अर्थ - सौहार्द, सौहृद, हार्द, सौहृद्य, सख्य, सौरभ (न०) मैत्री (स्त्री०), मैत्रेयिक, अजर्य, सहाय्य, सङ्गत (न०); ये ११ मित्रता के नाम माने गए हैं।

स्वभाव, अभ्यास और बारम्बार के नाम

स्वभावः प्रकृतिः शीलं, निसर्गो विस्रसा निजः ।
योग्या गुणनिकाऽभ्यासः, स्या-दभीक्ष्णं मुहुर्मुहुः ॥१८८॥

अर्थ - स्वभाव (पुं०), प्रकृति (स्त्री०), शील (न०), निसर्ग (पुं०), विस्रसा (अ०), निज (पुं०); ये ६ स्वभाव के नाम हैं। योग्या, गुणनिका (स्त्री०), अभ्यास (पुं०); ये ३ अभ्यास के नाम हैं। अभीक्ष्णम्, मुहुर्मुहुः (अ०); ये २ बारम्बार अर्थात् पुनः-पुनः के नाम है।

व्यर्थ और दुःख के नाम

मृषा-लीकं मुधा मोघं, विफलं वितथं वृथा।
विधुरं व्यसनं कष्टं, कृच्छ्रं गहन-मुद्धरेत् ॥१८९॥

अर्थ - मृषा (अ०), अलीक (न०), मुधा (अ०), मोघ, विफल, वितथ, (न०), वृथा (अ०); ये ७ व्यर्थ के नाम हैं। विधुर, व्यसन, कष्ट, कृच्छ्र और गहन (न०); ये ५ कष्ट के नाम हैं। गहनं उद्धरेत् अर्थात् अपना और अन्य का दुःख दूर करना चाहिए।

सम्पूर्ण और टुकड़े के नाम

समस्तं सकलं सर्वं, कृत्स्नं विश्वं तथाऽखिलम् ।
शकलं विकलं खण्डं, शल्कं लेशं लवं विदुः ॥१९०॥

अर्थ - समस्त, सकल, सर्व, कृत्स्न, विश्व, अखिल (त्रि०); ये ६ सम्पूर्ण के नाम हैं। शकल, विकल (न०), खण्ड (पुं०), शक्ल (न०), लेश, लव (पुं०); ये ६ टुकड़े के नाम जानना चाहिए।

लड़ाई, निन्दा, छल और खून के नाम

मर्म-कोषं च कलहं, परिवादं छलं नयेत् ।
शोणितं लोहितं रक्तं, रुधिरं[९९]क्षतजा-सृजम् ॥१९१॥

अर्थ - मर्मकोष, कलह (पुं०); ये २ लड़ाई के नाम है। परिवाद, [१००]परिवाद (पुं०); ये २ नाम निन्दा के हैं। छल (न०); यह कपट का नाम जानना चाहिए । शोणित, लोहित, रक्त, रुधिर, क्षतज, असृज् (न०); ये

---

९९. 'द्वन्द्वाच्चुषाहान्तात्समाहारे' इस सूत्र से यहाँ टच्प्रत्यय हो गया है।

१००. परिवादः निन्दा प्रयोजनं यस्य तत्परिवादम् ।

६ खून अर्थात् लोहु के नाम हैं।

हमेशा, वर और विवाह के नाम

संतता-नारता-जस्रा-न्वहं कन्यापति-र्वरः।
उद्वाहः परिणयनं, विवाहश्च निवेशनम् ॥१९२॥

अर्थ - [१०१] संततम्, अनारतम्, अजस्रम्, अन्वहम् (अ०); ये ४ हमेशा के नाम हैं। वर (पुं०); यह कन्या के पति अर्थात् दामाद का नाम है। उद्वाह (पुं०), परिणयन (न०), परिणय, विवाह (पुं०), निवेशन (न०); ये ५ विवाह के नाम हैं।

छिद्र, गड्ढे और नरक के नाम

शुषिरं विवरं रन्ध्रं, छिद्रं गर्त च गह्वरम्।
श्वभ्रं रस्यं च पातालं, नरकं यान्त्य-मेधसः ॥१९३॥

अर्थ - शुषिर, सुषिर, विवर, रन्ध्र, छिद्र (न०); ये ५ छिद्र के नाम हैं। गर्त, गह्वर (न०); ये २ गड्ढे के नाम हैं। श्वभ्र, रस्य, पाताल, नरक (न०); ये ४ नरक के नाम हैं। अमेधसः नरकं यान्ति अर्थात् अज्ञानी जीव नरक में जाते हैं।

बहुत के नाम

अदभ्रं भूरि भूयिष्ठं, बंहिष्ठं बहुलं बहु।
प्रचुरं नैक-मानन्त्यं, [१०२] प्राज्यं प्राभूतलम् ॥१९४॥

अर्थ - अदभ्र, भूरि, भूयिष्ठ, बंहिष्ठ, बहुल, बहु, प्रचुर, [१०३] नैक, आत्यन्त, प्राज्य, प्राभूत अर्थात् पुष्कल (न०); ये ११ बहुत के नाम हैं।

संसार के नाम

भावो भवश्च संसारः, संसरणं च संसृतिः।
तत्त्वज्ञश्चतुरो धीर-स्त्यजेज्जन्मा-जवञ्जवम् ॥१९५॥

अर्थ - भाव, भव, संसार (पुं०), संसरण (न०), संसृति (स्त्री०),

---

१०१. 'एकवचनमुत्सर्गतः क्रियते' इस न्याय से एकवचन लगाकर सततम् इत्यादि प्रयोग करना चाहिए।

१०२. प्रभूतमिति पाठान्तरम्।

१०३. 'सह सुपा' इति सूत्रेण नैक शब्दे सह समासः।

[१०४]जन्मन्, आजव, जव (न०); ये ८ संसार के नाम हैं। जो तत्त्वज्ञ, चतुर तथा धीर हैं, वे इस संसार को असार या दुःखदायक जान कर शीघ्र ही छोड़ देते हैं।

प्रतापी और शूरवीर के नाम

ओजस्व्यूर्जस्वी तेजस्वी, तरस्वी च मनस्व्यपि।
भास्वरो भासुरः शूरः, प्रवीरः सुभटो मतः ॥१९६॥

अर्थ - ओजस्विन्, ऊर्जस्विन्, तेजस्विन्, तरस्विन्, मनस्विन्, (पुं०); ये ५ प्रतापी पुरुष के नाम हैं। भास्वर, भासुर, शूर, प्रवीर, सुभट (पुं०); ये ५ शूरवीर के नाम माने गए हैं।

स्वीकार और व्याना के नाम

उररीकृत-मप्यूरी-कृत-मङ्गीकृतं तथा ।
अस्तुङ्कारोऽभ्युपगमे, सत्यङ्कारः पणार्पणे ॥१९७॥

अर्थ - उररीकृत, ऊरीकृत, अङ्गीकृत (न०) और अस्तुङ्कार (पुं०); ये ४ स्वीकार के नाम हैं। बाजार में खरीद पक्की करने के लिए जो साई (व्याना) देकर प्रतिज्ञा की जाती है, उसे सत्यङ्कार (पुं०) कहते हैं।

बखतर, अँगरखा और छत्र के नाम

तनुत्रं वर्म कवच-मावृति-र्बाण-वारणम् ।
कूर्पासं कञ्चुकं छत्र-मात-पत्रोष्ण-वारणम् ॥१९८॥

अर्थ - तनुत्र, वर्मन्, कवच (न०), आवृत्ति (स्त्री०), बाणवारण (न०); ये ५ बखतर अर्थात् कवच के नाम हैं। कूर्पास, कञ्चुक (न०); ये २ अँगरखे अर्थात् कुरते के नाम हैं। छत्र, आतपत्र, उष्णवारण (न०); ये ३ छत्र के नाम हैं।

बाल और चोटी के नाम

केशं शिरोरुहं बालं, कचं चिकुर-मीहयेत् ।
चूडापाशं च धम्मिल्लं, कबरी केशबन्धनम् ॥१९९॥

अर्थ - केश, शिरोरुह, बाल, कच, चिकुर (पुं०); ये ५ बालों के नाम

---

१०४. जन्मन्-शब्दस्य संसारार्थः श्रीअमृतचन्द्राचार्येण स्वग्रन्थे पुरुषार्थसिद्ध्युपाये अनेकवारं कृतः।

ईहयेत् अर्थात् मानना चाहिए। चूड़ापाश, धम्मिल्ल (पुं०), कबरी (स्त्री०); केशबन्धन (न०); ये ४ चोटी के नाम हैं।

कल्याण (मङ्गल) के नाम

क्षेमं कल्याण-मुभयं, श्रेयो भद्रं च मङ्गलम् ।
भावुकं भविकं भव्यं, [१०५] श्वोवसीयं शिवं तथा ॥२००॥

अर्थ - क्षेम, कल्याण, अभय, श्रेयस्, भद्र, मङ्गल, भावुक, भविक, भव्य, कुशल, शिव (न०); ये ११ कल्याण के जानना चाहिए।

ग्रन्थकार का स्वकीय लाघव प्रकाशन

वक्ता वाचस्पति-र्यत्र, श्रोता शक्रस्तथापि तौ ।
शब्द [१०६]पारायणस्यान्तं, न गतौ तत्र के वयम् ॥२०१॥

अर्थ - जहाँ वक्ता; बृहस्पति और श्रोता; इन्द्र भी उसका पार नहीं पा सके तब हमारी तो गणना ही क्या है ? अर्थात् **जैसे**-समुद्र अथाह होता है, उसी प्रकार शब्दों का समूह भी अगम है।

तथापि किञ्चित् कस्मैचित्, प्रतिबोधाय सूचितम् ।
बोधयेत् कियद्-उक्तज्ञो, मार्गज्ञः सह याति किम् ॥२०२॥

अर्थ - जैसे-रास्ता बताने वाला मनुष्य; स्वयं पथिक के साथ नहीं जाता, केवल सुगम मार्ग बतला देता है। उसी प्रकार वचन के जानकार चतुरजनों को इशारा मात्र पर्याप्त होता है, इसलिये ऐसे लोगों को समझाने के लिये कतिपय शब्दों के कुछ-कुछ नामों का ही यहाँ निरूपण किया है तो भी वे थोड़े से बहुत जान लेवेंगे ।

शास्त्रीय अपूर्व रत्नत्रय

प्रमाण-मकलङ्कस्य, पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्विःसन्धान-कवेः काव्यं, रत्नत्रय-मपश्चिमम् ॥२०३॥

अर्थ - अकलङ्कस्वामी का प्रमाण अर्थात् न्याय शास्त्र, पूज्यपाद अर्थात् देवनन्दी स्वामी का लक्षण अर्थात् व्याकरण शास्त्र और द्विसन्धान-काव्य के कर्त्ता धनञ्जय कवि का काव्यशास्त्र अर्थात् द्विसन्धान; ये तीनों अपूर्व

---

१०५. कुशलं च; पाठान्तर।

१०६. पारायण-पाठ की पूर्णता, अमरप्रकाश पृष्ठ सं० १८२।

ही रत्न हैं।

ग्रन्थकार का नाम और श्लोकों का प्रमाण

कवे-र्धनञ्जयस्येयं, सत्कवीनां शिरोमणेः ।
प्रमाणं नाम-मालेति, श्लोकानां हि शतद्वयम् ॥२०४॥

अर्थ - यह नाममाला; उद्भट कवियों में शिरोमणि कविवर धनञ्जय की बनाई हुई है, यह सर्वाभिमत बात है और इस ग्रन्थ में नामाभिधायक अर्थात् नामों के बताने वाले श्लोकों की संख्या दो-सौ है।

ब्रह्माणं समुपेत्य वेद-निनद-व्याजात्तुषाराचल-
स्थान-स्थावर-मीश्वरं सुरनदी-व्याजात्तथा केशवम्।
अप्यम्भोनिधि-शायिनं जलनिधि-ध्यानाप-देशादहो,
फूत्कुर्वन्ति धनञ्जयस्य च भिया शब्दाः समुत्पीड़िताः ॥२०५॥

अर्थ - यह आश्चर्य की बात है कि धनञ्जय कवि के भय से पीड़ित होकर शब्द; वेदध्वनि के बहाने से ब्रह्मा के पास। गङ्गा के बहाने से हिमगिरि अर्थात् हिमालय पर रहने वाले महादेव के पास तथा समुद्र के बहाने से विष्णु के पास जाकर अपना अपार दुःख प्रगट करते हैं।

नाममाला समाप्ता

इति महापण्डित श्रीमदमरकीर्तिना त्रैविद्येन
श्रीसेन्द्रवंशोत्पन्नेन शब्दवेधसा कृतायां
धनञ्जय नाममालायां प्रथमं काण्डं व्याख्यातम्।

श्रीमद्धनञ्जय-कवि-विरचिता

अनेकार्थ-नाममाला

जिनेन्द्रं पूज्यपादं च, चैलाचार्यं शिवायनम् ।
अर्हन्तं शिरसा नत्वाऽ-नेकार्थं विवृणोम्यहम् ।।१।।क्षेपक; भाष्य प्रतौ
गम्भीरं रुचिरं चित्रं, विस्तीर्णार्थ [१०७]प्रकाशकम् ।
शाब्दं मनाक् प्रवक्ष्यामि, कवीनां हित-काम्यया ।।२।।

अर्थ - मैं; धनञ्जय कवि, कवीनां हित-काम्यया अर्थात् अन्य कवियों के हित की चाह से एक-एक शब्द के विस्तीर्ण अर्थ-प्रकाशकम् अर्थात् अनेक-अनेक अर्थों को बतलाने वाले; गम्भीर, मनोहर और विचित्र शब्द समूह को प्रवक्ष्यामि अर्थात् कहता हूँ।

अर्हत्पिनाकिनौ शम्भू, जिनावर्हत्तथागतौ ।
वेदसूर्यौ विवस्वन्तौ, विष्णु-रुद्रौ वृषाकपी ।।३।।

अर्थ - 'शम्भु' (पुं०) शब्द; अर्हत् अर्थात् जिनेन्द्र और पिनाकिन् अर्थात् महादेव का वाचक है। 'जिन' (पुं०) शब्द; अर्हत् और तथागत बुद्ध का वाचक है। 'विवस्वत्' (पुं०) शब्द; वेद और सूर्य का वाचक है तथा 'वृषाकपि' (पुं०) शब्द; विष्णु और रुद्र का वाचक है।

वैकुण्ठाविन्द्र गोविन्दौ-अनन्तौ शेष-शार्ङ्गिणौ ।
[१०८]जीमूतौ [१०९]करिकुत्कीलौ, पर्जन्यौ शक्र-वारिदौ ।।४।।

अर्थ - वैकुण्ठ शब्द; इन्द्र और विष्णु का वाचक है। अनन्त शब्द; शेषनाग और विष्णु का वाचक है। जीमूत शब्द; करिकुन् अर्थात् मेघ और कील अर्थात् कीली का अथवा करी अर्थात् हाथी और कुत्कील अर्थात् पर्वत का वाचक है। पर्जन्य शब्द; इन्द्र और वारिद अर्थात् मेघ का वाचक

---

१०७ . प्रसाधकम्; भाष्य प्रतौ ।

१०८. जीमूतौ तु करि क्रीडौ; भाष्य प्रतौ।

१०९. करी = हस्ती, कुत्कील: = पर्वत; यह भी अर्थ है। तदुक्तम् मेदिनीकोशे- 'जीमूतोऽद्रौ धृतकरे, पर्वते च पयोधरे।'' कुत्कील शब्द भी यशस्तिलकचम्पू में पर्वत वाचक आया है।

है, ये सभी शब्द पुल्लिङ्ग हैं।

वन-मम्भसि कान्तारे, भुवनं विष्टपेऽर्णसि ।
घृतं सर्पिषि पानीये, विषं हालाहले जले ।।५।।

अर्थ - वन शब्द; जल और जंगल का वाचक है। भुवन शब्द; संसार और जल का वाचक है। घृत शब्द; घी और जल का वाचक है। विष शब्द; हालाहल और जल का वाचक है; ये सभी शब्द (न०) हैं।

तल्पं दारेषु शय्यायां, ज्योतिश्चक्षुषि तारके ।
धवले सुन्दरे रामो, वामो वक्रे मनोहरे ।।६।।

अर्थ - तल्प (न०) शब्द; स्त्री और शय्या का वाचक है। ज्योतिष् (न०) शब्द; नेत्र और आँख की पुतली का वाचक है। राम (पुं०) शब्द; उज्ज्वल और सुन्दर का वाचक है। वाम (पुं०) शब्द; टेढ़े और मनोहर का वाचक है ।

नक्षत्रे मन्दिरे धिष्ण्यं, वसने गगनेऽम्बरम् ।
परिधौ पादपे सालः, सिन्धुः स्त्रोतसि योषिति ।।७।।

अर्थ - धिष्ण्य (न०) शब्द; नक्षत्र और मकान का वाचक है। अम्बर शब्द; वसन अर्थात् वस्त्र और आकाश का वाचक है। साल (पुं०, न०) शब्द; काठ और वृक्ष का वाचक है। सिन्धु शब्द; स्त्रोतस् अर्थात् नदी और स्त्री का वाचक है।

सारसः शकुनौ धूर्ते, केतनं दीधितौ ध्वजे ।
मयूखः कीलके दीप्तौ, पतङ्गः शलभे रवौ ।।८।।

अर्थ - सारस (पुं०) शब्द; पक्षी और धूर्त का वाचक है। केतन (न०) शब्द; किरण और ध्वजा का वाचक है। मयूख (पुं०) शब्द; कीलक (खूँटी) और दीप्ति अर्थात् किरण का वाचक है। पतङ्ग (पुं०) शब्द; शलभ अर्थात् पतङ्ग और सूर्य का वाचक है।

अञ्जनः कज्जले नागे, सारङ्गः पृषते गजे ।
सरलः प्रगुणे वृक्षे, पुन्नागः सन्नरे तरौ ।।९।।

अर्थ - अञ्जन (पुं०न०) शब्द; कज्जल और हाथी का वाचक है।

सारङ्ग (पुं०) शब्द; पृषत अर्थात् हरिण और हाथी का वाचक है। सरल (पुं०) शब्द; प्रगुण अर्थात् सीधे और वृक्ष का वाचक है। पुन्नाग (पुं०) शब्द; सन्नर अर्थात् सज्जन और वृक्ष का वाचक है।

पाञ्चजन्योऽनले शङ्खे, कम्बुः शङ्खे मतङ्गजे।
कस्वरो द्युभवे द्युम्ने, स्यन्दनं शकटेऽम्बुनि ॥१०॥

अर्थ - पाञ्चजन्य (पुं०, न०) शब्द; अग्नि और शङ्ख का वाचक है। कम्बु (पुं०) शब्द; शंख और हाथी का वाचक है। कस्वर (पुं०) शब्द; द्युभव अर्थात् देव और द्युम्न अर्थात् धन का वाचक है। स्यन्दन (न०) शब्द; गाड़ी अर्थात् रथ और जल का वाचक है।

अद्रि-र्गिरि-वनस्पत्योः, शिखरी तरुभूध्रयोः।
राजा चन्द्र-महीपत्योः, द्विजो दशन विप्रयोः ॥११॥

अर्थ - अद्रि (पुं०) शब्द; पर्वत और वृक्ष का वाचक है। शिखरिन् (पुं०) शब्द; वृक्ष और पहाड़ का वाचक है। राजन् (पुं०) शब्द; चन्द्र और राजा का वाचक है। द्विज (पुं०) शब्द; दशन अर्थात् दाँत और विप्र अर्थात् ब्राह्मण का वाचक है।

मोचा-मरस्त्रियोः रम्भा, कदली ध्वज-मोचयोः।
अशोकः सुमन-स्तर्वोः, सुमनाः सुर-पुष्पयोः ॥१२॥

अर्थ - रम्भा (स्त्री०) शब्द; मोचा अर्थात् केले और अमरस्त्री अर्थात् देवाङ्गना का वाचक है। कदली (स्त्री०) शब्द; ध्वजा और मोचा का वाचक है। अशोक (पुं०) शब्द; सुमनस् अर्थात् पुष्प और अशोक वृक्ष का वाचक है। सुमनास् (पुं०) शब्द; सुर अर्थात् देव और पुष्प का वाचक है।

मुक्ता-रजतयोस्तारः, भूरि भूयः सुवर्णयोः।
पानीय-दुग्धयोः क्षीरं, पयः सलिल-दुग्धयोः ॥१३॥

अर्थ - तार (पुं०) शब्द; मुक्ता अर्थात् मोती और रजत अर्थात् चाँदी का वाचक है। भूरि (न०) शब्द; भूयस् अर्थात् बाहुल्य और सुवर्ण का वाचक है। क्षीर (न०) शब्द; पानी और दुग्ध का वाचक है। पयस् (न०) शब्द; सलिल अर्थात् जल और दुग्ध का वाचक है।

काल-प्रकर्षयोः काष्ठा, कोटिः संख्या प्रकर्षयोः ।
रन्ध्र संश्लेषयोः सन्धिः, सिन्धु-र्नद-समुद्रयोः ॥१४॥

अर्थ - [११०]काष्ठा (स्त्री०) शब्द; काल और प्रकर्ष अर्थात् बड़प्पन का वाचक है। [१११]कोटि (स्त्री०) शब्द; संख्या और प्रकर्ष का वाचक है। सन्धि (पुं०) शब्द; रन्ध्र अर्थात् छिद्र और मिलाप का वाचक है। सिन्धु (स्त्री०) शब्द; नदी और समुद्र का वाचक है।

निषेध-दुःखयो-र्बाधा, व्यामोहो मूर्ख-मौढ्ययोः ।
कौपीना-कारयो-र्गुह्यं, कीलालं रुधिराम्भसोः ॥१५॥

अर्थ - बाधा (स्त्री०) शब्द; निषेध और दुःख का वाचक है। व्यामोह (पुं०) शब्द; मूर्ख और मूर्खता का वाचक है। गुह्य (न०) शब्द; कौपीन अर्थात् लँगोटी और अकार्य अर्थात् पाप का वाचक है। कीलाल (न०) शब्द; रुधिर और जल का वाचक है।

मूल्य-सत्कारयो-रर्घो, जात्यः श्रेष्ठ कुलीनयोः ।
मेघ-वत्सरयो-रब्द-स्तार्क्ष्यो हयगरुन्मतोः ॥१६॥

अर्थ - अर्घ (पुं०) शब्द; मूल्य और सत्कार का वाचक है। जात्य (पुं०) शब्द; श्रेष्ठ और कुलीन का वाचक है। अब्द (पुं०) शब्द; मेघ और वत्सर अर्थात् वर्ष का वाचक है। तार्क्ष्य (पुं०) शब्द; हय अर्थात् घोड़ा और गरुत्मत् अर्थात् गरुड़ का वाचक है।

स्तब्धता-स्थूणयोः स्तम्भ-श्चर्चा चिन्ता-वितर्कयोः ।
हर कीलकयोः स्थाणुः, स्वैरः स्वच्छन्द मन्दयोः ॥१७॥

अर्थ - स्तम्भ (पुं०) शब्द; स्तब्धता अर्थात् धीरज और स्थूण अर्थात् थम्भा का वाचक है। चर्चा (स्त्री०) शब्द; चिन्ता और वितर्क अर्थात् विचार का वाचक है। स्थाणु (पुं०) शब्द; हर अर्थात् महादेव और कीलक अर्थात् कील का वाचक है। स्वैर (पुं०) शब्द; स्वच्छन्द अर्थात् स्वतन्त्र और मन्द अर्थात् धीर या सुस्त का वाचक है।

---

११०. 'अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा; इत्यमरः, १८ निमेष की एक काष्ठा होती है।
१११. कोटि = करोड़।

शङ्कुः संकीर्ण विवरे, पलालग्नौ च कीलके ।
संख्यायां काननोद्भूते, वह्नौ दावो दवोऽपि च ॥१८॥

अर्थ - शंकु (पुं०) शब्द; संकीर्ण विवर अर्थात् छोटा छिद्र का वाचक है। पलालाग्नि शब्द; भूसे की आग, कीलक और संख्या का वाचक है। दाव और दव (पुं०) ये २ शब्द; जंगल में लगी हुई अग्नि अर्थात् दमार के वाचक हैं।

कीनाशः कृपणे भृत्ये, कृतान्ते पिशिताशिनि ।
तथा पुण्यजनान् प्राहुः, सज्जनान् राक्षसानपि ॥१९॥

अर्थ - कृपण अर्थात् कंजूस, भृत्य अर्थात् नौकर, कृतान्त अर्थात् यम, पिशिताशिन् अर्थात् मांसभक्षी, पुण्यजन अर्थात् पुण्यात्मा पुरुष, सज्जन और राक्षस; इन ७ अर्थों में कीनाश (पुं०) शब्द कहा गया है।

विरोचनो रवौ चन्द्रे, दनुसूनौ हुताशने ।
हंसो नारायणे व्रध्ने, यतावश्वे सितच्छदे ॥२०॥

अर्थ - विरोचन (पुं०) शब्द; रवि, चन्द्र, दनुसून अर्थात् प्रद्युम्न और हुताशन अर्थात् अग्नि; इन ४ अर्थों में हैं। नारायण, व्रध्न अर्थात् सूर्य, यति अर्थात् साधु, अश्व अर्थात् घोड़ा और सितच्छद अर्थात् हंसपक्षी; ये ५ नाम हंस (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

सोमश्चन्द्रोऽमृतं सोमः, [112] सोमो राजा युगादिभूः ।
सोमः प्रतानिनीभेदः, सोमपोऽगस्त्य-दिक्पतिः ॥२१॥

अर्थ - सोम (पुं०) शब्द; चन्द्रमा, अमृत, राजा, युगादिभू अर्थात् ब्रह्मा, लता विशेष तथा अगस्त्यदिक्पति अर्थात् वरुण; इन ६ अर्थों में है।

[113]अजो विधि-रजो विष्णु-रजः शम्भु-रजस्तमः ।
अजस्त्रैवार्षिको व्रीहि,-रजो राम-पितामहः ॥२२॥

अर्थ - अज (पुं०) शब्द; विधि अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शम्भु अर्थात्

---

११२. सोमश्चन्द्रेऽमृते सोमः, सोमो राज्ञि युगादिजे ।
सोमः प्रताननीभेदे, सोमः पौलस्त्यदिक्पतौ ॥२०॥

११३. अजो विधावजो विष्णा-वजः शम्भावजस्तमः ।
अजस्त्रैवार्षिके व्रीहा-वजो रामपितामहः ॥२१॥ इति पाठान्तरम्; अमरोऽप्येवमाह ।

महादेव, अन्धकार और तीन वर्ष की पुरानी धान तथा रामचन्द्र के पितामह अर्थात् बाबा (पिता के पिता); इन ६ अर्थों में है।

शुद्धेऽनुपहते, वह्नौ, ब्राह्मणे सचिवोत्तमे ।
आषाढ़ेऽध्यात्म-संवित्तौ, ब्रह्मचर्ये शुचि-र्मतः ॥२३॥

अर्थ - शुचि (पुं०) शब्द; शुद्ध, अनुपहत, वह्नि, ब्राह्मण, उत्तम-मंत्री, आषाढ़-मास, अध्यात्मज्ञान और ब्रह्मचर्य; इन ८ अर्थों में है।

अर्थोऽभिधेय रै वस्तु, प्रयोजन निवृत्तिषु ।
भावः पदार्थ चेष्टात्म, सत्ताभिप्राय-जन्मसु ॥२४॥

अर्थ - अर्थ (पुं०) शब्द; अभिधेय अर्थात् वाच्य, रै अर्थात् धन, वस्तु, प्रयोजन और निवृत्ति; इन ५ अर्थों में है। भाव (पुं०) शब्द; पदार्थ, चेष्टा, आत्मा, सत्ता, अभिप्राय और जन्म; इन ६ अर्थों में है।

प्रायो भूमोपमाऽतर्क्यं, प्रभृत्यन्न निवृत्तिषु ।
अन्तः पदार्थ सामीप्य, धर्म सत्त्व व्यतीतिषु ॥२५॥

अर्थ - प्रायः और प्रायस् (अ०) शब्द; भूमन् अर्थात् बाहुल्य, उपमा अर्थात् तुल्य, अतर्क्य, प्रभृति अर्थात् आदि और अन्ननिवृत्ति अर्थात् अन्न त्याग; इन ५ अर्थों में है। अन्त (पुं०) शब्द; पदार्थ, सामीप्य, धर्म, सत्त्व अर्थात् बल और व्यतीति अर्थात् बीतना; इन ५ अर्थों में है।

अक्षो द्यूते वरुथाङ्गे, नयनादौ विभीतके ।
सारः श्रेण्ठे बले वित्ते , कोशे जलचरे स्थिरे ॥२६॥

अर्थ - अक्ष (पुं०) शब्द; जुआ, वरुथांग अर्थात् रथ के चक्र का अवयव, नेत्र, विभीतक अर्थात् भयानक और आदि पद से गाड़ी का धुरा और व्यवहार; इन ६ अर्थों में है। सार (त्रि०) शब्द; श्रेष्ठ, बल, वित्त अर्थात् धन, केश, जलचर और स्थिर; इन ६ अर्थों में है।

वाचि वारि पशौ भूमौ, दिशि लोम्नि रवौ दिवि ।
विशिखे दीधितौ दृष्टा-वेकादशसु गौ-र्मतः ॥२७॥

अर्थ - गो (पुं०स्त्री०) शब्द; वाच् अर्थात् बोली, वार् अर्थात् पानी, पशु, भूमि, दिशा, लोमन् अर्थात् रोम, पवि अर्थात् वज्र, दिव् अर्थात्

आकाश, विशिख अर्थात् वाण, किरण और दृष्टि; इन ११ अर्थों में है।

चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ, वासवे दर्दुरे हये ।
मृगेन्द्रे वानरे वायौ, दशस्वपि हरिः स्मृतः ॥२८॥

अर्थ - हरि (पुं०) शब्द; चन्द्र, सूर्य, यम, विष्णु, इन्द्र, दर्दुर अर्थात् मेंढक, घोड़ा, सिंह, बन्दर और वायु; इन १० अर्थों में स्मरण किया गया है।

पद्मे करिकर-प्रान्ते, व्योम्नि खड्गफले गदे ।
वाद्यभाण्डमुखे तीर्थे, जले पुष्कर-मष्टसु ॥२९॥

अर्थ - पुष्कर (न०) शब्द; कमल, हाथी की सूँड का अग्रभाग, व्योमन् अर्थात् आकाश, तलवार की मूँठ, गदा, वाद्यभाण्डमुख अर्थात् बाजे का मुख, तीर्थविशेष और जल; इन ८ अर्थों में है।

शृङ्गारादौ कषायादौ, घृतादौ च विषे जले ।
निर्यासे पारदे रागे, वीर्येऽपि रस इष्यते ॥३०॥

अर्थ - रस (पुं०) शब्द; शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त; इन काव्यगत ९ रसों में है। कषाय, तिक्त, कटुक, आम्ल और मिष्ट; पुद्‌गल के ५ गुणों में है। घी, नमक, दूध, दही, तेल और मिठाई; भोजन के ६ स्वादों में है। विष, जल, निर्यास अर्थात् काढ़ा या गोंद, पारद अर्थात् पारा, राग और वीर्य; इन ६ अर्थों में इष्यते अर्थात् माना जाता है।

तीर्थे प्रवचने पात्रे, लब्धाम्नाये विदाम्बरे ।
पुण्यारण्ये जलोत्तारे, महासत्त्वे महामुनौ ॥३१॥

अर्थ - तीर्थ (पुं०, न०) शब्द; प्रवचन अर्थात् शास्त्र, पात्र अर्थात् वर्तन, लब्धाम्नाय अर्थात् धर्मतीर्थ प्रवर्तक, विदाम्बर अर्थात् पण्डित, पुण्यारण्य अर्थात् तीर्थस्थान, जलोत्तार अर्थात् सीढ़ी, महासत्त्व और महामुनि; इन ८ अर्थों में है।

धातुः पञ्चसु लोहेषु, शरीरस्य रसादिषु ।
पृथिव्यादि-चतुष्के च, स्वभावे प्रकृतावपि ॥३२॥

अर्थ - धातु (पुं०) शब्द; पाँच प्रकार के लोह अर्थात् सोना, चाँदी,

ताँवा, पीतल एवं कांस्य अर्थ में है। शरीर के रस अर्थात् रक्त, माँस, मज्जा, हड्डी और वीर्य आदि अर्थ में है। भूतचतुष्टय अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, स्वाभाव अर्थात् प्रकृति; इन ५ अर्थों में है।

प्रधानं शृङ्ग लांगूल, भूषा पुण्ड्र प्रभावना ।
ध्वजा लक्ष्म तुरङ्गेषु, ललामो नवसु स्मृतः ॥३३॥

अर्थ - ललाम (पुं०) शब्द; प्रधान, शृङ्ग अर्थात् सींग, लांगूल अर्थात् पूँछ, भूषा अर्थात् भूषण, पुण्ड्र अर्थात् इक्षु, प्रभावना अर्थात् महिमा, ध्वजा, चिह्न, तुरङ्ग अर्थात् घोड़ा; इन ९ अर्थों में स्मरण किया गया ।

आकृतावक्षरे रूपे, ब्राह्मणादिषु जातिषु ।
माल्यानुलेपने चैव, वर्णः षट्सु निगद्यते ॥३४॥

अर्थ - वर्ण शब्द; (१) आकृति, (२) अक्षर अर्थात् अ, आ आदि, (३) रूप, (४) जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), (५) माल्य अर्थात् माला और (६) अनुलेपन अर्थात् उबटन; इन ६ अर्थों में कहा गया है।

अकारादा-वुदात्तादौ, षड्जादौ निस्वने स्वरः।
संकेताचार सिद्धान्त, कालेषु समयः स्मृतः ॥३५॥

अर्थ - स्वर (पुं०) शब्द; (१) अकारादि अर्थात् अ, आ आदि। (२) उदात्तादि अर्थात् उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। (३) षढ़जादि अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पश्चिम, धैवत, निषाद। (४) निस्वन अर्थात् आवाज; इन ४ अर्थों में है। समय (पुं०) शब्द; सङ्केत, आचार, सिद्धान्त और काल; इन ४ अर्थों में स्मरण किया गया है।

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते, सैन्ये तन्तौ परिच्छदे ।
सत्त्व-मोजसि सत्ताया-मुत्साहे स्थेम्नि जन्तुषु ॥३६॥

अर्थ - तन्त्र (न०) शब्द; (१) प्रधान, (२) सिद्धान्त, (३) सेना, (४) तन्तु अर्थात् धागा, (५) परिच्छेद अर्थात् परिग्रह; इन ५ अर्थों में है। सत्त्व (न०) शब्द; (१) ओजस् अर्थात् तेज, (२) सत्ता अर्थात् अस्तित्व, (३) उत्साह, (४) स्थेमन् अर्थात् स्थिरता, (५) जन्त; इन ५ अर्थों में है।

रूपादौ तन्तुषु ज्याया-मप्रधाने नये गुणः ।
ज्ञान-चारित्र-मोक्षात्म-श्रुतिषु ब्रह्म वाग्वरा ॥३७॥

अर्थ - (१) रूपादि अर्थात् रूप, रस, गन्ध और स्पर्श, (२) तन्तु अर्थात् धागा, (३) ज्या अर्थात् धनुष की डोरी, (४) अप्रधान अर्थात् गौण और (५) नय; इन ५ अर्थों में 'गुण' शब्द का प्रयोग होता है तथा ब्रह्मवाच् (स्त्री०) शब्द; (१) ज्ञान, (२) चारित्र, (३) मोक्ष, (४) आत्मा और (५) श्रुति अर्थात् वेद; इन ५ अर्थों में प्रयोग होता है।

अवकाशे क्षणे वस्त्रे, बहिर्योगे व्यक्तिक्रमे ।
मध्येऽन्तःकरणे रन्ध्रे, विशेषे विरहेऽन्तरम् ॥३८॥

अर्थ - अन्तर (न०) शब्द; (१) अवकाश अर्थात् छुट्टी, (२) क्षण, (३) वस्त्र, (४) बहिर्योग, (५) व्यतिक्रम अर्थात् उल्लंघन, (६) मध्य, (७) अन्तःकरण अर्थात् मन, (८) छिद्र, (९) विशेष और (१०) विरह; इन १० अर्थों में प्रयोग होता है।

हेतौ निदर्शने प्रश्ने, श्रुतौ कर्म समीकृतौ ।
आनन्तर्येऽधिकारार्थे, माङ्गल्ये चाथ इष्यते ॥३९॥

अर्थ - अथ (अ०) शब्द; (१) हेतु, (२) निदर्शन अर्थात् दृष्टान्त, (३) प्रश्न, (४) श्रुति, (५) किसी पुस्तक का प्रारम्भ, (६) आनन्तर्य अर्थात् अव्यवधान, (७) अधिकार और (८) मङ्गल; इन ८ अर्थों में प्रयोग होता है।

हेतावेवं-प्रकारादौ, व्यवच्छेदे विपर्यये ।
प्रादुर्भावे समाप्तौ च, इतिशब्दः प्रकीर्तितः ॥४०॥

अर्थ - इति (अ०) शब्द; (१) हेतु अर्थात् कारण, (२) एवं प्रकार अर्थात् इस प्रकार, (३) व्यवच्छेद अर्थात् व्यवधान, (४) विपर्यय अर्थात् उलटा, (५) प्रादुर्भाव अर्थात् उत्पत्ति और (६) समाप्ति; इन ६ अर्थों में प्रयोग होता है।

धर्मो धनुष्यहिंसादा-वुत्पादादावये नये ।
द्रव्यं क्रियाश्रये वित्ते, जीवादौ दारुवैकृते ॥४१॥

अर्थ - धर्म शब्द; (१) धनुष, (२) अहिंसादि पाँचों व्रत, (३) उत्पादादि

अर्थात् उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, (४) अय अर्थात् भाग्य और (५) नय; इन ५ अर्थों में प्रयोग होता है। द्रव्य (न०) शब्द; (१) क्रियाश्रय अर्थात् जिसमें कोई क्रिया की जाती है, (२) वित्त अर्थात् धन, (३) जीवादि छह द्रव्य और (४) काठ से बनाये हुए मंगल द्रव्य आदि; इन ४ अर्थों में प्रयोग होता है।

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु, संसारिण्यपि पुद्गलः ।
अकर्म-कर्म-नोकर्म, जातिभेदेषु वर्गणा ॥४२॥

अर्थ - पुद्गल (पुं०) शब्द का प्रयोग; मूर्तिक पदार्थों और संसारी प्राणियों में होता है। वर्गणा (स्त्री०) शब्द का प्रयोग; (१) अकर्म अर्थात् कर्म से भिन्न पुद्गलस्कन्ध, (२) कर्म अर्थात् ज्ञानावरणादि आठ कर्म, (३) नोकर्म अर्थात् औदारिकादि तीन शरीर और छह पर्याप्ति तथा (४) जाति भेद; इन ४ अर्थों में होता है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः ।
वैराग्यस्याव-बोधस्य, षण्णां भग इति स्मृतः ॥४३॥

अर्थ - भग (पुं०) शब्द; ऐश्वर्य, सम्पूर्ण, वीर्य, यश, श्री, वैराग्य और अवबोध अर्थात् ज्ञान; इन ७ अर्थों में स्मरण किया गया है।

प्राहुः कैवल्य-मार्हन्त्ये, विविक्ते निर्वृत्तावपि ।
लब्धिः केवलबोधादा-विष्टाप्तौ नियतौ श्रियाम् ॥४४॥

अर्थ - कैवल्य (न०) शब्द; (१) आर्हन्त्य अर्थात् अरिहन्त भगवान् की अन्तरङ्ग लक्ष्मी, (२) विविक्त अर्थात् एकान्त स्थान और (३) निर्वृत्ति अर्थात् मोक्ष; इन ३ अर्थों का वाचक है। लब्धि (स्त्री०) शब्द; (१) केवलज्ञानादि ९ लब्धि, (२) इष्टाप्ति अर्थात् इष्ट वस्तु की प्राप्ति, (३) नियति अर्थात् कर्म और (४) श्री अर्थात् लक्ष्मी या शोभा; इन ४ अर्थों में कहा जाता है।

अनेकान्ते च विद्यादौ, स्यान्निपातः शुभे क्वचित् ।
दर्शनादौ मणौ रत्नं, भव्यः शस्ते प्रसेत्स्यति ॥४५॥

अर्थ - स्यात् (अ०) शब्द; अनेकान्त अर्थात् अनेक धर्मात्मक स्याद्वाद,

विद्या और शुभ; इन ३ अर्थों में प्रयोग होता है। रत्न (न०) शब्द; (१) सम्यग्दर्शनादि अर्थात् रत्नत्रय और (२) मणि; इन २ अर्थों में प्रयोग होता है। भव्य (पुं०) शब्द; (१) शस्त अर्थात् प्रशंसायोग्य वस्तु और (२) प्रसेत्स्यत् सम्यग्दृष्टि या कभी सम्यग्दर्शन पाने की योग्यता रखने वाला; इन २ अर्थों में प्रयोग होता है।

परमात्मा जिने सिद्धे, परमेष्ठ्यर्हदादिषु ।
सिद्धः सिद्ध निषद्याया-मर्हत्सिद्ध-श्रिया-मपि ॥४६॥

अर्थ - परमात्मन् (पुं०) शब्द; जिन अर्थात् अर्हत्परमेष्ठी और सिद्धपरमेष्ठी; इन २ अर्थों में प्रयोग होता है। परमेष्ठी शब्द; अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु में प्रयोग होता है। सिद्ध शब्द; सिद्धशिला में और अरिहन्त तथा सिद्धों की अन्तरङ्ग लक्ष्मी; इन ३ अर्थों में प्रयोग होता है।

अर्हत्सिद्धाविति द्वाव-प्यर्हत्सिद्धाभि-धायिनौ ।
अर्ह-दादी-नपि प्राहुः, शरणोत्तम-मङ्गलान् ॥४७॥

अर्थ - अर्हत् और सिद्ध शब्द; अरिहन्त तथा सिद्ध के वाचक हैं। अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवलिप्रणीत धर्म; ये लोक में ४ शरण, उत्तम और मङ्गल प्राहुः अर्थात् कहे गए हैं।

भट्टाकरको धर्मचन्द्रस्तत्पट्टे धर्मभूषणः ।
तत्र देवेन्द्रकीर्तिः श्रीकुमुच्चन्द्रस्ततः परम् ॥१॥
धर्मचन्द्रस्ततो ज्ञानसागरस्तत्पदेऽभवत् ।
तेन पुस्तक-मेतद्धि दत्तं (लोकहितेच्छया) ॥२॥

॥ इत्यनेकार्थ-नाममाला समाप्ता ॥

अनेकार्थ-निघण्टु

"अनुष्टप् छन्द"

मंगलाचरण

गम्भीरान् रुचिराँञ्चित्रान्, विस्तीर्णार्थ-प्रसाधनान् ।
कष्टशब्दान् प्रवक्ष्यामि, कवीनां हित-काम्यया ॥१॥

अर्थ - मैं; धनञ्जय कवि, कवीनां हित-काम्यया अर्थात् अन्य कवियों के हित की इच्छा से, एक शब्द के अनेक अर्थों को बतलाने वाले; गम्भीर, मनोहर, विचित्र और शोभा से सहित शब्दों को प्रवक्ष्यामि अर्थात् कहता हूँ।

गो शब्द के नाम

वाग्दिग्-भू-रश्मि-वज्रेषु, पश्वक्षि-स्वर्ग-वारिषु ।
नवस्वर्थेषु मेधावी, गो शब्द-मुपलक्षयेत् ॥२॥

अर्थ - वचन, दिशा, भूमि, किरण वज्र, पशु, अक्षि अर्थात् नेत्र, स्वर्ग, पानी (त्रिलि०); इन ९ अर्थों में 'गो' शब्द को विद्वानों ने माना है।

'क' शब्द के नाम

कः प्रजापति-रुद्दिष्टो, को वायु-रभिधीयते ।
कः शब्द स्वर्ग-माख्याति, क इत्यात्मा मतः क्वचित् ॥३॥

अर्थ - ब्रह्मा, वायु, स्वर्ग और आत्मा; ये ४ अर्थ 'क' (पुं०) शब्द के होते हैं।

'कं' और अनिमिष शब्द के नाम

सलिलं क-मिति ज्ञेयं, शिरः क-मिति चोच्यते ।
देवा-ननिमिषा-नाहु-र्मत्स्या-ननिमिषांस्तथा ॥४॥

अर्थ - पानी और शिर; ये २ अर्थ 'कम्' (न०) शब्द के होते हैं। देव और मछली; ये २ अर्थ 'अनिमिष' (पुं०) शब्द के होते हैं।

शिखिन् शब्द के नाम

अग्निश्च वर्हिणश्चैव, वृक्ष कुक्कुट एव च ।
शिखिनोऽभिहिताः शस्त्रः, पृथुकश्च मतः शिखी ॥५॥

अर्थ - अग्नि, मोर, वृक्ष, मुर्गा, बाण, शस्त्र, पृथुक; ये ७ अर्थ 'शिखिन्' शब्द के होते हैं।

हंस शब्द के नाम

हंसो नारायणः प्रोक्तः, क्वचिद्-धंसो दिवाकरः ।
अश्वश्चापि स्मृतो हंसो, हंसश्चापि विहंगमः ॥६॥

अर्थ - नारायण, सूर्य, अश्व और हंस पक्षी; ये ४ अर्थ 'हंस' (पुं०) शब्द के होते हैं।

सारस और राजा शब्द के नाम

सारस-स्सरसि-जेन्दोः, पतत्र्यपि च सारसः ।
राजाऽपि नृपति-र्ज्ञेयो, राजा चोक्तो निशाकरः ॥७॥

अर्थ - कमल, इन्दु (चन्द्रमा) और सारस पक्षी; ये ३ अर्थ 'सारस' शब्द के होते हैं। राजा (प्रजापति) और चन्द्रमा; ये २ अर्थ 'राजा' शब्द के होते हैं।

विभावसु और हिमाराति शब्द के नाम

विभावसु-र्हुताशः स्याच्-छ्वेतच्छत्रं क्वचिद्-भवेत् ।
हिमारातिः स्मृतो वह्निः, हिमारातिश्च भास्करः ॥८॥

अर्थ - हुताशः अर्थात् अग्नि और श्वेतच्छत्र; ये २ अर्थ 'विभावसु' (पुं०) शब्द के होते हैं।

अग्नि और सूर्य; ये २ अर्थ 'हिमाराति' शब्द के होते हैं।

धनञ्जय और वीभत्स शब्द के नाम

धनञ्जयोऽग्नि-र्व्याख्यातः, पार्थश्चापि धनञ्जयः ।
बीभत्सश्च मतः पार्थो, विभत्सो विकृतः स्मृतः ॥९॥

अर्थ - अग्नि और अर्जुन; इन २ अर्थों में धनञ्जय शब्द का प्रयोग किया जाता है।

पार्थः अर्थात् अर्जुन का नामान्तर बीभत्स (पुं०) है। घृणोत्पादक वस्तु

भी बीभत्स कहलाती है।

विरोचन शब्द के नाम

अग्नि-र्विरोचनः प्रोक्तो, भास्करस्तु विरोचनः ।
विरोचनश्च चन्द्रः स्यात्, क्वचित् दैत्यो विरोचनः ॥१०॥

अर्थ - अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा और दैत्य; इन ४ अर्थों में 'विरोचन' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

पाञ्जजन्य और कम्बु शब्द के नाम

पाञ्चजन्यः क्वचिद्-वह्निः, क्वचिच्छंखो निगद्यते ।
कम्बुश्च गदितः शंखः, कम्बु-रिष्टश्च कुञ्जरः ॥११॥

अर्थ - पाञ्चजन्य (पुं०) शब्द; कहीं 'अग्नि' अर्थ में और कहीं 'शंख' अर्थ में प्रयोग होता है। शंख और हाथी; इन २ अर्थों में 'कम्बु' (स्त्री०) शब्द आता है।

भास्कर और पतंग शब्द के नाम

भास्करोऽग्निः समुद्दिष्टः, सहस्रांशु-रपि क्वचित् ।
पतङ्गो दिनकृद्-ज्ञेयः, पतङ्गः शलभः स्मृतः ॥१२॥

अर्थ - अग्नि और सूर्य; इन २ अर्थों में 'भास्कर' (पुं०) का प्रयोग होता हैं। सूर्य, टिड्डा (पङ्खि); इन २ अर्थों में 'पतङ्ग' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

कौशिक और शम्भु शब्द के नाम

कौशिको देवराजः स्या-दुलूकश्चापि कौशिकः ।
शम्भु-र्ब्रह्मा च विष्णुश्च, शम्भुश्चैव महेश्वरः ॥१३॥

अर्थ - देवराज अर्थात् इन्द्र और उल्लु; इन २ अर्थों में 'कौशिक' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर इन ३ अर्थों में 'शम्भु' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

शंकु और जम्बुक शब्द के नाम

वृषकेतु-र्मतः शङ्कुः, शङ्कुः कील इहोच्यते ।

जम्बु को वरुणो ज्ञेयः, शृगालश्चापि जम्बुकः ॥१४॥

अर्थ - वृषकेतु और कील; इन २ अर्थों में 'शङ्कुः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

वरुण और शृगाल; ये २ अर्थ 'जम्बुक' (पुं०) शब्द के होते हैं।

अर्क और गन्थी शब्द के नाम

अर्क इष्टस्तु मघवान्, घर्मांशु-रर्क उच्यते ।

मन्थी राहुश्च चन्द्रश्च, ग्रहो मन्थी निरुच्यते ॥१५॥

अर्थ - मघवान् अर्थात् इन्द्र और घर्मांशु अर्थात् सूर्य; ये २ अर्थ 'अर्क' (पुं०) शब्द के होते हैं।

राहु, चन्द्रमा और ग्रह; इन ३ अर्थों में 'मन्थी' अर्थात् मन्थिन् (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

केतु और तमोनुद शब्द के नाम

केतवो रश्मयो ज्ञेयाः, केतवश्च महाध्वजाः ।

तमोनुदः सहस्त्रांशु-रग्निश्चापि प्रकीर्त्यते ॥१६॥

अर्थ - किरण, महाध्वजा अर्थात् झंडा; इन २ अर्थों में 'केतु' (पुं०) तथा सूर्य और अग्नि; इन २ अर्थों में 'तमोनुदः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

मयूख और सप्तर्षि शब्द के नाम

मयूखाः किरणा ज्ञेया, मयूखाश्चपि कीलकाः ।

सप्तर्षि-रुत्सवः प्रोक्तः, सप्तान्ये ऋषयः क्वचित् ॥१७॥

अर्थ - किरण और कील अर्थात् खूँटी या स्तम्भ; इन २ अर्थों में 'मयूखा' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। सप्तर्षिः (पुं०) उत्सव। सातऋषि अर्थात् (१) श्रीमनु, (२) सुरमनु, (३) श्रीनिचय, (४) सर्वसुन्दर, (५) जयवान्, (६) विनयलालस और (७) जयमित्र; ये सप्तर्षि लोक में प्रसिद्ध हैं।

वस्तु और धिष्ण शब्द के नाम

वसवः शंवरा उक्त, देवाश्च वसवो मताः ।
नक्षत्रं धिष्ण्य-मित्युक्तं, गेहं धिष्ण्यं मतं क्वचित् ।।१८।।

अर्थ - वसु अर्थात् शंवर और देव; ये २ अर्थ 'वसु' (न०) शब्द के हैं। नक्षत्र और घर; ये २ अर्थ 'धिष्ण्यं' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

अम्बर और पयः शब्द के नाम

वासोम्बर-मिति ख्यात-मम्बरं च नभः स्थलम् ।
पयः सलिल-मुद्दिष्टं, पयः क्षीरं मतं क्वचित् ।।१९।।

अर्थ - अम्बर अर्थात् वस्त्र और आकाश; ये २ अर्थ 'अम्बर' (न०) शब्द के हैं।

पयस् अर्थात् पानी और दूध; ये २ अर्थ 'पय' (न०) शब्द के हैं।

शिव शब्द के नाम

शिवं पानीय-मुद्दिष्टं, शिवं श्रेयः शिवं सुखम् ।
शिवं व्योमपतिं प्राहुः, शिवं श्रेष्ठं प्रचक्षते ।।२०।।

अर्थ - पानी, कल्याण, सुख, सूर्य और श्रेष्ठ; ये ५ अर्थ 'शिव' (नं०) शब्द के होते हैं।

क्षर और स्यन्दन शब्द के नाम

क्षरं जलं विजानीयात्, क्वचिन्मेधं विदुः क्षरम् ।
स्यन्दनं चाम्बु निर्दिष्टं, स्यन्दनश्च महारथः ।।२१।।

अर्थ - जल और यज्ञ; इन २ अर्थों में 'क्षर' (नं०) शब्द आता है। अम्बु अर्थात् पानी और स्यन्दन अर्थात् महारथ; ये २ अर्थ 'स्यन्दन' (नं०) शब्द के हैं। (बड़े रथ को स्यन्दन कहते हैं)

कृष्ण और क्षीर शब्द के नाम

कृष्णं तमः समाख्यातं, कृष्णश्चाधो-क्षजस्तथा ।
अमृतं क्षीर-मित्युक्तं, क्वचिच्चेष्टं समुद्रजम् ।।२२।।

अर्थ - कृष्णं (नं०) तमः अर्थात् अन्धकार, कृष्णः (पुं०) अर्थात् अधोक्षज अर्थात् कृष्ण जी; ये २ अर्थ 'कृष्ण' शब्द के होते हैं। अमृत और पानी; ये २ अर्थ 'क्षीर' (न०) शब्द के होते हैं। (अमृत को समुद्र से उत्पन्न

हुआ भी मानते हैं।)

शव और घृत शब्द के नाम

शवं च सलिलं प्रोक्तं, मृत-माहुः शवं तथा ।
तोयं घृत-मिति प्रोक्तं, घृतं सर्पिः क्वचिद्-भवेत् ।।२३।।

अर्थ - सलिल अर्थात् पानी, शवं (न०) अर्थात् मृतक की लाश को भी 'शव' कहते हैं। पानी और घी; इन २ अर्थों में 'घृत' (न०) शब्द का प्रयोग होता है।

विष और कर शब्द के नाम

पानीयं च विषं प्रोक्तं, क्वचिद्-धालाहलं विषम् ।
हस्ति हस्तः करः प्रोक्तः, करो हस्तः प्रचक्ष्यते ।।२४।।

अर्थ - पानी और हालाहल; ये २ अर्थ 'विष' (न०) शब्द के होते हैं। हस्ति, हस्त, कर; ये ३ अर्थ 'हाथी' (पुं०) के हैं और 'हाथ' को भी 'कर' कहते हैं।

कीलाल और भुवन शब्द के नाम

कीलालं रुधिरं प्रोक्तं, नीरं चैव प्रशस्यते ।
भुवनं सलिलं प्रोक्तं, आकाशं भुवनं स्मृतम् ।।२५।।

अर्थ - खून और निर्मल पानी (न०); ये २ अर्थ 'कीलाल' (न०) शब्द के होते हैं। (अमृत के समान देवताओं के पेय को भी कीलाल कहते हैं।); पानी और आकाश; ये २ अर्थ 'भुवन' (न०) शब्द के होते हैं।

कोमल और सदन शब्द के नाम

प्रवालं कोमलं ज्ञेयं, कोमलं स्पष्ट-वाचकम् ।
सदनं च स्मृतं तोयं, सदनं वेश्म उच्यते ।।२६।।

अर्थ - प्रवाल अर्थात् कोपल और स्पष्ट वचन; इन २ अर्थों में 'कोमल' (न०) शब्द का प्रयोग होता है। पानी और घर; इन २ अर्थों में 'सदन' (न०) शब्द का प्रयोग होता है।

सद्म और संवर शब्द के नाम

तोयं सद्मेति गदितं, निलयं सद्म निगद्यते ।
संवरं च जलं प्रोक्तं, संवरः पर्वतो भवेत् ।।२७।।

अर्थ - पानी और घर; ये २ अर्थ 'सद्म' (न०) शब्द के होते हैं। जल और पर्वत; ये २ अर्थ 'संवर' (न०) शब्द के होते हैं।

संवर और इडा शब्द के नाम

संवरश्चाऽसुरः ख्यातो, यो बिभर्ति रसां प्रियाम् ।
स्वर वाक् क्ष्मास्विडां प्राहु-रिडा चाम्बर देवताम् ।।२८।।

अर्थ - संवर (पुं०); एक असुर का नाम है, जिसने प्रद्युम्न का हरण किया था और वह एक रस विशेष को चाहता था।

इडा अर्थात् पृथ्वी (डलयो-रभेदः) 'डा' और 'ला' में भेद नहीं होता, इसलिए 'इडा' के 'डा' के स्थान पर 'ला' कर दिया जाये तो पृथ्वी अर्थ भी होता। स्वर, वचन, क्षमा, पृथ्वी, अम्बर, देवता अर्थात् बुध की स्त्री; इतने नाम 'इडा' (स्त्री०) शब्द के होते हैं।

इडा और अदिति शब्द के नाम

पत्नीं चन्द्रे-रिडां प्राहु-रिला तत्समतां मता ।
अदितिः पृथिवी ज्ञेया, देवमाताऽदितिः क्वचित् ।।२९।।

अर्थ - चन्द्रमा की पत्नी को भी इडा (स्त्री०) कहते हैं। पृथ्वी भी इला मानी जाती है।

पृथ्वी और देवमाता; इन २ अर्थों में 'अदिति' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है।

भिदि और वृष शब्द के नाम

अध्यूढ़ा भार्या प्रात्यक्ता, त्वद्-भिदिश्च निगद्यते ।
वृषो धर्म्मः क्वचिज्ज्ञेयो, गवामपि पतिर्वृषः ।।३०।।

अर्थ - सती को सत्पथ से डिगाना 'भिदि' (पुं०) कहलाता है। धर्म और बैल; इन २ अर्थों में 'वृष' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

वृषन् और रोहिणेय शब्द के नाम

वृषा कर्णश्च गदितो, वृषा चोक्तः शतक्रतुः ।
रौहिणेयो बलः प्रोक्तो, रौहिणेयो बुधः क्वचित् ।।३१।।

अर्थ - वृषा अर्थात् कर्ण; वृषा अर्थात् इन्द्र; इन २ अर्थों में 'वृषा'

(पुं०) शब्द जानना चाहिए। बलभद्र और बुधग्रह; इन २ दो अर्थों में 'रौहणेय' (पुं०) शब्द आता है। (कर्ण का दूसरा नाम वृषा भी है)

शेष और राम शब्द के नाम

बलदेवो मतः शेषो, नागो वा शेष उच्यते ।
रामस्तु लांगली ज्ञेयो, रामो दाशरथिः क्वचित् ॥३२॥

अर्थ - बलदेव और नाग; ये २ अर्थ 'शेष' (पुं०) शब्द के हैं। राम (पुं०) अर्थात् बलभद्र को लांगली कहते हैं। राम अर्थात् राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र भी राम (पुं०) हैं।

रामश्च शुक्लो वर्णो, रामश्च क्षत्रनाशनः ।

अर्थ - शुक्ल वर्ण, क्षत्रनाशनः अर्थात् परशुराम; ये २ अर्थ 'राम' (पुं०) शब्द के ग्रहण करना चाहिए। परशुराम ने ७ बार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित किया था, इसलिये परशुराम को क्षत्रनाशनः कहते हैं।

वराह शब्द के नाम

वराहः केशवः ख्यातो, वदाहो जलदः क्वचित् ॥३३॥

अर्थ - कृष्ण और मेघ; इन २ अर्थों में 'वराह' (पुं०) शब्द आता है। कृष्ण जी का तृतीय अवतार वराह था। वराह शब्द के निम्न लिखित अर्थ और जानना चाहिए।

वराह और अज शब्द के नाम

वराहः शूकरो ज्ञेयो, विष्णु-र्मेघो हरिस्तथा ।
अजाराट्स्मरेन्दो ज्ञेया-स्त्रिनेत्रश्चाप्यजो मतः ॥३४॥

अर्थ - शूकर, विष्णु, बादल और हरि; 'वराह' (पुं०) शब्द के ये अर्थ और जानना चाहिए।

राजा, स्मर अर्थात् काम, इन्द अर्थात् चन्द्रमा, त्रिनेत्र अर्थात् शंकर; ये ४ अर्थ 'अज' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए। निम्नलिखित श्लोक में भी अज शब्द के ४ अर्थ और देखें।

अज और शरीरज शब्द के नाम

अजः पशुश्च विख्यातो, तथा जौ ब्रह्म केशवौ ।
शरीरजः स्मृतो रोगः, पुत्रश्चापि शरीरजः ॥३५॥

अर्थ - बकरा (पशु), यव, ब्रह्मा और श्रीकृष्ण; इन ४ शब्दों को मिलाकर, 'अज' (पुं०) शब्द के कुल ८ अर्थ जानना चाहिए । रोग और पुत्र; ये २ अर्थ 'शरीरज' (पुं०) शब्द के होते हैं, क्योंकि किसी भी शब्द के आगे 'ज' शब्द जोड़ देने से 'उत्पन्न होना' अर्थ हो जाता है।

पुष्कर और कूल शब्द के नाम

ज्ञेयं पुष्कर-मब्जं च, नाग-नासाग्र-मेव च ।
कूलं नभः समाख्यातं, कूलं रोधः प्रचक्षते ॥३६॥

अर्थ - कमल और हाथी की नाक के अग्र भाग को भी 'पुष्कर' (न०) कहते हैं। आकाश और रोध अर्थात् नदी के तट को 'रोध' कहते हैं; ये २ अर्थ 'कूल' (न०) शब्द के होते हैं।

अनन्त शब्द के नाम

खं चानन्त-मिति प्रोक्त-मनन्तं च बलं क्वचित् ।
विष्णुः क्वचिदनन्तः स्यान्-नागश्चानन्त उच्यते ॥३७॥

अर्थ - आकाश, अपरिमित शक्ति, विष्णु और शेषनाग; ये ४ अर्थ 'अनन्त' (पुं०, न०) शब्द के जानना चाहिए ।

प्रजापति के नाम

प्रजापतिः स्मृतो राजा, ब्रह्मा चापि प्रजापतिः ।
प्रजापतिः स्मृतः क्षत्ता, क्षत्ता च चर उच्यते ॥३८॥

अर्थ - राजा, ब्रह्मा और क्षत्ता अर्थात् मूर्ति बनाने वाला या कुम्भकार और क्षत्ता अर्थात् द्वारपाल; 'प्रजापति' (पुं०) शब्द के इतने अर्थ होते हैं।

वाम शब्द के नाम

वामः पयोधरः प्रोक्तो, वामः स्याद्-द्रविणं हरः ।
वामश्च मदनः प्रोक्तो, वामश्च प्रतिकूलके ॥३९॥

अर्थ - पयोधर अर्थात् स्त्री के स्तन। द्रविण अर्थात् धन। हर अर्थात् शंकर। मदन अर्थात् कामदेव। प्रतिकूल अर्थात् कुटिल-वक्रप्रकृति-

दुराग्रही-हठी; ये ५ अर्थ 'वाम' शब्द के होते हैं।

आगोप और अंक शब्द के नाम

आगोपो गोपको ज्ञेयः, क्वचि-दागोपको ध्वजः।
उरश्चाङ्कः समाख्यातः, स्थान-मङ्कः स्मृतस्तथा ॥४०॥

अर्थ - गोपक अर्थात् ग्वाला और ध्वज; इन २ अर्थों में 'आगोपक' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। उर अर्थात् छाती और स्थान; इन २ अर्थों में 'अङ्क' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

वासर और विभावसु शब्द के नाम

वासरस्तु स्मृतो नागो, वासरो दिवसो मतः ।
विभावसु-र्निशा ज्ञेया, गन्धर्वश्च क्वचिन्मतः ॥४१॥

अर्थ - नाग और दिवस; ये २ नाम 'वासर' (पुं०) शब्द के हैं। विभावसुः अर्थात् 'रात्रि' और कहीं पर 'गन्धर्व' भी माना है।

शर्वरी और सान्द्र शब्द के नाम

शर्वर्यो रात्रयः प्रोक्ताः, शर्वर्यश्च स्त्रियो मताः ।
सान्द्रं घन-मिति प्रोक्तं, स्निग्धं सान्द्रं निगद्यते ॥४२॥

अर्थ - रात्रि और स्त्री; ये २ अर्थ 'शर्वरी' (स्त्री०) शब्द के होते हैं। घन अर्थात् कठोर और स्निग्ध अर्थात् चिकना; इन २ अर्थों में 'सान्द्र' (न०) शब्द आता है।

स्व शब्द के नाम

स्वः स्वर्गस्य मतं नाम, स्वः सुखं क्वचि-दुच्यते ।
स्व आत्मा चैव निर्दिष्टः, स्वः प्रोक्तो गृह-मूषिकः ॥४३॥

अर्थ - स्वर्ग, सुख, आत्मा और गृहमूषिक; इन ४ अर्थों में 'स्वः' (अ०) शब्द का प्रयोग होता है।

ककुप् शब्द के नाम

ककुश्छन्दो विशेषज्ञो, मतः शास्त्रेऽपिना ककुप् ।
ककुम्महीरुहः प्रोक्तो, ज्ञेयास्तु ककुभो-दिशः ॥४४॥

अर्थ - ककुः अर्थात् छन्द, ककुप् अर्थात् शास्त्र अर्थ में भी माना है।

ककुप् अर्थात् महीरुह, कुकुप् अर्थात् दिशा; ये ४ अर्थ 'ककुप्' शब्द के होते हैं। (वृक्ष को महीरुह कहते हैं)

क्षय और प्लव शब्द के नाम

क्षयं वेश्म समुद्दिष्टं, क्षयं रोगं प्रचक्षते ।
जल-दस्तु प्लवो ज्ञेयः, प्लवो ज्ञेयस्तथोडुपः ।।४५।।

अर्थ - वेश्म अर्थात् घर, क्षय अर्थात् रोग; ये २ अर्थ 'क्षय' (न०) शब्द के जानना चाहिए। मेघ और उडुप अर्थात् नाव; ये २ अर्थ 'प्लव' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए ।

प्रसाद और घन शब्द के नाम

प्रासादो मण्डपः प्रोक्तो, विहारश्चापि कथ्यते ।
घनं घनं विजानीयाद्-घनं विपुल-मुच्यते ।।४६।।

अर्थ - मण्डप और घूमना अर्थात् विहार; इन २ अर्थों में 'प्रासाद' (पुं०) शब्द आता है। मेघ और अधिक या बहुलता को भी 'घन' (न०) कहते हैं।

घन और वरूथ शब्द के नाम

प्रयुज्यते च कस्मिश्चिद्-घनं संघात-वाद्ययोः ।
वरूथं स्यन्दनाग्रं स्याद्-वरूथं वेश्मं उच्यते ।।४७।।

अर्थ - कोई संघात अर्थात् समूह और वाद्य अर्थात् बाजा; इन २ अर्थों में 'घन' शब्द को प्रयोग करते हैं।

स्यन्दन अर्थात् रथ का अग्र भाग और वेश्म अर्थात् घर; इन २ अर्थों में 'वरूथ' (न०) शब्द का प्रयोग जानना चाहिए।

वर्म और असुर शब्द के नाम

चमूश्च वर्म सहसा, प्रवदन्ति मनीषिणः ।
असुराश्च सुरा ज्ञेयाः, क्वचिद्-देवारयोऽसुराः ।।४८।।

अर्थ - 'वर्म' शब्द का अर्थ विद्वान् लोग 'सेना' करते हैं ।

देव और देव का शत्रु (देवों के शत्रु को भी असुर कहते हैं); ये २ नाम 'असुर' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए ।

नाग और गन्धर्व शब्द के नाम

नागाश्च द्विरदा ज्ञेयाः, पन्नगाश्च क्वचिन्मताः ।
गन्धर्वश्च तथा वायुः, क्वचित् स्याद्-देवगायनः ॥४९॥

अर्थ - नाग अर्थात् हाथी और सर्प; ये २ अर्थ 'नाग' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए । हवा और देवों में गाने वाले देव; गन्धर्व कहलाते हैं; ये २ अर्थ गन्धर्व (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

तार्क्ष्य और बालेय शब्द के नाम

तार्क्ष्यो हयः समुदिष्ट-स्तार्क्ष्यश्चापि पतत्रिराट् ।
बालेयान-सुरा-नाहु-र्बालेयांक्च क्वचित् खरान् ॥५०॥

अर्थ - घोड़ा और गरुण; इन २ अर्थों में 'तार्क्ष्य' (पुं०) शब्द जानना चाहिए। असुर और गधा; इन २ अर्थों में 'बालेय' (पुं०) शब्द जानना चाहिए।

तृणी और शिखरी शब्द के नाम

तृणी वनस्पतिः प्रोक्ता, क्वचि-दार्द्राश्च कथ्यते।
शिखरी वृक्ष उद्दिष्टः, शिखरी पर्वतः स्मृतः ॥५१॥

अर्थ - वनस्पति और आर्द्रा अर्थात् गीला; ये २ अर्थ 'तृणी' (स्त्री०) शब्द के जानना चाहिए । वृक्ष और पर्वत; इन २ अर्थों में 'शिखरी' (पुं०) शब्द जानना चाहिए ।

द्विज और मलिम्लुच शब्द के नाम

द्विजो विप्रश्च दन्तश्च, द्विजः पक्षी निगद्यते ।
चौरो मलिम्लुचो ज्ञेयो, वातश्चापि मलिम्लुचः ॥५२॥

अर्थ - ब्राह्मण, दाँत और पक्षी; इन ३ अर्थों में 'द्विज' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। चोर और हवा; इन २ अर्थों में 'मलिम्लुच' (पुं०) शब्द जानना चाहिए।

आत्मज और कीनाश शब्द के नाम

आत्मजं रक्त-मुद्दिष्टं, सुतः कामस्तथैव च ।
कीनाशः मृतको ज्ञेयः, कीनाशश्चापि राक्षसः ॥५३॥

कीनाशोऽग्निः कृतघ्नश्च, कृपणो यम एव च ।
कीनाशः कर्षको ज्ञेयः, कीनाशश्च वृकोदरः ॥५४॥

अर्थ - खून, पुत्र और काम; ये ३ अर्थ 'आत्मज' (न०) शब्द के होते हैं। मृतक, राक्षस, अग्नि, कृतघ्न, कृपण अर्थात् कञ्जूस, यम अर्थात् यमराज, कर्षक अर्थात् खेत जोतने वाला और वृकोदर अर्थात् भीम; ये ८ अर्थ 'कीनाश' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

अवदात और ज्योति शब्द के नाम

अवदातं प्रधानं स्या-दवदातं च पाण्डुरम् ।
ज्योतिर्ल्लोचन-मुद्दिष्टं, ज्योति-र्नक्षत्र-मुच्यते ॥५५॥

अर्थ - प्रधान अर्थात् मुख्य और पाण्डुर अर्थात् सफेद; ये २ अर्थ 'अवदात' (न०) शब्द के हैं। लोचन अर्थात् आँख और नक्षत्र; ये २ अर्थ 'ज्योति' (नं०) शब्द के जानना चाहिए।

अब्द और बलाहक शब्द के नाम

अब्दः संवत्सरो ज्ञेयो, मेघश्चापि क्वचिन्मतः ।
बलाहका महामेघाः, शिखरी च बलाहकः ॥५६॥

अर्थ - संवत्सर अर्थात् वर्ष और मेघ; ये २ अर्थ 'अब्द' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए। महामेघ अर्थात् सघन मेघ और शिखरी अर्थात् पर्वत; ये २ अर्थ 'बलाहक' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

तोयद और जीमूत शब्द के नाम

तोयदं जलदं प्राहु-स्तोयदं कथ्यते घृतम् ।
जीमूतश्च मतो नागो, जीमूतः क्वचि-दम्बुदः ॥५७॥

अर्थ - मेघ और घी; ये २ अर्थ 'तोयद' (न०) शब्द के जानना चाहिए। नाग अर्थात् हाथी, सर्प और अम्बुद अर्थात् मेघ; ये ३ अर्थ 'जीमूत' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए ।

पौलस्त्य और शुचिकृत् शब्द के नाम

पौलस्त्यं तु मतं युद्धं, पौलस्त्यं पौरुषं विदुः ।
शुचिकृद्रजकश्चैव, प्रोक्तो नित्यं बुधै रसः ॥५८॥

अर्थ - युद्ध और पौरुष अर्थात् पुरुषार्थ; ये २ अर्थ 'पौलस्त्य' (न०) शब्द के जानना चाहिए। रजक अर्थात् धोबी और रस; ये २ अर्थ 'शुचि' शब्द के हैं, ऐसा विद्वानों ने कहा है।

ज्योति और प्रधान शब्द के नाम

ज्योतिश्च गदितो वह्निः, काव्येषु मुनिपुङ्गवैः ।
प्रधानं सज्जनं ज्ञेयं, प्रधानं श्वेत-मुच्यते ।।५९।।

अर्थ - ज्योतिः (न०) शब्द का अर्थ; 'अग्नि' काव्यों में श्रेष्ठ मुनियों के द्वारा कहा गया है। सज्जन और श्वेत अर्थात् सफेद; ये २ अर्थ 'प्रधान' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

पर्यजन्य और शिलीमुख शब्द के नाम

पर्जन्यं जलदं प्राहुः, पर्जन्यं तु शतक्रतुः ।
शिलीमुखाः स्मृता बाणा, भ्रमराश्च शिलीमुखाः ।।६०।।

अर्थ - मेघ और शतक्रतुः अर्थात् इन्द्र; ये २ अर्थ 'पर्जन्य' (न०) शब्द के जानना चाहिए। बाण और भ्रमर अर्थात् भौरा; ये २ अर्थ 'शिलीमुख' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

लेखा और अम्बरीष शब्द के नाम

लेखा सीमेति विज्ञेया, लेखा चित्रकृतौ मता ।
अम्बरीषं क्वचिद्-भ्राष्टं, क्वचिद्-युद्धं निगद्यते ।।६१।।

अर्थ - सीमा और चित्रकृति अर्थात् चित्र बनाने वाला; ये २ अर्थ 'लेखा' (स्त्री०) शब्द के होते हैं।

भ्राष्ट्र अर्थात् भाड़ अर्थात् जिस बर्तन में चनादि अनाज सेंका जाता है, उसे भाड़ कहते हैं। कहीं पर अम्बरीष अर्थात् युद्ध कहा जाता हैं; ये २ अर्थ 'अम्बरीष' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

पुंस और असु शब्द के नाम

पुस्त्वं चापि मतं युद्धं, पुस्त्वं पौरुष-मुच्यते ।
विद्वांसोऽरिपवो ज्ञेया, विद्वांसस्त्वसवो-मताः ।।६२।।

अर्थ - युद्ध और पुरुषार्थ; ये २ अर्थ 'पुस्त्व' (न०) शब्द के जानना

चाहिए ।

सज्जन और असु अर्थात् अध्यात्म जीवन; ये २ अर्थ 'असु' (पुं०) शब्द के होते हैं।

माया और मधु शब्द के नाम

मायाऽविद्येति विज्ञेया, क्वचिन्माया तु सांवरी ।
मधु द्राक्षीति विज्ञेया, क्वाचित्-स्यान्मधु-माक्षिकम् ।।६३।।

अर्थ - अविद्या अर्थात् अज्ञान और सांवरी अर्थात् जादूगरनी; ये २ अर्थ 'माया' (स्त्री०) शब्द के जानना चाहिए। द्राक्षी अर्थात् दाख या अंगूर और माक्षिकम् अर्थात् शहद; ये २ अर्थ 'मधु' (न०)शब्द के जानना चाहिए।

मधु और खं शब्द के नाम

मधु चाम्बु समाख्यातं, सुराश्च मधु-संज्ञका ।
खं रंध्र-मिति विज्ञेयं, खं गृहं नभ एव च ।।६४।।
ख-मिन्द्रिय-मिति ख्यातं, खं च नक्षत्र-मुच्यते ।
धार्तराष्ट्रो महाहंसा, धृतराष्ट्र-सुताः क्वचित् ।।६५।।

अर्थ - अम्बु अर्थात् (पानी) और सुरा अर्थात् मधु नाम का देव एवं शराब; इस प्रकार 'मधु' शब्द के ३ अर्थ जानना चाहिए। छिद्र, घर, आकाश, इन्द्रिय और नक्षत्र; ये ५ अर्थ 'खम्' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

महाहंस और कहीं पर धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम भी धार्तराष्ट्र है; ये २ अर्थ 'धार्तराष्ट्र' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

प्रभाकर और सफेद शब्द के नाम

प्रभाकरो मतः सूर्यो, वह्निश्चापि प्रभाकरः ।
सितं शुक्ल-मिति ज्ञेयं, सितं बद्धं प्रचक्षते ।।६६।।

अर्थ - सूर्य और अग्नि; ये २ नाम 'प्रभाकर' शब्द के जानना चाहिए ।

शुक्ल अर्थात् सफेद और बद्ध अर्थात् बँधा हुआ; ये २ नाम 'सित' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

काला और नकुल शब्द के नाम

असितं कृष्ण-मित्युक्तं, अशितं भक्षितं स्मृतम् ।
वभ्रुस्तु नकुलो ज्ञेयः, पाण्डवो नकुलस्तथा ॥६७॥

अर्थ - कृष्ण अर्थात् काला, अशितं—भक्षितं अर्थात् खाया हुआ; ये २ अर्थ 'असित' (न०) शब्द के होते हैं। नेवला और पाण्डव; ये २ अर्थ 'नकुल' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए। (पाँचों पाण्डवों में एक पाण्डव का नाम भी नकुल था)।

बिल्ली और यम शब्द के नाम

त्रिशङ्कु-माहु-र्मार्जार, मृषश्चापि तथेष्यते ।
यमस्तु वायसो ज्ञेयो, यमः प्रेताधिपस्तथा ॥६८॥

अर्थ - त्रिशंकु (पुं०) मार्जार अर्थात् बिल्ली और मृषः अर्थात् झूठ; ये २ अर्थ 'त्रिशंकु' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए, वायस अर्थात् कौआ और प्रेताधिप अर्थात् यमराज; ये २ अर्थ 'यम' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

लक्ष्मण शब्द के नाम

लक्ष्मणं सारसं विद्यात्, तथा दशरथात्मजम् ।
लक्ष्म चन्द्रस्य कार्ष्ण्यं स्यात्, लक्ष्म्यः केतुः प्रकीर्तितः ॥६९॥

अर्थ - सारसं अर्थात् सारसपक्षी और दशरथात्मज अर्थात् राजा दशरथ के पुत्र का नाम भी 'लक्ष्मण' (न०) था। चन्द्रमा की कृष्णता को 'लक्ष्म' (पुं०) कहते हैं और लक्ष्म्य अर्थात् केतु (ध्वजा); इतने अर्थ 'लक्ष्म' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

दक्ष शब्द के नाम

केतुश्चापि मतः काव्ये, लक्ष्मेति मुनिपुङ्गवैः ।
आरुणेयः स्मृतो दक्षो, दक्षश्चाचेतसः क्वचित् ॥७०॥

अर्थ - मुनियों ने काव्य में लक्ष्म का 'ध्वजा' अर्थ भी माना है। आरुणेयः और अचेतस; ये २ अर्थ 'दक्ष' शब्द के जानना चाहिए।

निपुण और आदित्य शब्द के नाम

आशुकारी भवेद्-दक्षः, स्या-दली तोमरः स्मृतः।
आदित्यं च रविं विद्याद्-दैत्यश्चाप्यदितेः सुतः ।।७१।।

अर्थ - दक्ष अर्थात् निपुण, अली अर्थात् भौंरा और तोमर अर्थात् बाण; ये ३ नाम 'आशुकारी' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए। रवि अर्थात् सूर्य और अदिति का पुत्र; दैत्य भी 'आदित्य' (न०) कहलाता है।

रोग और नितम्ब शब्द के नाम

रोगो रजस्तथा रेणू, रजो लोहित-मुच्यते ।
स्कन्धो नितम्ब-संज्ञः, स्यान्नितम्बं जघनं तटम् ।।७२।।

अर्थ - रोग, धूलि और लोहित (खून); ये ३ नाम 'रज' (न०) शब्द के जानना चाहिए। स्कन्ध और जघनतट को भी 'नितम्ब' (न०) कहते हैं।

वसु और सारंग शब्द के नाम

हेम-वस्विति विज्ञेयं, वसु तेजो निगद्यते ।
सारङ्गं चातकं प्राहुः, स्वर्णे चापि सितासिती ।।७३।।

अर्थ - स्वर्ण और तेज अर्थात् किरण; ये २ नाम 'वसु' शब्द के जानना चाहिए । चातक अर्थात् पपीहा, स्वर्ण और चितकवरा; ये ३ नाम 'सारङ्ग' (न०) शब्द के जानना चाहिए। (यह चातक पक्षी; समय के अनुसार केवल वर्षाऋतु के स्वाति नक्षत्र में ही पानी पीता है)।

कदली और मेघ शब्द के नाम

रम्भाश्च कदलीः प्राहु, रम्भा स्वर्गाङ्गना मता ।
ग्रावाणो गिरिजाः प्रोक्ता, मेघाश्चापि मनीषिभिः ।।७४।।

अर्थ - कदली अर्थात् केला का वृक्ष और स्वर्गाङ्गना अर्थात् देवाङ्गना ये २ अर्थ 'रम्भा' (स्त्री०) शब्द के जानना चाहिए। गिरिजा अर्थात् पहाड़ और मेघ; ये २ अर्थ 'ग्रावाण' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

.... निगद्यते ।
औषणंरस-मुद्दिष्ट-मृतं,सत्य-मपिक्वचित्।।७५।।

अर्थ - (इति खण्ड श्लोकः; भाष्य प्रतौ ।)

आत्मा और कर्ष शब्द के नाम

अक्ष आत्मेति विज्ञेयः, केचि-दाहु-र्विभीतकम् ।
ज्ञेय-मिन्द्रिय-मक्षं च, शाकटं कर्ष एव च ॥७६॥

अर्थ - आत्मा, विभीतक अर्थात् बहेड़ा का पौधा, गाड़ी का भौंरा, इन्द्रिय और कर्ष अर्थात् सोलह-माशे की एक तौल है, जिसको कर्ष कहते हैं, ये ५ अर्थ 'अक्ष' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

पांसा और कमल शब्द के नाम

अक्षं च पाशकं विद्याद्-व्यावहारिक-मेव च ।
पद्म-मिन्द्रिय-मित्युक्तं, पद्मं तामरसं विदुः ॥७७॥

अर्थ - पांसा और व्यवहारिकम् अर्थात् कानूनी कार्य विधि; ये सभी 'अक्ष' शब्द के अर्थ जानना चाहिए। कमल और इन्द्रिय; ये २ अर्थ 'पद्म' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

आयतन और पुष्प शब्द के नाम

चैत्य-मायतनं प्रोक्तं, नीड-मायतनं तथा ।
पुष्पं लोहित-मुद्दिष्टं, पुष्पं च कुसुमं तथा ॥७८॥

अर्थ - चैत्यं अर्थात् जिनबिम्ब पुण्यस्थान, नीड अर्थात् विश्रामस्थल या घौंसला; ये २ अर्थ 'आयतन' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

लोहित अर्थात् लालरंग और कुसुम अर्थात् फूल; ये २ अर्थ 'पुष्प' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

वाजी शब्द के नाम

वाजी तुरङ्गमो ज्ञेयो, वाजी श्येनो विहङ्गमः ।
विष्ण-विन्द्र सिंह-मण्डूक, चन्द्रादित्यास्तु बानरान् ॥७९॥

अर्थ - वाजिन् अर्थात् घोड़ा, श्येन अर्थात् वाज, विहङ्गम अर्थात् पक्षी, विष्णु, इन्द्र, सिंह, मण्डूक अर्थात् मेढ़क, चन्द्रमा, सूर्य और बन्दर; ये १० अर्थ 'वाजिन्' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

हरि, ललाम और शुक्रा शब्द के नाम

वभ्रु-शिवानिल-हयान्, हरी-निच्छन्ति कोविदाः।
पुरुष-ध्वज-लिङ्गेषु, हय-भूषण-लक्ष्मषु ॥८०॥
राम-शेषाव-नीन्द्रेषु, ललामं नवसु स्मृतम् ।
शुक्रा स्मृताक्षि-दोषोना, लवली मञ्जरी तथा ॥८१॥

अर्थ - वभ्रु अर्थात् भौह, शिव, अनिल अर्थात् हवा और हय अर्थात् घोड़ा; ये ५ अर्थ 'हरि' शब्द के नाम जानना चाहिए। पुरुष, पताका, चिह्न, घोड़ा, आभूषण, लक्षण, सुन्दर, शेष अर्थात् शेषनाग और राजा; ये ९ अर्थ 'ललाम' (न०) शब्द के जानना चाहिए। अक्षिदोष अर्थात् नेत्रविकार, लवली और मञ्जरी अर्थात् आम के बोर को मञ्जरी कहते हैं; ये ३ अर्थ 'शुक्रा' (स्त्री०) शब्द के नाम जानना चाहिए।

वक्रवक्त्र और पुलिन शब्द के नाम

वक्रवक्त्रः शुको ज्ञेयः, कोकिला वचन प्रिया ।
पुलिनं जल विच्छेदः, पङ्कजः स्यात् कुशेशयम् ॥८२॥

अर्थ - वक्रवक्त्र (पुं०); शुक या तोता का नाम है। वचन प्रिया (स्त्री०); कोयल का नाम है, पुलिन (न०); पुल या सेतु का नाम है तथा कुशेशयम् (न०); यह कमल का नाम जानना चाहिए।

पाप, शीघ्र और प्रातःकाल शब्द के नाम

रतं पाप-मिति ज्ञेयं, सत्वरं शीघ्र-मुच्यते ।
पिशङ्गं रोचनाभं स्यान्-मेचकस्तिलको मतः ॥८३॥

अर्थ - रत (न०) शब्द; पापवाची है, सत्वर (न०) शब्द; शीघ्र का वाची है, पिशङ्ग (न०) शब्द; रोचनाभवाची है। प्रातःकाल की सूर्य किरणों को 'रोचनाभ' कहते हैं। मेचक (पुं०) शब्द; तिलकवाची है।

तिलक और निकष शब्द के नाम

ललाटेऽवस्थितं चिह्नं, विद्-वद्भि-स्तिलकं मतम् ।
परिचर्यं च कटकं, निकषस्तु कषो मतः ॥८४॥

अर्थ - तिलक अर्थात् ललाट पर स्थित चिह्न को विद्वान् 'तिलक' (पुं०) कहते हैं। परिचर्य अर्थात् कटक, निकष; अर्थात् कसौटी अर्थ में 'कष' (पुं०) शब्द आता है।

मञ्जूष और केसरि शब्द के नाम

नानारत्नै-रूपचिता, मञ्जूष रागिणी स्मृता।
दिनकृद्-वाजि-सिंहेषु, केसरित्वं विधीयते॥८५॥

अर्थ - नाना रत्नों से बनाये हुये; सन्दूक या मञ्जूष को 'रागिणी' कहते हैं।

सूर्य, घोड़ा और सिंह; इन ३ अर्थों में 'केसरी' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

कल और अलात शब्द के नाम

अव्यक्तो मधुरः शब्दः, कल इत्यभि-धीयते।
अलात-मुल्मुकं ज्ञेयं, छेदो नाम भयङ्कराः॥८६॥

अर्थ - अव्यक्त और मधुर शब्द को 'कल' कहते हैं।

उल्मुक अर्थात् जलती हुयी लकड़ी और मसाल; इन २ अर्थ में अलात (न०) आता है, छेद (पुं०) अर्थात् 'भयंकर' अर्थ में आता है।

भाव और विलास शब्द के नाम

भावः शृङ्गार माधुर्य, भावोऽवस्था प्ररूपणम्।
विलासः कामजो दोष-स्तदेव ललितं मतम्॥८७॥

अर्थ - शृंगार, माधुर्य अर्थात् मधुर और अवस्था; इन ३ अर्थ में 'भाव' (पुं०) शब्द आता है। कामजा दोष अर्थात् काम से उत्पन्न होने वाले दोष को 'विलास' (पुं०) कहते हैं, उसी को 'ललित' भी कहते हैं।

कबन्ध और पगड़ी शब्द के नाम

उत्तमाङ्ग-बिना-देहं, कबन्धं चेति शस्यते।
शिरसो वेष्टनं यद्-वै, तदुष्णीयं निगद्यते॥८८॥

अर्थ - शिर के बिना 'धड़' मात्र को 'कबन्ध' (पुं०) कहते हैं। पगड़ी अर्थात् शिर के वेष्टन को 'उष्णीय' (न०) कहते हैं।

आहत, निविड एवं मण्डूक शब्द के नाम

आहतं समदीर्घं स्यान्-निविडं पीडितोन्नतम् ।
मण्डूको भेक संज्ञः स्याद्-वर्षाभूश्चातको मतः ॥८९॥

अर्थ - समदीर्घ को आहत एवं पीडितोन्नत को निविड कहते हैं। मण्डूक (पुं०) और भेक; ये २ मेंढक के नाम हैं तथा चातक (पुं०) को वर्षाभू कहते हैं।

शिवा, शंकर और किसान शब्द के नाम

शिवा पिङ्गवती ज्ञेया, विशालं सबलं मतम् ।
दुश्चर्मा शिपिविष्टः स्यात्-कर्षकस्तु कृषीबलः ॥९०॥

अर्थ - पिङ्गवती अर्थात् पार्वती को शिवा (स्त्री०) कहते हैं। विशाल (न०) अर्थात् सबल कहलाता है। दुश्चर्मा और शिपीविष्ट; ये २ शंकर के नाम हैं। कर्षक (पुं०) और कृषीबल; ये २ किसान के नाम हैं।

कानीन और उत्कृष्ट शब्द के नाम

कन्याजातश्च कानीनो, षण्डः क्लीव इति स्मृतः ।
उत्कृष्टः श्वसुरः स्यातां, क्लिष्ट-मव्यक्त-वाचकम् ॥९१॥

अर्थ - कानीन अर्थात् अविवाहित स्त्री के पुत्र को 'कानीन' (पुं०) कहते हैं, **जैसे** - व्यास और कर्ण । क्लीव अर्थात् नपुंसक या शक्तिहीन का नाम 'षण्ड' (पुं०) है।

श्वसुर 'उत्कृष्ट' माना जाता है तथा अव्यक्त वचनों को 'क्लिष्ट' कहते हैं।

हस्तिदाँत और हस्ति बन्धन शब्द के नाम

रदनो हस्तिदन्तः स्याद्-दानं-कटक संज्ञितम् ।
तोदनं चाङ्कुशं विद्या-दालानं हस्ति-बन्धनम् ॥९२॥

अर्थ - रदनः हस्तिदन्तः (पुं०) अर्थात् हाथी का दाँत 'रदन' कहलाता है। दानंकटक अर्थात् मदोन्मत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस 'दानंकटक' कहलाता है। तोदनं अर्थात् अंकुश का नाम है। हस्तिबन्धनम् अर्थात् हाथी

बाँधने के खूँटे को 'आलान' (न०) कहते हैं।

घनाघन और बुद्धि शब्द के नाम

घनाघनः इति ख्यातः, शास्त्रेष्वधिकपौरुषः ।
अपाचीनं मनोज्ञं च, बुद्धि-र्ज्ञेया तु शेमुषी ॥९३॥

अर्थ - अधिकपौरुषः अर्थात् कर्मठ, दक्षिणी और मनोहर; ये ३ अर्थ 'घनाघन' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए। शेमुषी; बुद्धि को कहते हैं।

वृक्ष और नदी शब्द के नाम

अर्कस्तु पादपे ज्ञेयो, नदी स्यात् फेनवाहिनी ।
अश्वारोहो मरुद्यानोऽश्वानां हृदयेध्वनिः ॥९४॥

अर्थ - पादपे अर्थात् आक के पौधे को 'अर्क' (पुं०) कहते हैं। 'फेनवाहिनी' (स्त्री०); नदी का नाम है। घोड़े के हृदय की ध्वनि को 'मरुद्यान' कहते हैं।

रुदन और कच्चे मांस शब्द के नाम

आक्रन्द इति विज्ञेयः, खुराश्च शफ संज्ञिता ।
आममांसं भवेत्क्रव्यं, पक्वं पिशित-मुच्यते ॥९५॥

अर्थ - आक्रन्द (पुं०) अर्थात् रोना और खुर अर्थात् एक प्रकार के सुगन्धित द्रव्य या खाट का 'पाया' कहलाता है। घोड़े की टाप या वृक्ष की जड़ को 'शफ' (पुं०) कहते हैं।

आममांसं अर्थात् कच्चा मांस; क्रव्य (न०) कहलाता है।

पिशित (न०) पक्वं; पके मांस को 'पिशित' कहते हैं।

मोती शब्द के नाम

शुष्कं तु विरसं ज्ञेयं, मृष्टं सरस-मुच्यते ।
शङ्खजं शुक्तिजं चैव, वाराहं तिमि मौक्तिकम् ॥९६॥

अर्थ - शुष्कं (न०) विरस अर्थात् रस हीन या सूखा । मृष्टं (न०) सरस अर्थात् रस से सहित या गीला। मौक्तिकम् (न०); शंख, शुक्ति, बराह अर्थात् सूअर, तिमि अर्थात् मछली; इन ४ साधनों से मोती उत्पन्न होता है।

बाँस, मेघ और चतुर शब्द के नाम

वंशादाशी विषान् नागाज्-जीमूताच्च तथाष्टमम्।
लोकज्ञो दक्षिणो ज्ञेयो, दक्षिणश्चतुरः स्मृतः ॥९७॥

अर्थ - वंश अर्थात् बाँस से, नाग अर्थात् हाथी से या सर्प से (मणया साँप से), जीमूत अर्थात् मेघ से एवं मछली से (स्वाति नक्षत्र में मेघ का पानी यदि मछली के मुख में चला जाय तो वह मोती बन जाता है) उपरि कथित ९५ श्लोक में ४ नाम हैं तथा अधोकथित ९६ श्लोक में ४ नाम हैं, ये कुल ८ नाम 'मोती' के उत्पन्न होने के स्थान हैं।

लोकज्ञः अर्थात् देश-काल की बात को जानने वाला 'दक्षिण' (पुं॰) कहलाता है।

दक्षिणः (पुं॰), चतुरः (पुं॰) अर्थात् निपुण अर्थ में आता है, **जैसे**- दक्षिणः गायकः, कुशलः गायकः इत्यर्थः ।

आकूत और मुख शब्द के नाम

आकूतं तु मतं विद्यात्, कण्टकं गहनं मतम्।
आननं चाकुले नेत्रे, चिकुरं चापि शस्यते ॥९८॥

अर्थ - आकूतम् मतं (न॰) अर्थात् अभिप्राय को कहते हैं। कण्टकं गहनं अर्थात् काँटा या जंगल। आकुल अर्थात् नेत्र, चिकुर अर्थात् बाल; इतने अर्थों में 'आनन' (न॰) शब्द का प्रयोग होता है।

श्याम, कपिल और दूर शब्द के नाम

पापः श्यामः इति प्रोक्तो, वभ्रुस्तु कपिलो मतः।
स्थविष्टं स्थावरे चैव, दविष्टं दूर-मुच्यते ॥९९॥

अर्थ - श्याम; पाप कहलाता है। वभ्रुः; कपिल या भूरा रंग का नाम है। स्थविष्टं अर्थात् स्थावर; वृद्ध को कहते हैं। दविष्टं (न॰); अत्यन्त दूर अर्थ में जानना चाहिए।

श्रेष्ठ और स्नेह शब्द के नाम

परमेष्ठी मतः श्रेष्ठः, प्रेम प्रिय-मुदाहृतम् ।
प्रकाशः स्त्री गृहे-रक्तः, शैलूष इति संज्ञितः ॥१००॥

अर्थ - श्रेष्ठः (पुं०); परमेष्ठी अर्थात् परमे पदे तिष्ठति इति परमेष्ठी, श्रेष्ठ पुरुष। प्रेम (न०); प्रिय, स्नेही । स्त्रीगृह में स्पष्ट रूप से आसक्त पुरुष को 'शैलूष' कहते हैं या अभिनेता भी शैलूष (पुं०) कहलाता है।

चर्मकारी, नाई एवं लावण्य शब्द के नाम

पदकृच्चर्मकारः स्यान्- नापितस्त्वजयः स्मृतः ।
लावण्य-माहु-र्माधुर्यं, चित्रं च शुभकर्मजम् ।।१०१।।

अर्थ - पदकृत् (पुं०) चर्मकारः अर्थात् हरिजन (चमार) का नाम है। नापितः (पुं०); अजयः अर्थात् (न जयः इति अजयः) नाई। लावण्य; माधुर्य को कहते हैं। मनोहर, चित्र, शुभकर्मजम् अर्थात् अच्छे कर्म से उत्पन्न; ये ३ नाम 'लावण्य' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

रोग शब्द के नाम

व्याधयश्चामयाः प्रोक्तः, पानीयं तु समुच्चयः ।
आधयस्तु स्मृताः प्राज्ञैश्-चित्तोत्पन्ना उपद्रवाः ।।१०२।।

अर्थ - व्याधिः (पुं०); आमय अर्थात् रोग। पानीयं (न०); समुच्चय वाचक है। मन से उत्पन्न होने वाले विकार को 'आधि' (पुं०) कहते हैं।

वेग और क्यारी के नाम

रंहो वेगः समाख्यातः, सत्रं सच्चरितं स्मृतम् ।
आलबालं स्मृतं सद्भि-रपां वेग-निवारणम् ।।१०३।।

अर्थ - रंहो (पुं०); वेग अर्थात् चाल, आतुरता, प्रचण्डता, उत्कटता और उग्रता; ये सभी 'वेग' शब्द के पर्यायवाची नाम हैं। सत्रं (न०); सच्चरित्र अर्थात् सदाचार कहलाता है। पानी के वेग को निवारण करने वाली क्यारी को सज्जन पुरुष 'आलबाल' (पुं०) कहते हैं।

चिड़िया, समान, सफेद एवं गमन शब्द के नाम

चटकः कलविङ्कः स्यात्, तुल्यं सदृश-मुच्यते ।
किलासं पाण्डुरं ज्ञेयं, दोला प्रेङ्खेति शस्यते ।।१०४।।

अर्थ - कलविङ्कः (पुं०); चटकः अर्थात् चिड़िया । तुल्यं (न०); सदृशं अर्थात् समानता। किलासं (न०); पाण्डुर अर्थात् सफेद और दोला, प्रेङ्ख

अर्थात् गमन अर्थ में जानना चाहिए।

मन्दिर, इन्द्र और युद्ध शब्द के नाम

मन्दिरं नगरं ज्ञेयं, निलयं चापि मन्दिरम् ।
सहस्त्रनयनोऽगारिः, प्रधनं युद्ध-मुच्यते ॥१०५॥

अर्थ - नगर और निलय अर्थात् घर; ये २ अर्थ 'मन्दिर' (न०) शब्द के होते हैं। अगारिः (पुं०), सहस्त्रनयन अर्थात् इन्द्र और प्रधनं (न०); युद्ध अर्थ में जानना चाहिए।

हरे, नीले रंग, बैल और भैंसा शब्द के नाम

पलाशो हरितो वर्णो, मेचको नीलपिञ्जरः ।
उक्षाणं वृषभं विद्याल्-लुलायो महिषो मतः ॥१०६॥

अर्थ - हरित वर्ण को पलाश (पुं०) कहते हैं। मेचकः (पुं०) नीलपिञ्जर अर्थात् नीला रंग या ललाई लिये हुये खाकी रंग को नीलपिञ्जर कहते हैं। उक्षाणम् (न०); वृषभ अर्थात् बैल । लुलायः (पुं०) महिष अर्थात् भैंसा अर्थ में जानना चाहिए।

बन्ध्या स्त्री और बाँस शब्द के नाम

उस्त्रा बन्ध्या वसा वेहत्, पृष्ठोही गर्भिणी हि या ।
व्याख्यातो मस्करो वेणु-स्त्वचिसारः प्रकीर्तितः ॥१०७॥

अर्थ - बन्ध्या, वसा, वेहत्; ये ३ उस्त्रा (स्त्री०) अर्थात् बन्ध्या स्त्री के नाम है। गर्भिणी स्त्री (स्त्री०) को पृष्ठौही कहते हैं। मस्कर, त्वचिसार और वेणुः (पुं०); ये ३ बाँस के नाम हैं।

काम और पाप शब्द के नाम

ह्रिलं कामं शपं चैव, रोष-माहु-र्मनीषिणः ।
कलभोऽल्पवयो नागः, कलुषं चाविलं मतम् ॥१०८॥

अर्थ - काम, शाप और रोष अर्थात् क्रोध, ये ३ नाम 'ह्रिल' (न०) शब्द के हैं। अल्प उम्र वाले हाथी को 'कलभ' कहते हैं।

आविलं (न०); कलुष अर्थात् पाप माना गया है।

राजा और रत्न शब्द के नाम

वृजिनं कुटिलं विद्यात्, सम्राट् राजा च भूभुजौ।
रत्नं वज्रं विजानीयात्, त्रियामा क्षणदा मता ॥१०९॥

अर्थ - वृजिनम् (न०); कुटिल अर्थात् पाप या टेड़ी चाल जानना चाहिए। सम्राट और भूभुज; ये २ राजा के नाम हैं। रत्नं (न०); वज्र कहलाता है। क्षणदा और त्रियामा; ये २ शब्द 'रात्रि' अर्थ में जानना चाहिए।

दीर्घ और बहुत शब्द के नाम

दीर्घं प्रांशुं विजानीयात् , ह्रस्वं नीचक-मुच्यते।
भूरि प्रभूत-मुद्दिष्ट-मभितः सर्व-वाचकम् ॥११०॥

अर्थ - प्रांशुम् (न०); दीर्घ अर्थात् बड़ा या लम्बा। नीचकम् (न०); ह्रस्व या छोटा। प्रभूतम् (न०); भूरि अर्थात् बहुत। अभित (अ०) सर्ववाचक चारों ओर के अर्थ में जानना चाहिए।

हवा और प्रिय-वाक्य शब्द के नाम

पवनश्चानिलो ज्ञेयः, पवनश्चाधमोजनः ।
प्रियवाक्यो भवे-दार्यः, स्नातश्च परिकीर्तितः ॥१११॥

अर्थ - अनिल अर्थात् हवा, अधमोजनः अर्थात् नीच पुरुष; ये २ नाम 'पवन' (पुं०) शब्द के होते हैं। आर्य अर्थात् सज्जन और स्नात; ये २ नाम 'प्रियवाक्य' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

बाजा शब्द के नाम

आडम्बरश्च पटहो, व्यञ्जनं बोधनं मतम् ।
विपञ्ची वल्लकी ख्याता, बीणा चैव निगद्यते ॥११२॥

अर्थ - पटह अर्थात् बाजा, व्यञ्जन और बोधन; ये ३ नाम आडम्बर (पुं०) शब्द के जानना चाहिए। वल्लकी अर्थात् बजाने का बाजा और वीणा; ये २ नाम विपञ्ची शब्द के जानना चाहिए ।

सुमना, बौर, वल्लरी और प्रपा शब्द के नाम

मालती सुमना ज्ञेया, सुमना मुदितो जनः ।
वल्लरी मञ्जरी ख्याता, प्रपाऽप्शाला प्रकीर्तिताः ॥११३॥

अर्थ - सुमना अर्थात् मालती या मालती का पुष्प और विद्वान्; ये २ नाम 'सुमना' शब्द के जानना चाहिए। मञ्जरी अर्थात् बौर, वल्लरी अर्थात् लता, प्रपा अर्थात् अप्शाला यानि 'पानी की प्याऊ' अर्थ में जानना चाहिए।

आयु शब्द के नाम एवं राजीव-लोचन का लक्षण

आयु-र्निरुच्यते तोयं, तेन जीवति पद्मकम् ।
तस्य पत्राक्षिमानेन, रामो राजीव-लोचनः ॥११४॥

अर्थ - आयुः तोयं (न०) अर्थात् पानी, पानी का नाम जीवन भी है, इसलिये पानी को 'आयु' भी कहते हैं। पानी में जो जीवित रहे या पैदा हो, उसे 'कमल' कहते हैं। पत्रअक्षि अर्थात् आँखों की पलक को पत्र कहते हैं। रामः अर्थात् राजीवलोचन। रामः कमल जैसी आँखों वाले थे, इसलिये उनका नाम 'राजीवलोचन' पड़ा था।

कर्ण शब्द का नाम

उत्कृत्य कवचं देहा-दसृग् दग्धं च यत्पुरा ।
इन्द्राय दत्तवान्कर्ण-स्तेन वैकर्त्तनः स्मृतः ॥११५॥

अर्थ - प्राचीन काल में जो कर्ण ने अपने शरीर से खौलते हुये खून और कवच को निकाल कर; इन्द्र के लिए दे दिया था, इसलिए कर्ण का नाम 'वैकर्त्तन' जानना चाहिए।

अग्नि और भीम शब्द के नाम

तीक्ष्णश्चेव प्रचण्डश्च, वृको नामानलो मतः ।
स पाण्डवस्य उदरे, तेन भीमो वृकोदरः ॥११६॥

अर्थ - तीक्ष्ण, प्रचण्ड और वृकः (पुं०); ये ३ नाम 'अनल' अर्थात् अग्नि के हैं। वह अग्नि; भीम-पाण्डव के उदर में थी, इसलिए उन्हें 'वृकोदर' कहते हैं।

पुण्यश्लोक और युद्धशौण्ड शब्द के नाम

यस्य श्रुति सुखावाणी, पुण्यश्लोकः स उच्यते ।
यः खेटी चानिवर्त्ती च, युद्धशौण्डः स उच्यते ॥११७॥

अर्थ – जिनकी वाणी कानों को सुखकर होती है, वह 'पुण्य-श्लोक' कहलाता है। जो ढाल को धारण करने वाला और युद्ध से कभी नहीं लौटता है, उसको 'युद्धशौण्ड' कहते हैं।

समूह शब्द के नाम

महा-संसर्ग संघातं, महेष्वासं प्रचक्षते ।
स्व-विक्रमैस्तापयेच्च, परं यूथं च तापयेत् ॥११८॥
यूथं तापयेद्यस्तं च, विज्ञेयश्च स यूथपः ।
तस्मादपि च यो वर्यः, स तु यूथप-यूथपः ॥११९॥

अर्थ – बहुत संसर्ग अर्थात् मिलने के संघात को 'महेष्वास' कहते हैं, महा-इषु-आसं अर्थात् महेष्वासं। अपने पौरुष से जो दूसरों के समूह हो सन्तप्त करता है और शत्रुओं को भी सन्तप्त करता है तथा यूथ को सन्तप्त करता है, वह यूथप कहलाता है। इनसे भी जो श्रेष्ठ है, वह 'यूथप-यूथप' कहलाता है।

उपमावाची और व्यक्तवादी शब्द के नाम

सिंहान्वितान्तं सौवीरः, स नृसिंह इति स्मृतः ।
ये हि स्पष्ट प्रवक्तारो, मतास्ते व्यक्त-वादिनः ॥१२०॥

अर्थ – सिंह के समान अत्यन्त शूर-वीरता जिसके पास है, उस मनुष्य को नृसिंह कहते हैं। 'नृ' शब्द के आगे 'सिंह' शब्द जोड़ देने से उस व्यक्ति को प्रमुख या श्रेष्ठ समझा जाता है, **जैसे**– नृसिंह; 'मनुष्यों' में श्रेष्ठ।

स्पष्ट बोलने वाले को 'व्यक्तवादी' (पुं०) कहते हैं।

यम और मन्द शब्द के नाम

यो यमित्थं च नाम्नाति, स कीनाश इति स्मृतः ।
योऽप्रबुद्धोऽल्पबुद्धिश्च, स तु मन्द इति स्मृतः ॥१२१॥

अर्थ – 'यम' शब्द का प्रयोग 'कीनाश' अर्थ में जानना चाहिए। कीनाश अर्थात् मृत्यु और कृष्ण के अर्थ में भी आता है।

अप्रबुद्ध (पुं०), अल्पबुद्धि या अज्ञानी; ये २ नाम 'मन्द' शब्द के होते हैं।

कृतघ्न और अध्यात्म शब्द के नाम

उपकारं तु यो हन्ति, स कृतघ्न इति स्मृतः ।
हर्षे गर्वे सुखे खेदे, वृद्धौ च प्रतिभासते ॥१२२॥
स्नेह भाग्यक्षये चैव, मन्दशब्दो निगद्यते ।
नातीत्य वर्तते यत्र, तदध्यात्मं प्रचक्षते ॥१२३॥

अर्थ - कृतं हन्ति इति कृतघ्नः अर्थात् उपकार करने वाले व्यक्ति के उपकार को भूल जाने वाले व्यक्ति को 'कृतघ्न' कहते हैं।

हर्ष, गर्व, सुख, खेद, वृद्धि, स्नेह और भाग्यक्षय; इन ७ अर्थों में 'मन्द' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

जो आत्म स्वरूप को छोड़कर बाहर न जाए, उसे 'अध्यात्म' (अ०) कहते हैं।

समाधि और दान्त शब्द के नाम

चेतसश्च समाधानं, समाधि-रिति गद्यते ।
सर्व क्लेश विनिर्मुक्तो, स हि दान्त इति स्मृतः ॥१२४॥

अर्थ - जिसके मन का समाधान हो गया, उसे 'समाधि' (पुं०) कहते हैं। सर्व क्लेशों से रहित व्यक्ति को 'दान्त' (पुं०) कहते हैं।

समाधिस्थ शब्द के नाम

निर्ममो नि-रहङ्कारो, विज्ञेयः छिन्न-संशयः ।
प्रदाता देश-कालज्ञः, समाधिस्थः स उच्यते ॥१२५॥

अर्थ - निर्मम, निरहंकार, छिन्न-संशय अर्थात् संशय से रहित, प्रदाता अर्थात् प्रकृष्ट दानी और देश-काल के व्यवहार को जानने वाला; ये ५ 'समाधिस्थ' (पुं०) शब्द के अर्थ जानना चाहिए।

मन्द, मुखर और कीटक शब्द के नाम

मुखरोऽल्पमति-र्यस्तु, सक्रोधश्चैव कीटकः ।
वृत्ति-र्यत्र तु गृह्यानां, परोक्षे बहिः तत्क्रिया ॥१२६॥

अर्थ - अल्पमति अर्थात् मन्द बुद्धि, बहुत बोलने वाला और मुखिया; 'मुखर' (पुं०) कहलाता है। सक्रोध अर्थात् क्रोधी पुरुष को 'कीटक' कहते हैं। जहाँ पर ग्रहस्थों का आचरण परोक्ष में प्रगट होता है, वह क्रिया कीटक कहलाती है।

प्रीति का लक्षण

आहार-व्यवहारेषु, सा प्रीति-र्निरुपस्करा।
परस्परं स्वदारेषु, सतां येषां प्रवर्तते ॥१२७॥

अर्थ - आहार, व्यवहार तथा स्व-स्त्री में; सज्जन पुरुषों का परस्पर जो राग होता है, उसे निरुपद्रव 'प्रीति' कहते हैं।

ख्याति का लक्षण

विश्रम्भात् प्रणयाद्-वापि, सा प्रीति-र्निरुपद्रवा ।
यशः ख्याति-रिति प्रोक्तं, तद्योगात् प्राहु-रुच्यते ॥१२८॥

अर्थ - विश्वास से और स्नेह से वह निरुपद्रव 'प्रीति' होती है। निरुपद्रव प्रीति के निमित्त से भी 'यशः' (न०) अर्थात् ख्याति होती है।

उदारता का लक्षण

कीर्ति ख्याति यशोयोगाद्-भगवान्निह चोच्यते ।
प्रियदानेषु यः शुद्धः, स उदार इति स्मृतः ॥१२९॥

अर्थ - कीर्ति, ख्याति और यश के योग से वह पुरुष; 'भगवान्' कहा जाता है और जो शुद्ध-दान में निपुण है, वह 'उदार' कहलाता है।

रजस्वला तु या नारी, सा चोदक्या प्रकीर्तिता ।
प्रीतिर्भाव क्रिये स्वच्छ, रक्षा लिंगि तनुं वपुम् ॥१३०॥

अर्थ - रजस्वला स्त्री को उदक्या (स्त्री०) कहते हैं। ऐसी स्त्री से अपनी इन्द्री अर्थात् लिंग, तनु-वपु अर्थात् सूक्ष्ममन की रक्षा करके; स्वच्छ भाव से प्रीति करें अर्थात् ग्लानि न करें।

तेज शब्द के नाम

तेजो रेतसि दीप्तौ, तपो हि स्याद्-वृषार्थकः ।
योऽन्यजातो हनो जीवः, स शरारु इति स्मृतः ॥१३१॥

अर्थ - रेतस् अर्थात् अग्नि, दीप्ति अर्थात् किरण और तप अर्थात् धर्म; ये ३ अर्थ 'तेज' (न०) शब्द के जानना चाहिए। जो अन्य से उत्पन्न हुआ है, वह जीव 'हन' कहलाता है और उसे 'शरारु' भी कहते हैं।

नास्तिक शब्द के नाम

मिथ्यादृष्टि-रहंमानी, नास्तिकः सः प्रकीर्तितः ।

अर्थ - मिथ्यादृष्टि और अहंकारी; ये २ अर्थ 'नास्तिक' (पुं०) शब्द के होते हैं।

षड्वद शब्द के नाम

कामः क्रोधश्च वै पूर्वे, लोभोऽसत्यं च मध्यमे ॥१३२॥
अन्ते मोहो विषादश्च, यस्य ज्ञेयः स षड्वदः ।

अर्थ - जिसके; पहले काम और क्रोध हो, मध्य में लोभ और असत्य हो और अन्त में मोह और विषाद हो, उसे 'षड्वद' जानना चाहिए ।

अमृत और गोलक शब्द के नाम

अमृते जारजः कुण्डो, मृते भर्त्तरि गोलकः ॥१३३॥

अर्थ - जारज और कुण्ड; इन २ अर्थों में अमृत (न०) शब्द जानना चाहिए। जिस बर्तन में अमृत रखा जाता है, उसे 'कुण्ड' कहते हैं। मरण और भर्त्ता; इन २ अर्थों में 'गोलक' (पुं०) शब्द जानना चाहिए।

कुण्डाशी एवं परचित्त शब्द का नाम

अनयो-र्योऽन्न-मश्नाति, स कुण्डाशी निगद्यते ।
भ्रूणस्त्री गर्भिणी बाला, ब्राह्मणी ब्रह्म जीविनी ॥१३४॥
परचित्ते यवीयान् योः, ज्येष्ठ पत्नीं परामृशन् ।
यः पश्चिमश्च ज्येष्ठोऽपि, परचित्तः स उच्चते ॥१३५॥

अर्थ - उपर्युक्त पद में अमृते-मृते; इन दोनों में जो अन्न को खाता है, वह 'कुण्डाशी' कहलाता है। गूढ़ गर्भ धारण करने वाली स्त्री अर्थात् व्यभिचारिणी स्त्री, गर्भ धारण करने वाली कन्या, ब्रह्म उपासक ब्राह्मिणी स्त्री, जो दूसरों के चित्त में जो.. .... हो, जो बड़ी पत्नी से सलाह लेता है, जो ज्येष्ठ होते हुए

भी उसे 'परचित्त' कहते हैं।

वस्त्रों के भेद

पुष्पजं क्षोमजं चर्म्म-कोशजं भर्मजं तथा ।
गुणजञ्च समुद्दिष्टं, तद्-भेदा वस्त्रजातिषु ॥१३६॥

अर्थ - पुष्पजं अर्थात् पुष्प से उत्पन्न वस्त्र, क्षोमजं अर्थात् रेशम से उत्पन्न वस्त्र, चर्मकोशजं अर्थात् चर्म से उत्पन्न वस्त्र, भर्मजं अर्थात् स्वर्ण से उत्पन्न वस्त्र, गुणजं अर्थात् डोरी या धागा से बुना हुआ वस्त्र है, इस प्रकार से तैयार हुये 'वस्त्र' के ५ भेद जानना चाहिए।

स्त्री के भेद

बिम्बा-रक्ताधरा या स्त्री, बिम्बोष्ठीं तां विनिर्द्दिशेत्।
या स्यात् संक्रीडन-परा, ललनां तां विनिर्द्दिशेत् ॥१३७॥

अर्थ - जिस स्त्री के ओष्ठ लाल हों, उसको 'बिम्बोष्ठी' (स्त्री०) कहते हैं। जो स्त्री; क्रीड़ा करने में तत्पर रहती है, उसे 'ललना' (स्त्री०) कहते हैं।

वरवर्णिनी का स्वरूप

दूर्व्वाकाण्ड प्रतीकाशा, कुम्भौ यस्यांस्तनू कुचौ ।
सर्वरूप विविक्ताङ्गी, सा भवेद्-वरवर्णिनी ॥१३८॥

अर्थ - जिस स्त्री का शरीर; घास के पूले के समान, कुच; कुम्भ के समान हों और सर्वरूप से सचित्र जिसका अंग हो, उसे 'वरवर्णिनी' कहते हैं।

सुन्दर स्त्री शब्द के नाम

लावण्य युक्ता या नारी, ललितां तां विनिर्द्दिशेत् ।
या मत्ता मत्तवज्ज्योतिः, सा ज्ञेया मत्तकाशिनी ॥१३९॥

अर्थ - लावण्य से युक्त जो स्त्री है, उसे 'ललिता' कहते हैं। मस्त हाथी के समान चाल वाली स्त्री को 'मत्तकाशिनी' कहते हैं।

अन्न शब्द के नाम

भूरिश्च भूरि-मुद्दिष्टं, अन्नं श्रव इति स्मृतम् ।
भूरिश्रवो ददातीह, तस्माद्-भूरिश्रवो हि सः ॥१४०॥

अर्थ - भूरिः (पुं०), भूरिं (न०); अर्थात् बहुत, अन्नं अर्थात् श्रव ऐसा माना है और बहुत अन्न को देने वाले को 'भूरिश्रव' कहते हैं।

लोहिग्रीव और रावण का लक्षण

चतुष्पाद् विंशतिभुजो, लोहितग्रीव एव च ।
निसर्गाद्-दारुणात् क्रूरा-द्रवणाद्-रावणः स्मृतः ॥१४१॥

अर्थ - जिसके ४ पैर और २० भुजायें होती हैं, वह लोहितग्रीव है तथा स्वभाव से दारुण अर्थात् अत्यन्त क्रूर और प्राणियों को रुलाने वाला होने से 'रावण' कहलाता है।

रोषणा या भवेन्नारी, भामिनीं तां विनिर्द्दिशेत् ।

अर्थ - जो महिला; क्रोध करती है, उसे 'भामिनी' कहते हैं।

न्यग्रोध का लक्षण

न्यग्रोध लक्षणं विद्याद्-दधाना परिमण्डलम् ॥१४२॥
ताभ्या-मुपेता वनिता, न्यग्रोध-परिमण्डला ।

अर्थ - न्यग्रोधः (पुं०); लम्बाई का एक नाप, इसकी लम्बाई उतनी होती है, जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से होती है। परिमण्डल अर्थात् श्रेष्ठ स्त्री की परिभाषा—

स्तनौ सुकठिनौ यस्या, नितम्बे च विशालजा ।
मध्ये क्षीणा भवेद्या सा, न्यग्रोध-परिमण्डला ॥ क्षेपक ॥

अर्थ- जिस स्त्री के दोनों स्तन कठोर हों, नितम्ब विशाल हों, कमर पतली हो, वो 'न्यग्रोध-परिमण्डला' नाम की स्त्री है। न्यग्रोध और परिमण्डल से जो सहित हो, उसे न्यग्रोध-परिमण्डला कहते हैं।

राजीव-लोचन की परिभाषा

तत्तुल्ये चाक्षिणी यस्याः, सा स्त्री राजीव-लोचना ॥१४३॥

अर्थ - उपर्युक्त लक्षण से युक्त, कमल के समान जिसकी आँखें हों, उस स्त्री को राजीव-लोचना कहते हैं।

वर्ण-प्रमाण निर्घोषो-ऽछिन्न सम्पद्भि-रन्वितः ।
राजीव मन्ये शंसन्ति, स्निग्ध वर्ण सितासितम् ॥१४४॥

बलिभि-र्यास्त्रिभि-र्युक्ता, शङ्खकण्ठी उदाहृता।
किञ्चिदुत्तर-तद्योगात्-सीता राजीवलोचना ॥१४५॥

अर्थ - जो वर्ण प्रमाण है, निघोष अर्थात् कोलाहल रहित है, अछिन्न अर्थात् छिले नहीं हैं पैर जिसके; ऐसे पैरों से सहित है, राजीव अर्थात् श्रीराम द्वारा मान्य, प्रशंसनीय है, स्निग्ध अर्थात् चिकने, वर्ण सितासितम् अर्थात् श्वेत और काला रंग सहित है, कण्ठ; शंख के समान त्रिबली से सहित है। वह किञ्चित् उत्तर अर्थात् कुछ श्रेष्ठ योग से सीता; राजीव लोचन है।

वस्तु शब्द के नाम

---जराकराकारं स्यन्द,-नाग्रमिवाग्रतः।
वस्त्वेति तज्ज्ञेयं तस्यैवाग्रं ॥१४६॥
विषमाक्षदरा एते ज्ञेयाग्रं तैः विसंस्थिताः।

अर्थ - अर्थ स्पष्ट नहीं है।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

भार्या शब्द के नाम

ग्रहणे धारणे सामे, वाहने धर्म-संयुता ॥१४७॥
रमणे क्रीणने सङ्गे, भार्या नाम प्रवर्त्तते।

अर्थ - ग्रहण, धारण, साम, वाहन, धर्म सहित, रमण, क्रीड़ा, संग; इतने अर्थों में 'भार्या' (स्त्री०) शब्द आता है।

अग्नि एवं सूर्य शब्द के नाम

तप्तं गर्म संयुक्तं, तत्तथालिनमुच्यते।
मूढतायां सविद्यायां, सप्ताश्वस्त्वंशुमालिनी ॥१४८॥

अर्थ - जो तपी हुई गर्मी से युक्त है, उसे अनिल कहते हैं। अंशुमाली अर्थात् सूर्य का नाम है (कवि सम्प्रदाय के अनुसार सूर्य के सात घोड़े होते हैं)। (पूर्ण अर्थ स्पष्ट नहीं है)

कोटरस्था जन्तु शब्द के नाम

कोटरस्था इति ज्ञेयाः, सर्प्प कीट खगादयः ॥१४९॥

अर्थ - कोटरस्थाः (पुं०); सर्प, क्रीड़ा, खग अर्थात् पक्षी आदि जीवों को कोटरस्थाः कहते हैं, क्योंकि ये जानवर वृक्षों की कोटरों में निवास करते हैं, इसलिये ये कोटरस्था कहलाते हैं।

पल्लव शब्द के नाम

आताम्र-पल्लवो यस्तु, वृक्षाणा-मचिरोद्गमः।
सौकुमार्य किसलयं, कोमलत्वं च तत्स्मृतम् ॥१५०॥

अर्थ - जिन वृक्षों के नवीन लाल कोंपल निकली हों, उसे 'पल्लव' कहते हैं। उसे सुकुमार, किसलय और कोमल जानना चाहिए।

दूरी नापने के यन्त्र एवं प्रस्थ शब्द का नाम

शतानां च चतु-र्हस्तं, नल्वं तदिह-संज्ञितम् ।
कुम्भो वाहः प्रस्थः समं, नल्व इति विधीयते ॥१५१॥

अर्थ - दूरी मापने का नाप, जो ४०० हाथ लम्बा हो, उसे नल्व (न०) कहते हैं। कुम्भ अर्थात् मिट्टी का घड़ा, वाह अर्थात् धारण करने वाला या ले जाने वाला, प्रस्थ अर्थात् लकड़ी का वह पात्र, जिससे अनाज नापा जाता है, सम अर्थात् मान; इतने अर्थ 'नल्व' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

जंगल शब्द का नाम

विपिनं शून्य-मित्युक्तं, विपिनं गृहमेव च ।

अर्थ - शून्य अर्थात् एकान्त स्थान या जंगल और गृह अर्थात् घर; ये २ अर्थ 'विपिन' (न०) शब्द के होते हैं।

वर्फ, प्रदोष एवं निशीथ का लक्षण

रुक्म-वर्ण्णं च वामं च, दर्शनीयार्थ-वाचकः ॥१५२॥
सर्वार्थश्चाप्युवर्णश्च, पानीयं शीत-मुच्यते ।
नीहारं शीत-मित्युक्तं, प्रदोषान्तो निशीथकः ॥१५३॥

अर्थ - चाँदी का रंग, वाम, दर्शनीय अर्थ वाचक, सर्व अर्थ और समूह से आने वाली सर्दी, नीहारं (न०); शीतं अर्थात् 'वर्फ' कहा जाता है। रात्रि

के प्रारम्भ को 'प्रदोष' (पुं०) कहते हैं। प्रदोष अर्थात् रात्रि के अन्त को 'निशीथकः' कहते हैं।

इति महाकवि श्रीधनञ्जयकृते निघण्टुसमये शब्द संकीर्णे
अनेकार्थ प्ररूपणे द्वितीय परिच्छेदः।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

एकाक्षरी कोशः

अमर कवि कृत

विश्वाभि-धान कोशानि, प्रविलोक्य प्रभाष्यते ।
अमरेण कवीन्द्रेणै-काक्षर-नाममालिका ॥१॥

अर्थ - अमर कवि के द्वारा विश्वाभिधान कोश को देखकर; यह एकाक्षर नाममालिका कही जाती है।

अः कृष्ण आः स्वयम्भू-रिः, काम ई श्री-रुरीश्वरः ।
ऊ रक्षणः ऋ ॠ ज्ञेयौ, देवदानव-मातरौ ॥२॥

अर्थ - अ अर्थात् कृष्ण, आ अर्थात् स्वयम्भूः, इ अर्थात् काम, ई अर्थात् श्री या लक्ष्मी, उ अर्थात् ईश्वर, ऊ अर्थात् रक्षक, ऋ अर्थात् देवदानव या एक राक्षस और ॠ अर्थात् देवमाता; इन २ अर्थों में क्रमशः ऋ, ॠ शब्द को जानना चाहिए।

ऌ-र्देवसू-र्ॡ-र्वाराहि, भवेदे-र्विष्णु-रैः शिवः ।
ओ-र्वेधा औ-रनन्तः स्या-दं ब्रह्मपरं अः शिवः ॥३॥

अर्थ - ऌ अर्थात् देव, ॡ अर्थात् वार अर्थात् पानी, अहि अर्थात् सर्प; ये २ अर्थ ॡ शब्द के होते हैं। ए अर्थात् विष्णु, ऐ अर्थात् शिवः अर्थात् शंकर, ओ अर्थात् वेधा या ब्रह्मा, औ अर्थात् अनन्त, अं अर्थात् परमब्रह्म, अः अर्थात् शिव; ये ६ स्वर इतने अर्थों में आते हैं।

को ब्रह्मात्म प्रकाशार्के, कः स्याद्-वायु यमाग्निषु ।
कं शीर्षे सुसुखे कुस्तु, भूमौ शब्दे च किं पुनः ॥४॥

अर्थ - ब्रह्मा, आत्मा, प्रकाश, सूर्य, वायु, यम अर्थात् मृत्यु और अग्नि; ये ७ अर्थ 'क' (पुं०) शब्द के हैं। शीर्ष अर्थात् शिर, अच्छा सुख; ये २ अर्थ 'कं' (न०) शब्द के हैं। पृथ्वी और शब्द; इन २ अर्थों में 'कु' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। किं अर्थात् 'पुनः' अर्थ में जानना चाहिए ।

स्याद्-क्षेप निन्दयोः प्रश्ने, वितर्के च ख-मिन्द्रिये ।
स्वर्ग्गे व्योम्नि मुखे शून्ये, सुखे संविदि खो रवौ ॥५॥

अर्थ - क्षेप, निन्दा या आक्षेप, प्रश्न, वितर्क, इन्द्रिय, स्वर्ग, आकाश, मुख, शून्य, सुख, संविदि अर्थात् ज्ञान (पुं०) और सूर्य; इतने अर्थों में 'खं' (न०) शब्द का प्रयोग होता है।

गस्तु गातरि गन्धर्वे, गा गीतौ गो विनायके ।
स्वर्गे दिशि पशौ वज्रे, भूमा-विन्दौ जले गिरि ॥६॥

अर्थ - गाता अर्थात् गाने वाला और गन्धर्व; ये २ अर्थ 'गः' (पुं०) शब्द के होते हैं। विनायक अर्थात् गणेश, स्वर्ग, दिशा, पशु, वज्र, भूमि, इन्दु अर्थात् चन्द्रमा, पानी, गिरि अर्थात् पर्वत; ये ९ अर्थ 'गो' शब्द के जानना चाहिए।

घस्तु सुघटीशे च घा, किं-किं-किण्या च घु-र्ध्वनौ।
ङं मञ्जने ङो वृषभे-जिने चः चन्द्र-चोरयोः ॥७॥

अर्थ - सुघट, अच्छा और ईश अर्थात् स्वामी; ये ३ अर्थ 'घः' (पुं०) के होते हैं। किंकिंकिणी अर्थात् क्षुद्रघण्टी की आवाज; ये 'घुः' (पुं०) अर्थ में है। मञ्जन या साफ करना; ये 'ङं' (न०) अर्थ में है, वृषभ जिन अर्थात् आदिनाथ; ये 'ङः' (पुं०) अर्थ में है। चन्द्रमा और चोर; इन २ अर्थों में 'चः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

चः सूर्ये कच्छपे छं तु, निर्मले जस्तु जेतरि ।
विजये जेतसि वाचि, पिशाच्यां जिः जवेऽपि च ॥८॥

अर्थ - सूर्य और कच्छप; ये 'चः' (पुं०) अर्थ में है। निर्मल या स्वच्छ; ये 'छं' (न०) अर्थ में है। जेता या जीतने वाला और विजय, जेतस अर्थात् किरण, वचन और पिशाची अर्थात् राक्षसी; ये ५ 'जः' (पुं०) अर्थ में है, जव अर्थात् वेग; ये 'जिः' (पुं०) अर्थ में है।

झो नष्टे रवे वायौ, ञो गायने घर्घर-ध्वनौ ।
पृथिव्यां करटे च ठो, ध्वनौ ठो महेश्वरे ॥९॥

अर्थ - नष्ट, सूर्य, वायु; इन ३ नामों का प्रयोग 'झ' (पुं०) शब्द से होता है। गायन, घर्घर की ध्वनि; ये २ अर्थ 'ञ' (पुं०) शब्द के होते हैं। पृथिवी, करट अर्थात् हाथी का गण्डस्थल, कुसुम्भ का फूल या कौवा या

पतित ब्राह्मण; ये ५ अर्थ 'टं' (न०) शब्द के होते हैं। ध्वनि और महेश्वर; ये २ अर्थ 'ठ' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

शून्ये बृहद्-ध्वनौ चन्द्र, मण्डले डं शिवे ध्वनौ।

अर्थ - ९वें श्लोक के चतुर्थ पाद में कहे हुए 'ठ' शब्द के निम्नलिखित अर्थ और होते हैं, शून्य, बृहद्ध्वनि अर्थात् तेज आवाज और चन्द्रमण्डल, चन्द्रबिम्ब; इन ४ अर्थों में 'ठः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

शिव और ध्वनि अर्थात् आवाज; ये २ अर्थ 'डम्' (न०) शब्द के जानना चाहिए।

ढो भये निर्गुणे शब्दे, ढक्कायां णस्तु निश्चये ॥१०॥

अर्थ - भय, निर्गुण, ढक्का का शब्द; इन ३ अर्थों में 'ढ' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। निश्चय और ज्ञान; इन २ अर्थों में 'ण' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

ज्ञाने तस्तस्करे क्रोड-पुंच्छयोस्ता पुन-र्दया ।
थो भी त्राणे महीध्रे दं, पत्न्यां दा दातृ-दानयोः ॥११॥

अर्थ - 'ण' अर्थात् ज्ञान ऊपर के श्लोक में कहा गया है। तस्कर अर्थात् चोर, क्रोड अर्थात् सूअर, पुच्छ अर्थात् पूँछ; इन ३ अर्थों में 'तः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। ये 'ता' (स्त्री०) शब्द; दया अर्थ में है। भी अर्थात् भय, त्राण अर्थात् रक्षा और पर्वत; इन ३ अर्थों में 'थः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। ये 'दं' (न०) शब्द; पत्नी अर्थ में है। दाता और दान; इन २ अर्थों में 'दा' (स्त्री०) शब्द प्रयोग होता है।

बन्धे च धा गृहे गुह्ये, केशे धातरि धी-र्मतौ ।
धू-र्भार-कम्प-चिन्तासु, नो नरे बन्धु बुद्धयोः ॥१२॥

अर्थ - बन्धन में, घर में छिपाने योग्य, केश अर्थात् बाल, धाता अर्थात् ब्रह्मा; इन ४ अर्थों में 'धा' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। भार, कम्पन, चिन्ता; इन ३ अर्थों में 'धूः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। मति और बुद्धि; इन २ अर्थों में 'धीः' (स्त्री०) शब्द प्रयोग होता है। नर अर्थात् मनुष्य, बन्धु और बुद्धि; इन ३ अर्थों में 'न' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

निस्तु नेतरि नुः स्तुत्यां, नौः सूर्ये पस्तु पातरि।
पावने जलयाने च, फो झंझा जलफेनयोः ॥१३॥

अर्थ - नेता अर्थ में 'निः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। स्तुति अर्थ में 'नुः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। नाव और सूर्य अर्थ में 'नौः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। पाता अर्थात् रक्षक, पावन अर्थात् पवित्र और जलयान; इन ३ अर्थों में 'प' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

झंझा अर्थात् आँधी, जलफेन अर्थात् पानी के तीव्र प्रवाह से नीचे गिरने पर उसमें 'फेन' हो जाता है; इन २ अर्थों में 'फ' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

भाः कान्तौ भूर्भवः स्थाने, भीर्भये मः शिवे विधौ।
चन्द्रे शिरसि मा माने, श्रीमात्रो-र्वारणेऽव्ययम् ॥१४॥

अर्थ - कान्ति अर्थ में 'भाः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। भव, ब्रह्मा, स्थान; इन ३ अर्थों में 'भूः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। भय अर्थ में 'भीः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। शिव अर्थात् कल्याण या शंकर, विधि अर्थात् भाग्य या ब्रह्मा, चन्द्रमा और शिर; इन ४ अर्थों में 'म' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

मान अर्थात् नापना, श्रीः अर्थात् लक्ष्मी, मातृ अर्थात् माता, वारण अर्थात् हाथी; इन ४ अर्थों में 'मा' (अ०) शब्द का प्रयोग होता है।

मुः पुंसि-र्बन्धने यस्तु, मात-रिश्वनि यं यशः।
यास्तु यातरि खट्वांगे, याने लक्ष्म्यां च रो धृतौ ॥१५॥

अर्थ - बन्धन अर्थ में 'मुः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। मातरिश्वा अर्थात् हवा अर्थ में 'यः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। यश अर्थ में 'यं' (न०) शब्द का प्रयोग होता है। याता अर्थात् देवरानी या जिठानी, खट्वांग अर्थात् खटिया, यान अर्थात् वाहन और लक्ष्मी; इन ४ अर्थों में 'याः' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। धृति अर्थात् धैर्य, तीव्र, वैश्वानर अर्थात् अग्नि और काम; इन ४ अर्थों में 'रः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। अग्नि शब्द वाचक अर्ध्द श्लोक नीचे है।

तीव्रे वैश्वानरे कामे, राः स्वर्णे जलदे ध्वनौ ।
री भम्रे रुर्भये सूर्ये, ल इन्द्रे चलनेऽपि च ॥१६॥

अर्थ - स्वर्ण, जलद अर्थात् मेघ, ध्वनि अर्थात् आवाज; इन ३ अर्थों में 'राः' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। भ्रम अर्थ में 'री' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। भय और सूर्य; इन २ अर्थों में 'रुः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। इन्द्र, चलन अर्थात् हवा; इन २ अर्थों में 'लः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

लं तैले लीः पुनः श्लेषे, ली भये वो महेश्वरे ।
वः पश्चिम-दिशा स्वामी, व इवार्थे स्मरेऽप्ययम् ॥१७॥

अर्थ - तैल अर्थ में 'लं' (न०) शब्द का प्रयोग होता है। श्लेष अर्थात् आलिंगन अर्थ में 'लीः' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। भय अर्थ में 'ली' शब्द का प्रयोग होता है। महेश्वर, पश्चिम दिशा का स्वामी वरूण और काम; ये ३ अर्थ 'वः' (पुं०) शब्द के होते हैं। 'व' शब्द 'इव' अर्थ में भी प्रयोग होता है, जैसे 'मणी-वोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम' ।

शं शुभे शा तु शोभाया, शी शयने शु निशाकरे ।
षः श्लिष्टे पुन-र्गर्भे, विमोक्षे षः परोक्षके ॥१८॥

अर्थ - शुभ अर्थ में 'शं' (न०) शब्द का प्रयोग होता है। शोभा अर्थ में 'शा' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। शयन अर्थ में 'शी' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। निशाकर अर्थात् चन्द्रमा अर्थ में 'शु' (पु०) शब्द का प्रयोग होता है। इन ४ अर्थों में तालव्य 'श' का प्रयोग होता है। श्लिष्टे अर्थात् आलिंगन, गर्भ अर्थात् गर्भ धारण या मध्य, विमोक्ष अर्थात् छोड़ना और परोक्ष; इन ४ अर्थों में मूर्धन्य 'ष' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

सा लक्ष्म्यां हो निपाते च, हुस्ते दारुणि शूलिनि ।
क्षं क्षेत्र रक्षसीत्युक्ता, माला प्राक् सूरि सम्मता ॥१९॥

अर्थ - लक्ष्मी अर्थ में 'सा' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है। निपात अर्थात् नीचे गिरना, नीचे उतरना, आक्रमण करना, झपटना, कूदना, फेंकना, फेंककर मारना, दागना, आकस्मिक घटना, अनियमितता; एतेः

निपाताः अर्थात् इतने निपात अर्थ में 'हः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। दारुण अर्थात् कड़ा, कठोर, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर, भयानक और शूलिन् (पुं०) शंकर; ये ७ अर्थ 'हु' (पुं०) शब्द के होते हैं। क्षेत्र और रक्षा; ये २ अर्थ 'क्षं' (न०) शब्द के होते हैं। इस प्रकार पूर्वाचार्यों के मतानुसार यह नाममाला कही गई है।

॥ इति एकाक्षरी नाममाला समाप्ता ॥

प्रज्ञाश्रमण मुनि

एकाक्षरी कोशः

कवि पुरुषोत्तम कृत

अकारो वासुदेवः स्या-दाकारस्तु पितामहः ।
पूजायां चापि मांगल्ये, आकारः परिकीर्तितः ।।१।।

अर्थ - अकारः (पुं०); वासुदेव अर्थात् कृष्ण अर्थ में आता है। पितामहः अर्थात् ब्रह्मा, पूजा और मांगल्यवाची; ये ४ अर्थ 'आकारः' (पुं०) शब्द के होते हैं।

इकार उच्यते कामो, लक्ष्मी-रीकार उच्यते ।
उकारः शंकरः प्रोक्त, ऊकारश्चापि लक्षणम् ।।२।।
रक्षणे चार्थ ऊ कार, ऊकारो ब्रह्मणि स्मृतः ।

अर्थ - इकारः (पुं०); काम अर्थ में आता है। ईकारः (पुं०); लक्ष्मी अर्थ में आता है। उकारः (पुं०); शंकर अर्थ में आता है। लक्षण, रक्षण, अर्थ और ब्रह्मा; ये ४ अर्थ 'ऊकारः' (पुं०) शब्द के जानना चाहिए।

ऋकारो देवमाता स्या-दॄकारो दनुजप्रसूः ।।३।।

अर्थ - देवमाता अर्थ में 'ऋकार' (पुं०) शब्द आता है। दनुजप्रसु अर्थात् राक्षस अर्थ में 'ऋकार' (पुं०) शब्द आता है।

ऌकारो देवजातीनां, मातासद्भिः प्रकीर्तितः ।
ॡकारो स्मर्यते दैत्य, जननी शब्द-कोविदैः ।।४।।

अर्थ - देवजाती की माता को एवं सज्जन पुरुष को 'ऌकारः' (पुं०) शब्द से कहते हैं। विद्वानों के द्वारा दैत्यजननी अर्थात् दैत्यमाता को 'ॡकारः' (पुं०) शब्द से कहा जाता है।

एकार उच्यते विष्णु-रैकारः स्यान्महेश्वरः ।
ओकरस्तु भवेद्-ब्रह्मा, औकारेऽनन्त उच्यते ।।५।।

अर्थ - 'एकारः' को विष्णु, 'ऐकारः' को महेश्वर, 'ओकारः' को ब्रह्मा, 'औकारः' को अनन्त कहा जाता है।

अं स्याच्च परमं ब्रह्म, अः स्याच्चेव महेश्वरः ।

अर्थ - 'अं' परमब्रह्म एवं 'अः' महेश्वर के अर्थ में आता है।

कः प्रजापति-रुद्दिष्टः, कोऽर्क वा अनलेषु च ॥६॥
कश्चात्मनि मयूरो च, कः प्रकाशः उदाहृतः ।
कं शिरो जल-माख्यातं, कं सुखे च प्रकीर्तितः ॥७॥
पृथिव्यां कुः समाख्यातः, कुः पापेऽपि प्रकीर्तितः ।

अर्थ - प्रजापति अर्थात् ब्रह्मा, सूर्य, अनल अर्थात् अग्नि, आत्मा, मयूर और प्रकाश; इतने अर्थों में 'कः' (पुं०) शब्द आता है। शिर, जल, सुख; इतने अर्थों में 'कं' (न०) शब्द आता है। पृथ्वी और पाप; इन २ अर्थों में 'कुः' (स्त्री०) शब्द का प्रयोग होता है।

ख-मिन्द्रिये ख-माकारः, खः स्वर्गेऽपि प्रकीर्तितः ॥८॥
सामन्ये च तथा शून्ये, खशब्दः च प्रकीर्तितः ।

अर्थ - इन्द्रिय अर्थ में 'खं' (न०) शब्द आता है। स्वर्ग अर्थ में 'खः' (पुं०) शब्द आता है। सामान्य और शून्य अर्थ में भी 'ख' शब्द कहा गया है।

गो गवेशः समुद्दिष्टो, गन्धर्वो गः प्रकीर्तितः ॥९॥
गं गीतं गा च गाथा स्याद्-गौश्च धेनुः सरस्वती ।

अर्थ - गवेश अर्थात् साँड या बैल अर्थ में 'गः' (पुं०) शब्द आता है, एवं गाने वाले देवों को 'गन्धर्व' कहते हैं। गीत अर्थात् गाना अर्थ में 'गं' (न०) शब्द आता है। गाथा अर्थ में गा (स्त्री०) शब्द आता है। धेनु अर्थात् गाय और सरस्वती; इन २ अर्थों में 'गौः' (स्त्री०,पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

घा घष्टाय समाख्याता, घो घनश्च प्रकीर्तितः ॥१०॥
घो घष्टा-हननेऽधर्मे, घू घोर्णा घुर्ध्वना-वपि ।

अर्थ - घष्टाय अर्थात् रगड़ना अर्थ में 'घा' (स्त्री०) शब्द कहा है। घन और मेघ; इन २ अर्थों में 'घः' (पुं०) शब्द कहा है। घष्टा अर्थात् रगड़ना, हनन अर्थात् मारना, अधर्म; इन ३ अर्थों में 'घः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है। घोणा अर्थात् नाक या घोड़े का नथुना अर्थ में 'घूः' शब्द आता है। ध्वनि अर्थात् आवाज अर्थ में 'घुः' शब्द का प्रयोग होता है।

ङकारो भैरवः ख्यातो, ङकारो विषयस्पृहा ॥११॥

अर्थ - भैरव अर्थात् भयानक या डरावना या भीषण या भयावह तथा विषयस्पृहा अर्थात् विषयों की इच्छा; इन २ अर्थों 'ङकार' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

चश्चन्द्रमाः समाध्यातो, भास्करो तस्करे मतः।

अर्थ - चन्द्रमा, भास्कर अर्थात् सूर्य, तस्कर अर्थात् चोर; इन ३ अर्थों में 'च' (पुं०) शब्द का प्रयोग माना गया है।

निर्मलं छं समाख्यातं, तरले छः प्रकीर्तितः ॥१२॥

अर्थ - निर्मल या स्वच्छ अर्थ में 'छं' (न०) शब्द आता है। तरल अर्थात् कम्पमान या लहराता हुआ एवं अस्थिर; इन २ अर्थों में 'छ' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

छेदके छः समाख्यातो, विद्वद्भिः शब्द कोविदैः।
जकारो गायने प्रोक्तो, जयने जः प्रकीर्तितः ॥१३॥
जेता जश्च प्रकथितः, सूरिभिः शब्दशासने ।

अर्थ - छः शब्द; छेदने अर्थ में भी आता है, ऐसा विद्वानों ने कहा है। गायन, जयन अर्थात् जीतना, जेता अर्थात् जीतने वाला; इन ३ अर्थों में 'जकार' (पुं०) शब्द आता है, ऐसा व्याकरण शास्त्र में जैनाचार्यों के द्वारा कहा गया है।

खे झकारः च कथितो, नष्टे झश्चोच्यते बुधैः ॥१४॥

अर्थ - खे अर्थात् सूर्य और नष्ट; ये २ अर्थ 'झकार' शब्द के समझना चाहिए।

झकारश्च तथा वायौ, नेपथ्ये समुदाहृतः ।
जकारो गायने प्रोक्तो, जकारो झर्फरध्वनौ ॥१५॥

अर्थ - वायु और नेपथ्य अर्थात् पर्दा; ये २ अर्थ उदाहरण स्वरूप 'झकार' शब्द के जानना चाहिए।

गायन और झरझर ध्वनि; ये २ अर्थ 'जकार' शब्द के जानना चाहिए।

रो धीस्त्र्यां च करके, रो ध्वनौ च प्रकीर्तितः ।

टकारो जनतायां स्याट्-ठो ध्वनौ च शठेऽपि च ॥१६॥

अर्थ - धी अर्थात् बुद्धि, स्त्री और करक अर्थात् ओला और ध्वनि अर्थात् आवाज; इन ४ अर्थों में 'रः' (पुं०) शब्द का प्रयोग किया गया है।

'टः' (पुं०) शब्द जनता का वाची है। 'ठः' (पुं०) शब्द ध्वनि अर्थात् आवाज और शठ अर्थात् मूर्ख का वाची है, अधोलिखित श्लोक में 'ठ' शब्द के और भी अर्थ आए हैं।

ठो महेशः समाख्यात-ष्ठः शून्यः च प्रकीर्तितः ।
बृहद् भानौ च ठः प्रोक्त-स्तथा चन्द्रस्य मण्डले ॥१७॥

अर्थ - महेश, शून्य, बड़ा, भानु अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा का मण्डल; इन ५ अर्थों में 'ठः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

डकारः शंकरे त्रासे, ध्वनौ भीमे निरुच्यते ।

अर्थ - शंकर, त्रास अर्थात् दुख, ध्वनि अर्थात् आवाज और भीम अर्थात् भयंकर; इन ४ अर्थों में 'डकार' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

ढकारः कीर्तियो ढक्का, निर्गुणे निर्धने मतः ॥१८॥

अर्थ - ढक्का अर्थात् डमरु, निर्गुण और निर्धन; इन ३ अर्थों में 'ढकारः' (पुं०) शब्द माना है।

णकारः सूकरे ज्ञाने, निश्चयेते निर्णयेऽपि च ।
तकारः कीर्तितश्चोरे, क्रोडे पुच्छे प्रकीर्तितः ॥१९॥

अर्थ - सूकर अर्थात् सुअर, ज्ञान, निश्चय और निर्णय; इन ४ अर्थों में 'णकार' (पुं०) शब्द आता है।

चोर, क्रोड अर्थात् सूअर, पुच्छे अर्थात् पूँछ; इन ३ अर्थों में 'तकार' (पुं०) शब्द कहा गया है।

शिलोच्चये थकारः स्यात्, थकारो नय-रक्षणे ।

अर्थ - शिलोच्चय, नय और रक्षण; इन ३ अर्थों में 'थकारः' (पुं०) शब्द जानना चाहिए। पत्थरों के ढेर को 'शिलोच्चय' कहते हैं।

दकारोऽभ्रे कलत्रे च-च्छेदे दाने च दातरि ॥२०॥

अर्थ - अभ्र अर्थात् मेघ, कलत्र अर्थात् स्त्री, छेद अर्थात् छेदना, दान

और दाता; इन ५ अर्थों में 'दकारः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

धं धने सघने धः स्याद्-विधातरि मानवश्च ।
धिषणा धीः समाख्याता, धूश्चैवं भार-वित्तयोः ॥२१॥

अर्थ - धन और सघन अर्थ में 'धं' (न०) शब्द आता है। विधाता अर्थात् ब्रह्मा और मनुष्य अर्थ में 'धः' (पुं०) शब्द आता है। बुद्धि अर्थ में 'धीः' (स्त्री०) शब्द आता है। भार, वित्त अर्थात् धन; इन २ अर्थों में 'धूः' (पुं०) शब्द जानना चाहिए।

नेता नश्च समाख्यात-स्तरणौ नः प्रकीर्तितः ।
नकार सौगते बुद्धौ, स्तुतौ वृक्षे प्रकीर्तितः ॥२२॥
नः शब्दः स्वागतो बन्धौ, वृक्षे सूर्ये च प्रकीर्तितः ।

अर्थ - नेता, स्तरणि अर्थात् शय्या, सौगत अर्थात् बौद्धमत वालों को सौगत कहते हैं, बुद्धि, स्तुति, वृक्ष, स्वागत, बन्धु अर्थात् मित्र, वृक्ष और सूर्य; इतने अर्थ 'नः' (पुं०) शब्द के होते हैं।

पः कुवेरः समाख्यातः, पश्चिमे पः प्रकीर्तितः ॥२३॥
पवने पः समाख्यातः, पः स्यात्-याने च पातरि ।

अर्थ - कुवेर और पश्चिम; इन २ अर्थों में 'पः' (पुं०) शब्द आता है। पवन अर्थात् हवा, यान अर्थात् वाहन और पाता अर्थात् रक्षक; इन अर्थों में भी 'पः' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

कफे वाते फकारः स्यात्-तथाऽह्वाने प्रकीर्तितः ॥२४॥
फूत्कारोऽपि च फः प्रोक्त-स्तथा निष्फलभाषणे ।

अर्थ - कफ अर्थात् फेन या श्लेष्मा, वात अर्थात् वायु, आह्वान अर्थात् बुलाना, फूत्कार अर्थात् फुस्कारना और अनर्थक वचन; इन ५ अर्थों में 'फकार' (पुं०) शब्द का प्रयोग होता है।

बकारो वरुणः प्रोक्तो, बलजेव फलेऽपि च ॥२५॥

अर्थ - पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण कहलाता है, बलजा अर्थात् पृथ्वी या सुन्दर स्त्री या एक प्रकार की चमेली अर्थ में, इव अर्थ में, फल अर्थ में; इन अर्थों में 'बकार' शब्द का प्रयोग जानना चाहिए।

वक्षः स्थले च बः प्रोक्तो, गदायां समुदाहृतः ।
नक्षत्रे भं बुधा प्राहु-र्भवने भः प्रकीर्तितः ॥२६॥

अर्थ - वक्षस्थल अर्थात् सीना या छाती और गद अर्थात् रोग; इन २ अर्थों में 'बः' (पुं०) शब्द आता है। नक्षत्र और बुध; इन २ अर्थों में 'भं' (न०) शब्द आता है। भवन अर्थात् महल अर्थ में 'भः' (पुं०) शब्द कहा गया है।

दीप्ति-र्भास्याच्च भू-र्भूमि, भी-र्भयं कथितं बुधैः ।

अर्थ - दीप्ति अर्थ में 'भा' (स्त्री०) शब्द कहा है। भूमि अर्थ में 'भूः' (स्त्री०); शब्द कहा है। भय अर्थ में 'भीः' शब्द है, इस प्रकार विद्वानों ने इनका अर्थ कहा है।

मः शिवश्चन्द्रमा वेधाः, महालक्ष्मीश्च कीर्तिता ॥२७॥

अर्थ - शिव अर्थात् शंकर, चन्द्रमा, वेधाः अर्थात् ब्रह्मा, महालक्ष्मी; इन ४ अर्थों में 'मः' (पुं०) शब्द कहा गया है।

मा च मातरि माने च, बन्धने मः प्रकीर्तितः ।
यशो यः कथितः प्राज्ञै-र्या वायु-रिति शब्दितः ॥२८॥

अर्थ - माता, मान अर्थात् नापना और बन्धन; इन ३ अर्थों में 'मा' (अ०) शब्द कहा गया है। यश के अर्थ में 'यः' (पुं०) शब्द कहा गया है। वायु अर्थात् हवा अर्थ में 'या' (स्त्री०) शब्द कहा गया है।

याने मातरि यस्त्यागे, कथितः शब्द-वादिभिः ।
रश्चा-रोमेऽनिले ब्रह्मौ, भूमावपि धनेऽपि च ॥२९॥

अर्थ - यान अर्थात् वाहन, माता और त्याग; इन ३ अर्थों में 'यः' (पुं०) शब्द को विद्वानों ने कहा है। अरोम अर्थात् रोम रहित व्यक्ति, वायु, ब्रह्मा, भूमि, धन; इन ५ अर्थों में 'रः' (पुं०) शब्द आता है।

इन्द्रिये धनरोधे च, रुर्भये च प्रकीर्तितः ।

अर्थ - इन्द्रिय और धनरोध; ये 'र' शब्द से सम्बन्ध रखते हैं, इसलिए इनको ऊपर के श्लोक के साथ पढ़ना चाहिए। भय और इन्द्रिय अर्थ में 'रुः' (पुं०) शब्द कहा गया है।

लो दीप्तौ धांलश्च भूमौ- भये चाह्लादनेऽपि च ॥३०॥

अर्थ - दीप्ति, धा अर्थात् धातु अर्थ में भूमि, भय, आह्लाद; इन ५ अर्थ में 'लः' (पुं०) शब्द जानना चाहिए। पाणिनीय व्याकरण में दस लकारों की भी 'ल' संज्ञा की है।

लो वाते लवणे च स्याल्-लो दाने च प्रकीर्तितः ।
लः श्लेषे चाशये चैव, प्रलये साधनेऽपि लः ॥३१॥
मानसे वरुणे चैव, लकारः सान्त्वनेऽपि च ।

अर्थ - वायु, लवण अर्थात् नमक, दान, श्लेष अर्थात् आलिङ्गन, आशय, प्रलय, साधन, मानस, वरुण, सान्त्वना; इन १० अर्थों में 'लः' (पुं०) शब्द जानना चाहिए।

विश्च पक्षी निगदितो, गमने विः प्रकीर्तितः ॥३२॥

अर्थ - पक्षी और गमन अर्थ में 'विः' (पुं०) शब्द को जानना चाहिए।

शं सुखं शंकरः श्रेयः, शश्च सीरी निगद्यते ।
शयने शः समाख्यातो, हिंसायां शो निगद्यते ॥३३॥

अर्थ - सुख, शंकर, श्रेयः अर्थात् कल्याण; इन ३ अर्थों में 'शं' (न०) शब्द आता है। सीरी अर्थात् बलभद्र, शयन अर्थात् सोना और हिंसा; इन ३ अर्थों में 'शः' (पुं०) शब्द को जानना चाहिए। सीर अर्थात् हल, सीरं विद्यते सस्य सः सीरी; इन् प्रत्ययान्त है, इसलिए यह बलभद्र का विशेषण है।

षः कीर्तितो युधैः श्रेष्ठे, षच्च गम्भीर लोचने ।
उपसर्गे परोक्षे च, षकारः परिकीर्तितः ॥३४॥

अर्थ - युद्ध, श्रेष्ठ, गम्भीर, लोचन, उपसर्ग और परोक्ष; इन ६ अर्थों में 'षः' (पुं०) शब्द कहा गया है।

सः कोपे वरुणे सः स्यात्-तथा शूलिनि कीर्तितः ।
सा च लक्ष्मी-र्बुधैः प्रोक्ता, गोरी च सः ईश्वरः ॥३५॥

अर्थ - कोप अर्थात् गुस्सा या क्रोध, वरुण (पश्चिम दिशा का स्वामी) तथा शूलिन् अर्थात् शंकर; इन ४ अर्थों में 'सः' (पुं०) शब्द आता है। लक्ष्मी और गोरी; इन २ अर्थों में 'सा' (स्त्री०) शब्द आता है। ईश्वर अर्थ में 'सः'

(पुं०) शब्द आता है, ऐसा विद्वानों ने कहा है।

हः कोषे वारणे हश्च, तथा शूली प्रकीर्तितः ।
हिः पद्यपूरणे प्रोक्तो, हिः स्याद्-धेत्वव-धारणे ।।३६।।

अर्थ - कोष अर्थात् खजाना, हाथी तथा शूली अर्थात् शंकर; इन ३ अर्थों में 'हः' (पुं०) शब्द आता है। पद्यपूरण अर्थात् पादपूर्ति के लिए 'हिः' (पुं०) शब्द आता है। हेतु, अवधारण; इन २ अर्थों में 'हिः' शब्द का प्रयोग होता है।

क्षः क्षेत्रे वक्षसि प्रोक्तो, बुधैः क्षः शब्दशासने ।
क्षिः क्षेत्रे क्षेत्र रक्षे च, नृसिंहे च प्रकीर्तितः ।।३७।।

अर्थ - क्षेत्र अर्थात् स्थान, वक्षः अर्थात् सीना; विद्वानों ने शब्द कोष में 'क्षः' (पुं०) शब्द के इतने अर्थ कहे हैं।

क्षेत्र, क्षेत्र की रक्षा में, नृसिंह अर्थात् मनुष्यों में श्रेष्ठ; इन अर्थों में 'क्षिः' (पुं०) शब्द कहा गया है।

आगमेभ्योऽभि-धानेभ्यो, धातुभ्यः शब्दशासनात्।
एव-मेकाक्षरं नामाभिधानं सुकृतं मया ।।३८।।

अर्थ - आगम से, धातुओं से और शब्दशासन से; यह एकाक्षर नामक कोष मेरे (पुरुषोत्तम कवि) द्वारा किया गया है।

।। इति पुरुषोत्तम कृत एकाक्षरी कोशः ।।

शाक वर्ग

(भाव प्रकाश ग्रन्थ से उद्धृत)

वास्तुकः = बथुआ की भाजी। मेघनाद = चौरई की भाजी। पालक्या = पालक की भाजी। पोतकी या उपोदिकी = पोई की भाजी। यवानीशाकः = अजवायन। प्रपुन्नट या द्रदुध्नपत्र = पमार (पुँवार)। गोजिह्वा = गोभी। कलायशाकः = मटर। शोभाञ्जनः = सहजना। कुष्माण्डः = कुमडा (कद्दू)। अलावुः = तुमडिया। एर्वारुः अर्थात् कर्कटी, त्रपुष, कण्टकि फलं, सुधावासः सुशीतलं; ये सभी नाम 'ककड़ी' के हैं। चीचिण्डः = चचेंडा।

करेला = कारबेल्ली, काठिल्ल, कारवेल्लः। मारिचः = मिर्च। धार्मगवः, पीतपुष्यः, जालिनी, कृतबोधना, राजकोशातकी; ये सभी नाम 'तुरई' के हैं।

महाकोशातकी = घिया-तुरई। पटोलः = परवल। बिम्बी = कुन्दरु। शिम्बी = सेम। कोलशिम्बी = सेमा। शोभाञ्जनफली = सोजना की कोश। वार्त्ताकुः या वार्त्ताकः = भटा। डिण्डिश = ढेंढश। सूरणः = सूरन।

आरुक्, आलुकः, वीरसेनः = आलु। रतालु मेद = घुँईया। लघुमूलकः = छोटीमूली। नेपालमूलकः = बड़ीमूली। गृञ्जनः = गाजर। कोशातकी = गड़ेलू या लोकी। अर्द्रकः = अदरक।

भोजन वर्गः

भक्तः, अन्नः, अन्धः (अन्धस् शब्द) क्रूरः, ओदनः, मिस्सः, दिविद्; ये सभी नाम 'भात' के हैं।

दालिः, दाली; ये २ नाम दाल के हैं।

सूपः = पकी हुई दाल। पर्पटः = पापड़। कृशरः = खिचड़ी। पूकरा = कचोरी। माषवटकः = उड़द का बड़ा। पायसः, परमन्न, क्षीरिका; ये 'खीर' के नाम हैं। सेविका = सिमैयाँ (बिया)। राज्यक्तः = रायता। समिता = मेंदा। काञ्जिक-वटकः = छाँछ में भिगोया हुआ बड़ा। मण्डकः = माँडा। लोपत्री = लोई। अम्लिका-वटकः = इमली के रस में भिगोया

हुआ बड़ा । पर्पटिका = परायठा । लप्सिका = लप्सी, यवागूः = सत्तू। अम्लिका = इमली । रोटिका = रोटी । मुद्ग-वटकः = मँगोड़ा । अङ्गार-कर्कटी = बाँटी (गाँकर) । यवजा-रोटिका = जौ की रोटी । माषजा-रोटिका = धूमसी, झर्झरिका; ये नाम 'उड़द' की रोटी के हैं।

वेढमिका

दालि संस्थापिता तोये, ततोऽपहृत कञ्चुका ।
शिलायां साधु सम्पिष्टा, वेढमिका कथिता बुधैः ।
माष-पिष्टिकया पूर्णा-गर्भी गोधूम चूर्णतः ।
रचिता रोटिका सैवा, प्रोक्ता वेढिमिका तथा ।।

उड़द की दाल को पानी में भिगों कर, शिला पर बाँटकर, उस चूर्ण को आटा में रखकर; जो रोटी बनाई जाती है, उसे वेढमिका कहते हैं।

माष-वटिका = उड़द की बड़ी । कुष्माण्ड-वटिका = कद्दू की बड़ी ।

मुद्ग-वटिका = मूँग की बड़ी ।

अलीकमत्स्य अर्थात् पान पर उड़द की पिट्ठी लगाकर धूप में सुखावें, जब सूख जावे तब टुकड़े पर तेल लगाकर घी में तले, उसे अलीकमत्स्य कहते हैं।

क्वथिका = बेसन (कड़ी)

दालयञ्चूर्णकानां तु, निस्तुषा यन्त्र पेषिता ।
तच्चूर्णं बेसनं प्रोक्तं, पाकशास्त्र-विशारदैः ।।

तुष रहित चनों की दाल को चक्की में पीसने से जो चूर्ण होता है, उसको पाकशास्त्र के ज्ञाता 'बेसन' कहते हैं।

मठ = खुरमा। सम्पावः = पूरन पुड़ी। फेनिका = फेनी। शष्कुली = पूड़ी।

बेसन मोदकः = मुदग का लड्डू। सेविका मोदक = सिमैयों का लड्डू। मुद्ग मोदकः = बूँदी का लड्डू।

धूमसी = मूँग का चूर्ण। मोदकः = लड्डू। कढ़ाह = कढ़ाही। तप्तकः = तवा। झर्झरः = झारा। झर्झरी = झरिया। कुण्डलिनी = जलेबी।

सिता = शक्कर। सितोपल = मिश्री। शर्करा = बूरा। शर्करोदकम् =

सरबत। प्रपानकः = पना। सक्तुः = सत्तू।

धना = (यवास्तु निस्तुषा भृष्टाः, स्मृता धाना इति स्त्रियाम्)

छिलका रहित भुने हुये 'यव' को धाना कहते हैं।

लाजाः = धान के फूला अर्थात् लाई। पृथका-चिपिटः = चिवड़ा।

होलकः = होरा। गेंहूँ और जौ की भुनी हुई बाल को 'होरा' कहते हैं।

दुग्धस्य पक्कस्य पिण्ड प्रोक्तः किलाटकः ॥

नवनीतं = मख्खन। किलाट = खोवा (मावा)। सन्तानिका = मलाई।

इक्षुः वर्ग

इक्षु दीर्घच्छदः प्रोक्त-स्तथा भूमिरसोऽपि च।
गूढमूलोऽसि-पत्रञ्च, तथा मधुतृणः स्मृतः ॥

अर्थ - इक्षुः, दीर्घच्छदः, भूमिरसः, गूढमूलः, असिपत्रं, मधुतृणं; ये सभी 'ईख' के नाम हैं।

कोशकः = काला गन्ना।

धान्य वर्गः

गोधूमः, सुमनः = गेंहूँ। माधूली = पिसी। मुद्गः = मूँग। माषः = उडद, राजभाषाः चपलः, चवलः; ये ३ नाम 'रोंसा' के हैं।

मकुष्ठः, वनमुद्गः, मुकुष्ठकः; ये ३ नाम 'मोंठ' के हैं।

मङ्गल्यकः, मसूरः, मङ्गल्या, मसूरिका; ये ४ नाम 'मसूर' के हैं।

आढकी, तुवरी, शरणपुष्पिका; ये ३ नाम 'अरहर' (राहर) के हैं।

चणकः, हरिमन्थकः, सकलप्रियः; ये ३ नाम 'चना' के हैं।

कलायः, वर्तुलः, सतीनः, हरेणुकः; ये ४ नाम 'मटर' के है।

कुलत्थिका, कुलत्थः; ये २ नाम 'कुलथी' के हैं।

तिलः; यह १ नाम 'तिली' का है।

रामतिलः पीतपुष्पी; ये २ नाम 'रमतिली' के हैं।

अलसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा, क्षुमा; ये ५ नाम 'अलसी' के हैं।

तुवरी, तेवरा अर्थात् छोटी मटर। सिद्धार्थः = पीली सरसों।

सर्षपः, कटुक, स्नेहः, तुन्तुभः, कदम्बकः; ये ५ नाम 'लाल सरसों' के हैं।

राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धः, कुञ्जनिका, सुरी; ये ५ नाम 'राई' के हैं।

क्षुद्रधान्यः, कुधान्यः ये २ नाम 'पसाई चाँवल' के हैं।

कङ्गु, पियङ्गु; ये २ नाम 'काँगनी चाँवल' के हैं और स्त्रीलिंग हैं।

श्यामकः = समा। कोद्रवः, कोरदूषः; ये २ नाम 'कोदों चाँवल' के हैं।

उद्दालः = जङ्गली कोदों। वंशयवः = बाँस के बीज का नाम है।

प्रसाधिका, नीवारः, ऋणान्नं; ये ३ नाम 'निवार' के हैं।

यावनालः = ज्वार। पनेश और यव; ये २ नाम 'जवा' के हैं।

धान्यं, शाली, ब्रीहीः, कमलः, षाष्ठिक; ये ५ नाम 'धान' के हैं।

फल वर्गः

आम्रः, रसालः, सहकारः, कामाङ्गः, मधुदूतः, माकन्दः, पिकवल्लभ; ये ७ नाम 'आम' के हैं। बालाम्रः = कैरी (छोटी अमियाँ)। शुष्काम्रफलं = अमचुर। पक्काम्रः = पका हुआ आम। आमाम्रः = कच्चा आम। आम्रावर्तः = पके हुये आम के रस को कपड़े में फैलायें और धूप में सुखायें, उसको आम्रावर्त कहते हैं, जैसे कहा है —

पक्वस्य सहकारस्य, पटे विस्तारितो रसः ।
धैर्यशुष्को मुहुर्दत्तः, आम्रावर्त इति स्मृतः ॥

आम्रबीजः = आम की गुठली। राजाम्र, टङ्क, आमात्, कामाह्व और राजपुत्रक; ये ५ नाम 'कलमी' आम के हैं। आम = कच्चा आम।

पनस, कण्टकि-फलं, पणश और अतिबृहत्फलं; ये ४ नाम 'कटहल' के हैं।

कदली, वारणा, मोचा, अम्बुसारः, अंशुमतिफलं और रम्भा; ये ६ नाम 'केला' के हैं।

चिर्भटः, धेनुदुग्धं, गोरक्ष और कर्कटी; ये ४ नाम 'कचरियाँ' के हैं। नारिकेर, नारिकेल, लाङ्गली, कूचशीर्षक, दृढ़फलं, महाफलं और श्रीफल; ये ७ नाम 'नारियल' के हैं।

कालिन्द, कृष्णबीजं, कालिङ्ग और सुवर्तुल; ये ४ नाम 'कलींदें' के हैं।

दशाङ्गुलं और खुर्बूजः; ये २ नाम 'खुरबूजा' के हैं।

घोण्टा, पुंगी, पूग, गुणाक, क्रमुक और उद्वेगः; ये ६ नाम 'सुपारी' के हैं।

तालः, लेखपत्रं, तृणराजः और महोन्नतः; ये ४ नाम 'ताड़पत्र' के हैं।

विल्वः, शाण्डिल्यः, शैलूषः, मालूरः और श्रीफलं; ये ५ नाम 'वेल फल' के है।

कपित्थः, दधित्थः और पुष्पफलं; ये ३ नाम 'कैंथा' के हैं।

नारङ्गः, नागरङ्गः, त्वक्स्कन्धः और मुखप्रियः; ये ४ नाम 'नारङ्गी' के हैं।

तिन्दुकः, स्फूर्जकः, काकेन्द्रः, विषतिन्दुः और मर्कटतिन्दुः; ये ५ नाम 'कुचला' के हैं।

फलेन्द्रः, नन्दः, राजजम्बुः और महाफला; ये ४ नाम 'बड़ी जामुन' के हैं।

क्षुद्रजम्बुः, सूक्ष्मपत्रं, नोदयी और जलजम्बुका; ये ४ नाम 'छोटी जामुन' के हैं।

कर्कन्धुः, वदरी, कोलः, आजप्रियः, कुहः और कोलीविषमः; ये ६ नाम 'छोटे बेर' के हैं।

फेनिलः, कुवलः और घोण्टः; ये ३ नाम 'बड़े बेर' के हैं।

सुगन्धमूलः, लवली, पाण्डुः, कोमलः, वल्कतः; ये ५ नाम 'हरफरखेड़ी' के है।

करमर्दः और सुषेणः; ये २ नाम 'करोंदा' के हैं। करमर्दिकः = करोंदी।

प्रियालः, खरस्कन्धः, चारः, बहुवत्कलं, राजादनः, तापसेष्टः और सन्नकद्रुः; ये ७ नाम 'अचार' के हैं। (चिरोंजी वाले अचार)

राजादानः, फलाध्यक्षः, राजन्यः और क्षीरिका; ये ४ नाम 'खिरनी' के हैं।

विकङ्कतः, सुब्रावृक्षः, ग्रन्थिलः, स्वादु-कण्टकः, यज्ञवृक्षः, कण्टकी और व्याघ्रपादः; ये ७ नाम 'कढ़ाई' के हैं।

पद्मबीजः, पद्माक्षः, गालोयः, पद्मकर्कटी; ये ४ नाम 'कमलगट्टा' के हैं।

मङ्खान्नः, पद्मबीजाभः और पानीयफलं; ये ३ नाम 'मखाने' के हैं।

शृङ्गाटकः, जलफलं और त्रिकोणफलं; ये ३ नाम 'सिंघाडे' के हैं।

मधुकः, गुडपुष्पः, वानप्रस्थः, मधुपुष्पं, मधुष्ठलः और मधुलकः; ये ६ नाम 'महुआ' के हैं।

परुषकः, परुषः और अल्पास्थिः; ये ३ नाम 'फालसा' के हैं।

तूतः, स्थूलः, पूगः, क्रमुकः और ब्रह्मदारुः; ये ५ नाम 'अलूत-सुपाड़ी' के हैं।

दाड़िमः, शीतः, उछालः, शेलुः, श्लेष्मातकः, पिच्छिलः और भूतवृक्षः; ये ७ नाम 'रसल्ला' अर्थात् लिसोड़ा के हैं।

पायः, प्रसादः और कतकः; ये ३ नाम 'निर्मली' के हैं।

द्राक्षः, स्वादुफला, मधुरसा, मृद्वीकः, हारहूरा और गोस्तनी; ये ६ नाम 'मुनक्का-दाख' के हैं।

अबीजः और स्वल्प-सेधा; ये २ नाम 'किसमिस' के हैं।

आमाद्राक्षः = बड़े अङ्गूर। आमाबीजः = छोटे अङ्गूर।

भूमिखर्जूरिकः, स्वादी, दुरारोहः, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काकर्कटी और स्वादुमस्तका; ये ७ नाम 'खजूर' के हैं।

खर्जूरी और तरुतोयम्; ये २ नाम 'शराब' के हैं।

सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला, खर्जूरः, वाताद्, वातवैरिन्, नेत्रोपमफलं; ये ७ नाम 'बादाम' के हैं।

सिवितिका-फलम् = सेव। अमृत-फलम् = नासपाती।

पीलु, गुडफलः, स्त्रंसी और शीतफल; ये ४ नाम 'पीलु-फल' के हैं।

पीलु, शैलभवः, अक्षोटः और कर्परालः ये ४ नाम 'अखरोट' के हैं।

बीजपूरो, मातुलिङ्गो, रुचकः और फलपूरकः; ये ४ नाम 'बिजोरा निम्बु' के हैं।

बीजपूर, मधुर और मधु-कर्कटी; ये ३ नाम 'मधु-ककड़ी' के हैं।

जम्बीरी, दन्तशठा, जम्म, जम्मीरः और जम्मलः; ये ५ नाम 'जम्बीर' के हैं।

निम्ब, निम्बुक और निम्बूक; ये ३ नाम 'नींबू' के हैं।

अम्लिका, चक्रिकाम्ली, चुक्रादन्त, शठा, आम्ला, चबिका, चिञ्चा, तिन्तिकिका, तिन्तिडह; ये ९ नाम इमली के हैं।

आमलकः = आँवला (त्रि० लि०)

"वटादि वर्गः"

वट, रक्तफलः, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धजिः, ध्रुवः, क्षीरी, वैश्रवणो, वासो, बहुपाद-वनस्पतिः; ये १० नाम 'वट' वृक्ष के हैं।

उदुम्बरो, जन्तुफलो, यज्ञाङ्गो, हेमदुग्धकः; ये ४ नाम ऊमर वृक्ष के नाम हैं।

काठोम्बरिका, फल्गूः, धनेफला; ये ३ नाम 'कठूमर' वृक्ष के हैं।

प्लक्ष, जटी और पर्कटी; ये ३ नाम 'पाकर' वृक्ष के हैं।

शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतनः, शुकपुष्यः, शुकतरु, मृदुपुष्प और शुकप्रिय; ये ९ नाम 'शिरीष' वृक्ष के हैं।

शल्लकी, गजभक्ष्या, सुबहा और सुरभीरसा; ये ४ नाम 'सलई' वृक्ष के हैं।

महेरुणा, कुन्दरुकी, वल्लकी, बहुसुवा, शिंशिपा, पिच्छिला, श्यामा, कृष्णसारा और सागुरु; ये ९ नाम 'शीशम' वृक्ष के हैं।

कोहा वृक्ष के नाम

कुकुभोऽर्जुन-नामाख्यो, नदी सर्जश्च कीर्तिनः।
इन्द्रेन्दुः वीरवृक्षश्च, वीरश्च धवलः स्मृतः ॥

कुकुभ, अर्जुन, नदीसर्ज, कीर्तिन, इन्द्रेन्दु, वीरवृक्ष, वीर और धवल; ये ७ नाम 'कोहा' वृक्ष के है।

खैर अर्थात् खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावनः, कण्टकी, बालपत्र, बहुशल्य और यज्ञियः; ये ८ नाम 'खैर' वृक्ष के हैं।

बब्बूलः, किङ्किरात, किङ्किण और सपीतकः; ये ४ नाम 'बबूल' वृक्ष के हैं।

अरिष्टक, मांगल्यः, कृष्णवर्ण, साधनः, रक्तबीजः, पीतफेनः, फेनिलः

और गर्भपातकः; ये ८ नाम 'रीठा' वृक्ष के हैं।

तमाल, तापिच्छः, काल-स्कन्धो और अमितद्रुमः; ये ४ नाम 'तमाल' वृक्ष के हैं ।

तूणी, तन्नक, आपीनतुणिक और कच्छका; ये ४ नाम 'तुन' वृक्ष के हैं।

भूर्जपत्रः, भूर्ज, चर्मी-बहुत और वल्कलः; ये ४ नाम 'भोजपत्र' वृक्ष के हैं।

शाल्मलि, मोचा, पिच्छिला, पूरणी, रक्तपुष्मा, स्विरायु, कण्टकाढ़्या और तूलिनी; ये ८ नाम 'सेमर' वृक्ष के हैं।

धवो, नन्दितरुः, स्विरो, गौरों और धुरन्धरः; ये ५ नाम 'धव' वृक्ष के हैं।

भूमीरुह, द्वारदारु, नीरदारु और खरच्छद; ये ४ नाम 'सागोन' वृक्ष के हैं।

मैनार, मदनपूछर्दनः, लेण्डोनटः और पिण्डीतक; ये ५ नाम 'मेनार' वृक्ष के हैं।

"पुष्प वर्गः"

वारिपर्णी और कुम्भिका; ये २ नाम 'काई' पुष्प के हैं।

शैवाल और शैवल; ये २ नाम 'चोई' पुष्प के हैं।

गुलाब, शतपत्री, तारुण्युक्ताकर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गन्धाढ्या, लाक्षा, कृष्णति और मञ्जुली; ये ८ नाम 'गुलाब' पुष्प के हैं।

श्लोपदी, षट्पदा, नन्दा, वार्षिकी और मुक्तबन्धना; ये ५ नाम 'बेला' पुष्प के हैं।

जातिः, जती, सुमना, मालती और राजपुत्रिका ये ५ नाम 'चमेली' पुष्प के हैं।

चेतिका, पीता और स्वर्णजातिका; ये ३ नाम 'पीली-चमेली' पुष्प के हैं।

यूथिकाट, गणिका और अम्बष्ठा; ये ३ नाम 'जुही' पुष्प के हैं।

पीता और हेमपुष्पिका; ये २ नाम 'पीली-जुही' पुष्प के हैं।

वकुलः, मधुगन्धः और सिंहकेसरकः; ये ३ नाम 'मौलसिरी' या 'बकोली' पुष्प के हैं।

कदम्बः, प्रियको, नीपो, वृत्तपुष्पः और हरिप्रियः; ये ५ नाम 'कदम्ब' पुष्प के हैं।

मल्लिका, मदजनित और शीतभीरु, भूपदी; ये ४ नाम 'मालती' पुष्प के हैं।

माधवी, बासन्ति, पुण्ड्रक, मण्डक, अतियुक्त, विमुक्त, कामु और भ्रमरोत्सव; ये ८ नाम 'माधवी-मोतिया' पुष्प के हैं।

केवक, सूचिका-पुष्प, जम्बुक और क्रकचच्छद; ये ४ नाम 'केवड़ा' पुष्प के हैं।

कर्णिकारः, परिव्याथः और पादपोत्पल; ये ३ नाम 'कनेर' पुष्प के हैं।

हेमपुष्प, बञ्जुल, ताम्रपल्लव, कङ्केलि, पिण्डपुष्प, गन्धपुष्प और नट; ये ७ नाम 'अशोक' पुष्प के हैं।

कुन्द, माध्यं और सदापुष्प; ये ३ नाम 'कुन्द' पुष्प के हैं।

तिलकः, क्षुरकः, श्रीमान्, पुरुषश्छिन्न और पुष्पक; ये ५ नाम 'तिलक' पुष्प के हैं।

बन्ध, बन्धुजीव, रक्तो और माध्यह्निक; ये ४ नाम 'दुपहरियाँ' पुष्प के हैं।

दमनक

उक्तो दमनको दान्तो, मुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटो ब्रह्मजटो, विनीतः कलपत्रकः ॥

दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कलपत्र; ये ७ नाम 'दमनक' (पुं०) पुष्प के जानना चाहिए।

'कपूर वर्गः'

जातिफलं, जातिकोशं और मालतीफलम्; ये ३ नाम 'जायफल' के हैं।

जातिफलस्य त्वक् प्रोक्ता, 'जातिपत्री' भिषग्वरैः ।

अर्थ - जायफल की छाल को श्रेष्ठ वैद्य 'जायपत्री' कहते हैं।

लवंग-देवकुसुम, श्रीसंज्ञं और श्रीप्रसूनकम्; ये ४ नाम 'लौंग' के हैं। एला, स्थूला, बहुला, त्रपुरा, भद्रैला बृहदैला, चन्द्रबाला, निष्कुटिः; ये ८ नाम 'बड़ी इलायची' या डौंडा के हैं। इसे डौंढ़ा भी कहते हैं।

त्वक्-स्वादी तु तनुत्विक् स्यात्तथा दारुसिता मता।

अर्थ - त्वक्-स्वादी, तनुत्विक् तथा दारुसिता अर्थात् सफेद लकड़ी; ये ३ नाम 'दाल-चीनी' के हैं।

शुष्ठी, विश्वा, विश्वं, नागर, विश्वभेषजम्, उष्णं, कटुभद्रं, शृङ्गवेर और महौषधम्; ये ९ नाम 'सोंठ' के हैं ।

आर्द्रकं, शृङ्गवेरं स्यात्, कटुभद्रं तथाद्रिका।

अर्थ - आर्द्रक, शृङ्गवेर, कटुभद्र अर्थात् खाने में कटु होने पर भी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद और आद्रिका; ये ४ नाम 'अदरक' के हैं।

मारिचं वेल्लजं कृष्ण-भूषणं धर्मपत्तनम्।

अर्थ - मारिच, वेल्लज, कृष्णभूषण, (कालीत्वक् उसके ऊपर रहती है) और धर्मपत्तन; ये ४ नाम 'कालीमिर्च' के हैं।

यवानिकोग्रगन्धा च, ब्रह्मदर्भाज-मोदिका।

अर्थ - यवानिक, उग्रगन्धा, ब्रह्मदर्भा और अजमोदिका; ये ४ नाम 'अजवायन' के हैं ।

जीरको जरणोऽजाजी-कणा स्याद्-दीर्घ-जीरकः।

अर्थ - जीरक, जरण, अजाजीकण, दीर्धजीरक; ये ४ नाम 'जीरा' के हैं।

धान्यकं धानकं धान्यं, धाना धनियकं तथा।

अर्थ - धान्यक, धानकं, धान्य, धाना, धनियक; ये ५ नाम 'धना' के हैं।

मेथिका मेथिनी मेथिः, दीपनी बहुपत्रिका ।
बोधनी बहुबीजा च, जातिगन्ध फला तथा ॥
वल्लरी कामथा मिश्रा, मिश्रपुष्पा च कैरवह ।

अर्थ - मेथिका, मेथिनी, मेथि, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधनी, बहुबीजा,

जातिगन्ध, फलगन्ध, वल्लरी, कामथा, मिश्रा, मिश्रपुष्पा और कैरवी; ये १४ नाम 'मेथि' के हैं।

सहस्त्रबोधि, जातुकं, वाह्भीकं, हिंगु और रामठम्; ये ५ नाम 'हींग' के हैं।

वच, उग्रगन्ध, गोलोभि और शतपर्विका; ये ४ नाम 'वच' के हैं।

हरिद्रा काञ्चनी पीता, निशाख्या वरवर्णिनी ।
कृमिघ्ना हलदी योषित-प्रिया च विलासिनी ॥

अर्थ - हरिद्रा, काञ्चनी, पीता, निशाख्य, वरवर्णिनी, कृमिघ्ना, योषितप्रिया, विलासिनी, ये ८ नाम 'हल्दी' के हैं।

लशुनस्तु रसोनः स्या,-दुग्र गन्धो महौषधम् ।
अरिष्टो म्लेच्छ-कन्दश्च, यवनेष्टो रसोनकः ॥

अर्थ - लशुन, रसोन, उग्रगन्ध, महौषधं, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, रसोनक, यवनेष्ट (मुसलमानों के लिए इष्ट); ये ८ नाम 'लहसुन' के हैं।

पलाण्डुः यवनेष्ट-श्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।

सफेद होने से इसे 'पलाण्डुः' कहते हैं। मुसलमानों के लिए इष्ट होने से इसे 'यवनेष्ट' कहते हैं। उससे दुर्गन्ध आती है, इसलिए उसे 'दुर्गन्धः' कहते हैं। जिसके खाने से मुँह; दूषित हो जाता है, इसलिए उसका नाम 'मुखदूषित' है।

भंग, गञ्जा, मातुलानी, मादिनी; विजयाजया; ये ५ नाम 'भाँग' के हैं।

आफूक और अहिफेनकम्; ये २ नाम 'अफीम' के हैं।

खसखस और तिलाः; ये २ नाम 'खसखस' के हैं।

तिलभेदः और खसतिलः; ये २ नाम 'पोस्ता' के हैं।

सेन्धवोऽस्त्री शीतशिवं, मणिमन्यं च सिन्धुजम् ।
शाकम्भरीयं कथितं, गुड़ाख्यं रोचकं तथा ॥

अर्थ - सेन्धव, शीतशिव, मणिमन्थ और सिन्धुज अर्थात् समुद्र से उत्पन्न होता है, इसलिये उसको सिन्धुज कहते हैं। ये ४ नाम 'नमक' के हैं। शाकम्भर झील से उत्पन्न होने के कारण इसे साँभर नमक कहते हैं।

गुड़ और रोचक भी इसका नाम है।

सौभाग्यं टङ्कणं क्षारो, धातुद्रावक-मुच्यते ।

अर्थ - सौभाग्य, टङ्कण, क्षारः, धातुद्रावकः; ये ४ नाम 'सुहाग' के हैं।

किरात, तिक्तः, कौरातः, कटुतिक्तः और किरातकः; ये ५ नाम 'चिरायता' के हैं।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

धनञ्जय-नाममालागत शब्दानुक्रमणिका

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
अ		
अंशु	४५	१३
अंकुश	११७	३४
अंस	१००	२८
अंहस्	१३१	३८
अकूपार	२५	८
अक्ष	१२२	३५
	१३०	३८
अक्षि	९९	२८
अक्षौहिणी	८६	२५
अखिल	१९०	५२
अग	११	४
अग्नि	६४	१९
अग्निसूनुः	६६	२०
अग्रज	४३	१३
	११५	३३
अग्रिम	१५७	४४
अघ	१३१	३८
अङ्क	१६८	४६
अङ्ग	३८	११
अङ्गना	३०	९
अङ्गराग	११९	३४
अङ्गीकृत	१९७	५४
अङ्घ्रि	१०३	३०
अङ्घ्रिप	११	४
अचल	८	३
अज	७२	२१
अजर्य	१८७	५१
अजस्त्र	१९२	५३
अजातरिपु	१४७	४१
अञ्जनात्मज	६३	१९
अटनी	७९	२३
अटवी	१३	५
अत्यन्त	१७२	४७
अत्यर्थ	१७२	४७
अदभ्र	१९४	५३
अदितिसुत	५६	१७
अद्भुत	१७३	४७
अद्रि	८	३
अधम	१५४	४३
	१७०	४७
अधर	१०१	३०
अधिप	१०	४
अधोक्षज	७५	२२
अध्वन्	१६३	४५
अनन्तर	१४२	४०
अनन्तात्मन्	७३	२१
अनन्यज	७७	२२
अनभ्राट	१८	६
अनल	६५	१९
अनारत	१९२	५३
अनालम्ब	१३६	३९
अनिमिष	१७	६
अनिमेष	१७	६
अनिल	६२	१९
अनीक	८६	२५

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
अनुकम्पा	११०	३२
अनुक्रोश	११०	३२
अनुग	२९	९
अनुचर	२९	९
अनुज	४२	१३
अनुजा	४३	१३
अनुजीविन्	२९	९
अनुरहस्	१७५	४८
अनेकप	८८	२६
अनेहस्	१२४	३६
अनोकह	११	४
अन्त	९	३
अन्तःकरण	८१	२४
अन्तक	१४६	४१
अन्तरिक्ष	५३	१६
अन्त्य	१२४	३६
अन्त्यकाश्यप	११६	३४
अन्तेवासिन्	४	२
अन्धकार	१४९	४२
अन्वय	१२५	३६
अन्ववाय	१२५	३६
अन्वह	१९२	५३
अन्वित	१६३	४५
अन्वीत	१६३	४५
अह्नाय	१५९	४४
अप्	१५	५
अपघन	३८	११
अपत्य	३९	१२
अपाङ्ग	९९	२८
अपारवार्	२५	८
अप्राज्ञ	१६९	४६
अप्सरोनाथ	५९	१८
अपसर्प	१८१	५०
अबला	३१	१०
अब्ज	५१	१५
अब्धि	२५	८
अभय	२००	५५
अभियोग	१७४	४८
अभिराम	१७९	४९
अभिरूप	१११	३२
अभिलाष	१६२	४५
अभिलाषुक	१७६	४८
अभिसारिका	३५	११
अभीक्ष्ण	१८८	५२
अभ्यर्ण	१४१	४०
अभ्यास	१४१	४०
अभ्यास	१८८	५२
अभ्र	१८	६
अभ्र	५३	१६
अमर	५६	१७
अमर्ष	१०९	३२
अमल	१७३	४७
अमा	१६०	४४
अमित्र	४४	१३
अमृत	१२३	३६
अमृतोद्भव	२५	८
अम्बर	६१	१८
अम्बु	१५	५
अम्बुजानन	१३७	३९
अम्बुधि	१६	६

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
अम्भस्	१५	५
अयस्	१७२	४७
अरण्य	१३	५
अरण्यानीचर	१४	५
अरम्	१७६	४८
अरविन्द	२१	७
अराति	४४	१३
अरि	४४	१३
अरूण	१४९	४२
अर्क	४९	१५
अर्चि	४५	१३
अर्जुन	९३	२७
	१४३	४१
	१५०	४२
अर्णव	२६	८
अर्णस्	१५	५
अर्थ	९५	२७
अर्भक	४०	१२
अर्यमन्	४९	१५
अर्वन्	५२	१६
अर्हत्	११४	३३
अलकानिलय	९६	२७
अलि	८२	२४
अलिप्रभ	१४८	४२
अलीक	१८९	५२
अवदात	१५०	४२
अवद्य	१५३	४३
अवधि	२६	९
अवनि	५	२
अवरज	४२	१३

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
अवलग्न	१४१	४०
अवसथ	१३३	३८
अवसान	१७५	४८
अवश्याय	१८०	४९
अविदूर	१४२	४०
अशनि	१९	१९
अश्लील	१५७	४४
अश्व	५२	१६
अष्टपात्	९०	२६
अष्टापद	९०	२६
	९३	२७
असि	८५	२५
असित	१४८	४२
असुपति	३७	११
असृज्	१९१	५२
अस्तुङ्कार	१९७	५४
अस्त्र	८३	२४
अहंयु	१६९	४७
अहन्	५०	१५
अहन्तोक्ति	११०	३२
अहि	१२८	३७
अहित	४४	१३
अहो	१७३	४७
आ		
आकालिकी	१९	६
आकाश	५३	१६
आकूत	८१	२४
आखण्डल	५७	१८
आगम	४	२
आगार	१३३	३८

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
आचार्य	१११	३२
आजि	८७	२५
आज्ञा	१५५	४३
आज्य	१२३	३६
आतन	१६०	४४
आतपत्र	१९८	५४
आताम्र	१४९	४२
आत्मज	३९	१२
आत्मभू	७३	२१
आत्यन्तिक	१६१	४५
आदेश	१५५	४३
आनन	९८	२८
आनन्त्य	१९४	५३
आनन्द	१०९	३२
आपगा	२४	८
आभरण	११९	३४
आद्य	११५	३३
आम्नाय	१२५	३६
आयुध	८३	२४
आर्या	३४	१०
आलम्व्य	१३६	३९
आलय	१३४	३८
आलभ्य	१६२	४५
आली	४१	१२
आवलि	२७	९
आवास	१३३	३८
आवृत्ति	१९८	५४
आशय	११०	३२
आशा	६१	१८
आशु	१७६	४८
आशुशुक्षणि	६४	१९
आश्चर्य	१७३	४७
आसन	{ ११३	३३
	१३६	३९
आसन्दी	११३	३३
आसन्न	१४१	४०
आसव	१२२	३५
आस्थानापति	११२	३३
आस्पद	१३३	३८
आस्य	९८	२८
आस्वनित	८१	२४
इ		
इन	१०	४
इन्दिरा	७६	२२
इन्दीवर	{ २१	७
	२२	७
इन्दु	४६	१३
इन्दुमौलि	६९	२०
इन्द्र	{ १०	४
	५७	१८
इन्द्रजित्	१३०	३७
इन्द्रिय	१३०	३८
इभ	८८	२६
इरा	१२१	३५
इला	६	२
इषु	७८	२३
इष्ट	३७	११
इष्टा	३३	१०
ई		
ईरित	१०४	३१

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
ईशान	१०	४
ईशितृ	१०	४
ईश्वर	१०	४
ईहामृग	१२७	३७
उ		
उग्र	७०	२०
	१८६	५१
उच्च	१५९	४४
उच्चावच	१५९	४४
उच्चैस्	१५९	४४
उच्छ्रित	१५९	४४
उडु	४८	१४
उत्कट	१८६	५१
उत्कलिका	२७	९
उत्तमाङ्ग	१०४	३१
उत्तराशापति	९६	२७
उत्तानशय	४०	१२
उत्पल	२२	७
उत्प्रेक्षा	१३९	४०
उत्सव	१०९	३२
उत्साह	१७४	४८
उदन्वत्	२७	९
उदर	१०२	३०
उदश्वित्	१२३	३६
उद्गम	८०	२३
उद्ग्रीव	१७०	४७
उद्धत	१६९	४७
उद्धर	१७०	४७
उद्यम	१७४	४८
उद्योग	१७४	४८
उद्वह	४०	१२
उद्वाह	१९२	५३
उन्नत	१५९	४४
उपकण्ठ	२६	९
उपत्यका	९	३
उपमा	१३७	३९
उपमान	१३८	३९
उपल	१७१	४७
उपांशु	१७५	४८
उपेन्द्र	७४	२१
उभय	२	१
उमापति	७०	२०
उरग	१२९	३७
उररीकृत	१९७	५४
उरस्	१०२	३०
उर्वरा	६	२
उर्वी	६	२
उल्का	१९	६
उल्वण	१८६	५१
उष्ट्र	९१	२६
उष्णवारण	१९८	५४
उस्र	४५	१३
ऊ		
ऊरीकृत	१९७	५४
ऊर्जस्	४६	१३
ऊर्जस्विन्	१९६	५४
ऋ		
ऋक्ष	४८	१४
ऋत	१८२	५०
ऋषि	३	१

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
ए		
एकपत्नी	३४	१०
एकपिङ्गल	९५	२७
एकागारिक	१७०	४७
एनस्	१३२	३८
ऐ		
ऐक्षव	८३	२४
ऐरावणाधिप	५९	१८
ऐक्ष्वाकु	११५	३३
ओ		
ओघ	१२५	३६
	१४०	४०
ओष्ठ	१०१	३०
ओषधीश्वर	४७	१४
क		
क	१५	५
	७३	२१
	१०४	३१
ककुप्	६१	१८
कक्ष	१३	५
कक्षा	१३७	३९
कच	१९९	५४
कञ्चुक	१९८	५४
कटाक्ष	९९	२८
कटि (कटी)	१०३	३०
कटिसूत्र	१२०	३५
कटीसूत्र	१२०	३५
कठिन	१५६	४३
कठोर	१५६	४३
कण	७८	२३
कण्ठ	१०१	३०
कण्ठीरव	९०	२६
कदन	८७	२५
कदम्बक	१४०	४०
कद्वद	१६८	४६
कनक	९३	२७
कनीयस्	४३	१३
कन्दर्प	८३	२४
कपर्दिन्	७०	२०
कपालिन्	७०	२०
कपि	१२	४
कपिध्वज	१४३	४१
कबरी	१९९	५४
कमन	१७८	४९
कमनीय	१७८	४९
कमल	२०	७
कम्र	१७८	४९
कर	४५	१३
	१००	२८
करण	१३०	३८
करभ	९१	२६
करवालक	८५	२५
कराङ्गुलि	१००	२८
करिन्	८८	२६
करुण	११०	३२
करेणु	८९	२६
कर्कश	१५६	४३
कर्ण	९८	२८
कर्णशूलिन्	१४५	४१
कर्दम	२०	७

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
कर्पूर	११८	३४
कलङ्क	१५३	४३
कलत्र	३२	१०
कलधौत	९४	२७
कलभ	१०५	३१
कलम	१६४	४६
कलह	८७	२५
	१९१	५२
कलापिन्	१२७	३७
कलाभृत्	४७	१४
कलिल	१३२	३८
कलेवर	३९	१२
कल्माषी	१५२	४२
कल्याण	२००	५४
कल्लोल	२७	९
कवच	१९८	५४
कष्ट	१८९	५२
कस्तूरी	११८	३४
कस्वर	९५	२७
काञ्चन	९३	२७
काञ्ची	१२०	३५
काण्ड	७८	२३
कादम्बरी	१२१	३५
कानन	१३	५
कानीनजनक	५१	१५
कान्त	३७	११
	१७८	४९
कान्ता	३३	१०
कान्तार	१३	५
कान्तिमत्	४७	१४

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
काम	७७	२२
कामिन्	३७	११
कामिनी	३०	९
कामुक	३७	११
कामुकी	३१	१०
	३६	११
काय	३८	११
कार्तस्वर	९४	२७
कार्तिकेय	६७	२०
कार्मुक	७९	२३
कार्मुकिन्	१४४	४१
काल	१४६	४१
	१४८	४२
कालशेय	१२३	३६
काली	१५२	४२
काश्यप	११६	३४
काहल	१५७	४४
काष्ठा	६१	१८
काष्ठापाल	६१	१८
काष्ठाम्बर	६१	१८
किंवदन्ती	१५६	४३
किङ्कर	२९	९
किञ्चन	१५८	४४
किञ्जल्क	१५२	४३
	१५३	४३
कितव	१६७	४६
किरण	४५	१३
किरात	१४	५
किरीटिन्	१४५	४१
किल्विष	१३१	३८

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
कीचकशत्रु	१४५	४१
कीर्ति	१५४	४३
कीनाश	१७६	४८
कु	६	२
कुक्कुर	९२	२७
कुक्षि	१०२	३०
कुङ्कुम	११८	३४
कुच	१०२	३०
कुब्ज	१६०	४४
कुमार	६७	२०
कुमुद	२२	७
कुमुदप्रिय	४७	१४
कुमुदविप्रिय	५१	१५
कुम्भिन्	८८	२६
कुम्भिनी	६	२
कुरुशत्रु	१४५	४१
कुल	१२५	३६
कुलटा	३५	११
कुल्या	३२	१०
कुवलय	२२	७
कुवेर	९५	२७
कुश	१५	५
कुशलिन्	१६६	४६
कुसुम	८०	२३
कूपार	२५	८
कूर्पास	१९८	५४
कृच्छ्र	१८९	५२
कृतान्त	४	२
	१४६	४१
कृतिन्	१६६	४६
कृत्स्न	१९०	५२
कृपण	१७६	४८
कृपा	११०	३२
कृपाण	८५	२५
कृश	१७४	४८
कृशानु	६५	१९
कृष्ण	७४	२१
	१४८	४२
केकर	९९	२८
केकिन्	१२६	३६
केतु	८४	२४
केवलिन्	११४	३३
केश	१९९	५४
केशबन्धन	१९९	५४
केशरिन्	९०	२६
केशव	७४	२१
केशवाग्रज	१४३	४०
केशिन्	७५	२२
कैरव	२२	७
कोक	१२७	३७
कोकनद	२१	७
कोटि	७९	२३
कोदण्डक	७९	२३
कोप	१०९	३२
कोमल	१५७	४४
कोविद	१६७	४६
कोष	१९१	५२
कौक्षेयक	८५	२५
कौतुक	१७३	४७
कौन्तेय	१४७	४१

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
कौमुदी	४७	१४
कौरव्य	१४८	४१
कौलयक	९२	२७
कौशिक	६०	१८
कौसुम	१५२	४३
क्रतु	११२	३३
क्रेङ्कृत	१०७	३१
क्रोड	९१	२६
क्रोध	१०९	३२
क्रौञ्च	१०७	३१
क्रौञ्चभेदिन्	६७	२०
क्षणे	१५९	४४
क्षणदा	४८	१४
क्षणरुचि	१९	६
क्षतज	१९१	५२
क्षमा	५	२
क्षाम	१७४	४८
क्षिति	६	२
क्षिपा	४८	१४
क्षिप्र	१७६	४८
क्षीर	१२३	३६
क्षीण	१७४	४८
क्षुण्ण	१६७	४६
क्षुरप्र	७८	२३
क्षेम	२००	५५
क्षोणी	६	२
क्ष्मा	६	२
ख		
ख	५३	१६
ख	१३०	३८
खग	७८	२३
खड्ग	८५	२५
खण्ड	१९०	५२
खन्कृत	१०६	३१
खरदण्ड	२१	७
खल	४४	१३
खला	३५	११
खलु	१५९	४४
	१७३	४७
खात	१३४	३८
खेचर	५४	१६
खेद	१०९	३२
खेय	१३४	३८
ख्याति	१५५	४३
ग		
गगन	५३	१६
गङ्गा	७१	२१
	१६४	४५
गज	८८	२६
गणिका	३६	११
गन्धवाह	६२	१९
गभस्ति	४५	१३
गरूड़	१२९	३७
गरूत्मत्	१२९	३७
गर्ज	१०५	३१
गर्ता	१९३	५३
गर्वित	१६९	४७
गल	१०१	३०
गव्या	८२	२४
गहन	१३	५

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
गहन	१८९	५२
गह्वर	१९३	५३
गह्वरी	५	२
गाण्डीविन्	१४४	४१
गिर्	१०४	३१
गिरि	८	३
गिरीश	६९	२०
गीर्वाणेश	५८	१८
गुण	८२	२४
	११९	३४
गुणनिका	१८८	५२
गुणावलि	१५५	४३
गुरु	१२३	३६
गुरुस्थान	१३७	३९
गुलिका	९४	२७
गुह	६७	२०
गूढ़चर	१७१	४७
गृध्नु	१७६	४८
गृह	३२	१०
गेह	१३३	३८
गेहिनी	३२	१०
गो	६	२
	४५	१३
गोत्र	१६८	४६
गोत्रशत्रु	५८	१८
गोधा	२८	९
गोपुर	१३५	३९
गोमण्डल	१६४	४५
गोमिनी	७६	२२
गोलाङ्गूल	१२	४

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
गोविन्द	७६	२२
गौतम	११५	३३
गौर	१५१	४२
गौरी	१५१	४२
ग्रन्थ	४	२
ग्रहाधिप	४९	१५
ग्रामशार्दूल	९२	२७
ग्रीवा	१०१	३०
घ		
घन	१८	६
	१७१	४७
घनसार	११८	३४
घनाघन	१८	६
घृष्टि	९१	२६
घोर	१८६	५१
घोष	१६३	४५
घ्राण	१०२	३०
च		
चक्रधर	७६	२२
चक्रवाक	५१	१५
चक्राङ्ग	१२६	३६
चण्डी	३३	१०
चतुर	१६७	४६
चतुर्मुख	७२	२१
चतुष्पात्	१६६	४६
चन्द्र	४७	१४
चन्द्रमस्	४७	१४
चमू	८६	२५
चमूर	९०	२६
चर	१८१	५०

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
चरण	१०३	३०
चरण्यु	६३	१९
चलन	१०३	३०
चला	३१	१०
चाटुकृत्	१६७	४६
चाप	७९	२३
चार	१८१	५०
चारू	१७९	४९
चिकुर	१९९	५४
चित्त	८१	२४
चित्र	१७३	४७
चिह्न	८४	२४
चिराय	१८२	५०
चीत्कृत	१०६	३१
चीर	११७	३४
चूड़ापाश	१९९	५४
चेतस्	८१	२४
चेल	११७	३४
चोद्य	१७३	४७
चौर	१७०	४७
छ		
छत्र	१९८	५४
छद्मन्	१३९	४०
छिद्र	१९३	५३
छल	१३८	४०
	१९१	५२
ज		
जगत्	११३	३३
जगती	६	२
जघन	१०३	३०

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
जठर	१०२	३०
	१५८	४४
जड़	१६८	४६
जनक	३८	११
जननी	३८	११
जनपद	९७	२८
जनान्त	९७	२८
जनि	३२	१०
जनोदाहरण	१५४	४३
जह्नु	१०३	३०
जल	१५	५
जलद	१०५	३१
जव	१७७	४८
जवन	६३	१९
जङ्गल	५५	१७
जात	१६५	४६
जातरूप	९३	२७
जातवेदस्	६४	१९
जानु	१०३	३०
जाया	३२	१०
जाह्नवी	७१	२१
जित्या	१४२	४०
जिन	११३	३३
जिष्णु	१४३	४१
जिह्वाप	९२	२७
जीमूत	१८	६
जीर्ण	१५८	४४
	१७४	४८
जीवन	१५	५
जीवा	८२	२४

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
ज्या	८२	२४
ज्यायस्	११५	३३
ज्येष्ठ	४३	१३
ज्योति	४६	१३
ज्वलन	६५	१९
झ		
झटिति	१७६	४८
झष	१७	६
झषकेतु	८४	२४
झषध्वज	८४	२४
झाङ् कृत	१०७	३१
त		
तर्कं	१२३	३६
तट	९	३
	२६	९
तटी	९	३
तटोच्छ्वास	२७	९
तडित्	१८	६
तडिद्धन्वा	५६	१७
तति	१४०	४०
तनय	४०	१२
तनु	३८	११
तनुत्र	१९८	५४
तनूदरी	३१	१०
तनूनपात्	६४	१९
तपन	४९	१५
तपनीय	९४	२७
तपस्विन्	३	१
तम	१४९	४२
तमस्	१४९	४२
तमोरि	५०	१५
तर	१७७	४८
तरङ्ग	२७	९
तरङ्गिणी	२४	८
तरणि	४९	१५
तरवारि	८५	२५
तरस्विन्	१९६	५४
तरु	११	४
तस्कर	१७०	४७
तापस	३	१
तामरस	२०	७
तारा	४८	१४
तारुण्य	१२४	३६
तिग्म	४९	१५
	१८६	५१
तिमि	१७	६
तिमिर	१४९	४२
	१८६	५१
तिमिरारि	५०	१५
तीर	२६	९
तीर्थ	११६	३४
तीर्थकर	११४	३३
तीर्थकृत्	११४	३३
तीर्थङ्कर	११४	३३
तीव्र	१८६	५१
तुक्	३९	१२
तुङ्ग	१५९	४४
तुरग	५२	१६
तुरङ्गम	५२	१६
तुराषाट्	६०	१८

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
तुला	१३७	३९
तुलाकोटि	१०७	३१
तुल्य	१३७	३९
तुषार	१८०	४९
तुहिन	१८०	४९
तूर्ण	१७७	४८
तेजस्	४५	१३
तेजस्विन्	१९६	५४
तोक	३९	१२
तोमर	७८	२३
तोय	१५	५
तोष	१०९	३२
त्रिक्कुत्	८	३
त्रिदश	५६	१७
त्रिनेत्र	६९	२०
त्रिपथगा	७१	२१
त्रिपुरारि	६९	२०
त्रिमार्गगा	१६४	४५
त्र्यम्बक	६८	२०
द		
दंष्ट्रिन्	९१	२६
दक्षकन्या	६१	१८
दण्ड	८६	२५
दन्त	९	३
दन्तवास	१०१	३०
दन्तिन्	८८	२६
दया	११०	३२
दयित	३७	११
दयिता	३३	१०
दरीभृत्	८	३

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
दर्शनीय	१८०	४९
दशनच्छद	१०१	३०
दशमीस्थ	१०८	३२
दशा	१२४	३६
दस्यु	१४	५
दहन	६५	१९
दामोदर	७४	२१
दारक	४०	१२
दारा	३२	१०
दारिका	३६	११
दारुण	१८६	५१
दासी	३६	११
दिक्-दिश्	६१	१८
दिक्पाल	६१	१८
दिगम्बर	६१	१८
दिग्गज	६१	१८
दिन	५०	१५
दिव्-दिव	५३	१६
	५६	१७
दिवस	५०	१५
दिवा	५०	१५
दिव्यवाक्पति	११४	३३
दीक्षित	४	२
दीधिति	४५	१३
दीन	१७६	४८
दीप्ति	४६	१३
दीर्घ	१८५	५१
दुग्ध	१२३	३६
दुरित	१३१	३८
दुर्ग	१३	५

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
दुर्जन	४४	१३
दुष्कृत	१३२	३८
दुष्ट	४४	१३
दुहितृ	४०	१२
दूती	३५	११
दून	१७५	४८
दृढ़	१५६	४३
दृतिहरि	१६५	४६
दृप्त	१७०	४७
दृश	९९	२८
दृषत्	१७१	४७
दृष्ट	१०८	३२
दृष्टि	९९	२८
देव	५६	१७
देवानांप्रिय	१६९	४६
देह	३८	११
देहिका	१६६	४६
दैत्यारि	१४४	४१
दोषा	४८	१४
	१००	२८
द्युति	४५	१३
द्युमणि	४९	१५
द्युर्धुनी	७१	२१
द्युस्	५३	१६
	७१	२१
द्यूत	१२२	३५
द्यो	५३	१६
	५६	१७
द्रविण	९५	२७
द्रव्य	९५	२७
द्राक्	१५९	४४
द्रुत	१७६	४८
द्रुम	११	४
द्रुहिण	७२	२१
द्वन्द्व	२	१
द्वय	२	१
द्वितय	२	१
द्विप	८९	२६
द्विरद	८८	२६
द्विरेफ	२४	८
	८२	२४
द्विष	४४	१३
द्विषत्	४४	१३
द्वेष	१०९	३२
द्वेषिन्	४४	१३
द्वैत	२	१
ध		
धन	९५	२७
धनञ्जय	१४५	४१
धनद	९६	२७
धनदाय	९६	२७
धनुष	७९	२३
धन्वन्	७९	२३
धमनी-धम	१०१	३०
धम्मिल्ल	१९९	५४
धरणी	६	२
धरा	५	२
धरित्री	६	२
धर्म	७९	२३
धर्मचक्रभृत्	११४	३३

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
धर्मात्मज	१४७	४१
धव	२८	९
धवल	१५०	४२
धातु	१७१	४७
धात्री	५	२
धानुष्क	१४	५
धामन्	४६	१३
	१३३	३८
धिषणा	११०	३२
धिष्ण्य	१३२	३८
धी	११०	३२
धुनी	२४	८
धुर्य	५२	१६
धूम	१४८	४२
धूर्जटि	६८	२०
धूर्त	१६७	४६
धूलि	१५३	४३
धूलिकुट्टिमम्	१३४	३८
धेनु	१०५	३१
धैर्य	१७५	४८
ध्वजा	८४	२४
ध्वजिनी	८६	२५
ध्वान्तारि	५०	१५
न		
न	१५९	४४
नक्तम्	४८	१४
नक्षत्र	४८	१४
नग	११	४
नगरी	९७	२८
नद	२४	८
नदी	२४	८
नदीश्वरी-नदीश्वर	७१	२१
नदीष्ण	१६६	४६
ननान्दृ	४३	१३
नन्दन	४०	१२
नभस्	५३	१६
नभस्वत्	६३	१९
नभ्राट्	१८	६
नमुचिशत्रु	५८	१८
नयन	९९	२८
नर	२८	९
नरक	१९३	५३
नलिन	२०	७
नव	१५७	४४
नव्य	१५७	४४
नाक	५६	१७
नाग	८९	२६
	१२९	३७
नागरिक	१६८	४६
नागारि	९०	२६
नाथ	१०	४
नाथहरि	१६५	४६
नाथान्वय	११६	३४
नाभिज	११५	३३
नाम	१६६	४६
नारद	७३	२१
नाराच	७८	२३
नारायण	७४	२१
नारी	३०	९
नासा	१०२	३०

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
निकट	१४२	४०
निकर	१४०	४०
निकाय	१३४	३८
	१४०	४०
निकुरम्ब	१४०	४०
निकेतन	१३३	३८
निगूढ़पुरुष	१८१	५०
निचय	१४१	४०
निज	१८८	५२
नितम्ब	९	३
	१०३	३०
नितम्बिनी	३१	१०
नितान्त	१७२	४७
नित्य	१६१	४५
निदेश	१५५	४३
निपुण	१६६	४६
निबोध	१५४	४३
निभ	१३८	४०
निम्नगा	२४	४
नियन्त्रित	१७७	४९
नियमित	१७८	४९
नियोग	१५५	४३
निर्घात	१९	६
निर्व्यूह	१३५	३९
निलय	१३४	३८
निवसन	११७	३४
निवृत	१३३	३८
निवेशन	१९२	५३
निशा	४८	१४
निशाचर	१७१	४७

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
निशान्त	१३३	३८
निषाद	१४	५
निषादिन्	८९	२६
निष्णात	१६६	४६
निसर्ग	१८८	५२
निस्तल	१८५	५१
निस्त्रिंश	८५	२५
नीच	१६०	४४
	१७०	४७
नीचैस्	१६०	४४
नीर	१५	५
नील	१४८	४२
नीलकण्ठ	१२७	३७
नीलपिञ्जली	१५२	४२
नीललोहित	६९	२०
नीलवसन	१४३	४०
नीलाम्बुजन्मन्	२२	७
नीहार	१८१	४९
नूतन	१५७	४४
नूपुर	१०७	३१
नृ	२८	९
नृप	७	३
	२८	९
नृपक्रतु	११२	३३
नेड़	१६८	४६
नेत्र	९९	२८
नैक	१९४	५३
नैयायिक	१११	३२
न्यच्	१६०	४४

प

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
पक्षिन्	५४	१६
पङ्क	२०	७
	१५४	४३
पङ्क्ति	१४१	४०
पटु	१६६	४६
पत्तन	९७	२८
पण्डित	१११	३२
पण्यस्त्री	३६	११
पतङ्ग	४९	१५
	५४	१६
पतत्रिन्	५४	१६
पताका	८४	२४
पति	१०	४
पतिवत्नी	३४	१०
पतिव्रता	३४	१०
पत्ति	२९	९
पत्नी	३२	१०
पत्रिन्	५४	१६
पथिन्	१६३	४५
पद	१०३	३०
	१३३	३८
	१३८	४०
पदग	२९	९
पदाति	२९	९
पद्म	२०	७
पद्मनाभ	७५	२२
पन्नग	१२८	३७
पयस्	१५	५
पयस्	१२३	३६
पयोधर	१०२	३०

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
पराग	१५२	४३
परासु	१०८	३२
परिखा	१३४	३८
परिचित	१०८	३२
परिणयन	१९२	५३
परिधि	१३५	३९
परिवाद	१९१	५२
परिवृढ़	१०	४
परिषत्	२०	७
परुष	१५६	४३
पर्जन्य	१८	६
पर्वत	८	३
पल	५५	१७
पवन	६२	१९
पवनपुत्र	६३	१९
पवमान	६२	१९
पवनसख	६४	१९
पशु	१६६	४६
पस्त्य	१३४	३८
पांसु	१५२	४३
पाकशत्रु	५८	१८
पाटल	१४९	४२
पाठीन	१७	६
पाणि	१००	२८
पाण्डु	१५०	४२
पाण्डुर	१५०	४२
पाताल	१९३	५३
पाथस्	१५	५
पाद	४५	१३
	१०३	३०

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ	शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
पादप	११	४	पुर	९७	२८
पाप	१३१	३८	पुरन्दर	५८	१८
पाप्मन्	१३१	३८	पुरन्ध्री-पुरन्ध्रि	३२	१०
पार	२६	९	पुराण	१५८	४४
पारावार	२५	८	पुरी	९७	२८
पारिषद्य	११२	३३	पुरु	११५	३३
पार्श्व	९	३	पुरुष	२८	९
पालाश	१५१	४२	पुरुषोत्तम	७४	२१
पाली	२७	९	पुरुहूत	६०	१८
पावक	६४	१९	पुरोगति	९२	२७
पाशित	१७८	४९	पूर्ण	१२४	३६
पाशनीत	१७७	४९	पुलिन्द	१४	५
पाषाण	१७१	४७	पुलोमारि	६०	१८
पितामह	७२	२१	पुष्कर	२१	७
पितृ	३८	११	पुष्करिन्	८९	२६
पिनद्ध	१७८	४९	पुष्कल	१७३	४७
पिनाकिन्	६८	२०		१९४	५३
पिशित	५५	१७	पुष्प	८०	२३
पिशुन	१७०	४७	पुष्पहेति	८३	२४
पिशङ्गी	१५१	४२	पूग	१३९	४०
पीठ	११३	३३	पूषन्	४९	१५
पीत	१५१	४२	पूतना	८६	२५
पुंश्चली	३५	११	पृथिवी	५	२
पुटभेदन	९७	२८	पृथुरोमन्	१७	६
पुण्य	१३१	३८	पृथुल	१८५	५१
पुण्डरीक	२१	७	पृथु	१८५	५१
पुत्र	३९	१२	पृथ्वी	५	२
पुनर्भू	३५	११	पृषत	१२८	३७
पुमान्	२८	९	पेशल	१५७	४४
पुर्	९७	२८	पेशिन्	५५	१७

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
पोत	४०	१२
पोत्रिन्	९१	२६
पौरुष	१७५	४८
प्रकर	१४१	४०
प्रकृति	१८८	५२
प्रगल्भ	१६७	४६
प्रचर	१६३	४५
प्रचुर	१९४	५३
प्रजा	३९	१२
प्रजापति	७३	२१
	११५	३३
प्रज्ञा	११०	३२
प्रणयिनी	३३	१०
प्रणिधि	१७१	४७
	१८१	५०
प्रतिरोधक	१७०	४७
प्रतीत	१०८	३२
प्रतोली	१३५	३९
प्रत्यग्र	१५७	४४
प्रभञ्जन	६३	१९
प्रभा	४५	१३
प्रभु	१०	४
प्रमथाधिप	६८	२०
प्रमद	१०९	३२
प्रमदा	३३	१०
प्रमोद	१०९	३२
प्रवीण	१६७	४६
प्रवीर	१९६	५४
प्रवृत्ति	१५६	४३
प्रशस्त	१७९	४९
प्रसन्न	१२१	३५
प्रसव	८०	२३
प्रसाधन	११९	३४
प्रसून	८०	२३
प्रस्तर	१७१	४७
प्रस्थ	९	३
प्रांशु	१८५	५१
प्राकार	१३५	३९
प्राक्तन	१५८	४४
प्राचीनबर्हि	५७	१८
प्राज्य	१९४	५३
प्राज्ञ	१११	३२
प्राभृत	१९१	५३
प्रायस्	१२४	३६
प्रारभ्य	१०४	३१
प्रालेय	१८०	४९
प्रावृषिक	१२६	३६
प्रासाद	१३५	३९
प्रिय	३७	११
	१५६	४३
प्रिया	३३	१०
प्रियाम्बिका	४३	१३
प्रीत	३७	११
प्रेमन्	१६२	४५
प्रेयस्	३७	११
प्रेयसी	३३	१०
प्रेरित	१०४	३१
प्रेष्ठा	३३	१०
प्रेष्य	१५५	४३
प्लवग	१२	४

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
फ		
फणिन्	१२९	३७
फलिन्	११	४
फलेग्राहिन्	११	४
फल्गु	१५७	४४
फाल्गुन	१४३	४१
फुल्ल	८०	२३
ब		
बद्ध	१७७	४९
बन्धकी	३५	११
बन्धु	४२	१३
बन्धुर	१७९	४९
बल	८६	२५
	१४२	४०
बलशत्रु	५८	१८
बलाहक	१८	६
बलिसूदन	७५	२२
बंहिष्ठ	१९४	५३
बहु	१९४	५३
बहुल	१८५	५१
	१९४	५३
बाण (वाण)	७५	२२
बाणवारण	१९८	५४
बाणसूदन	७५	२२
बाणी (वाणी)	१०४	३१
बाल	१९९	५४
बाला	३१	१०
बाहु	१००	२८
बाहुशिरस्	१००	२८
बुध	११२	३३

शब्द	श्लोक सं॰	पृष्ठ
बृन्हति	१०५	३१
ब्रध्न	४९	१५
ब्रह्मन्	११५	३३
ब्रीहि	१६४	४६
भ		
भ	४८	१४
भङ्ग	२७	९
भट	२९	९
	१०६	३१
भद्र	२००	५५
भर्तृ	१०	४
भर्तुःस्वसा	४३	१३
भर्मन्	९३	२७
भरतान्वय	१४७	४१
भव	७०	२०
	१९५	५३
भवन	१३२	३८
भविक	२००	५५
भव्य	२००	५५
भागधेय	१३१	३८
भागीरथी	७१	२१
भाग्य	१३१	३८
भानु	४५	१३
	४९	१५
भामा	३१	१०
भामिनी	३०	९
भारती	१०४	३१
भार्या	३२	१०
भाव	१९५	५३
भावुक	२००	५५

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
भास्	४५	१३
भासुर	१९६	५४
भास्कर	४६	१३
भास्वर	१९६	५४
भिक्षु	३	१
भीरु	३०	९
भुज	१००	२८
भुजङ्गम	१२८	३७
भुवन	११३	३३
भू	५	२
भूमि	५	२
	७६	२२
भूयिष्ठ	१९४	५३
भूरि	१९४	५३
भूषण	११९	३४
भृङ्ग	८२	२४
भृतक	२९	९
भृत्य	२९	९
भृशम्	१७२	४७
भो	१५८	४४
भ्रमर	८२	२४
भ्रातृजानी	४३	१३
भ्रातृव्य	४४	१३
म		
मकरध्वज	७७	२२
मकरन्द	१५२	४३
मङ्क्षु	१७६	४८
मङ्गल	२००	५४
मघवत्	६०	१८
मञ्जीरक	१०७	३१
मण्डल	९२	२७
मण्डलाग्र	८५	२५
मणित	१०६	३१
मतङ्गज	८८	२६
मनालम्ब	१३६	३९
मालम्व्य	१३६	३९
मत्स्य	१६	६
मत्तवारण	१३५	३९
मथित	१२३	३६
मदन	७७	२२
मदिरा	१२१	३५
मद्य	१२१	३५
मद्यप	१२२	३५
मधु	१५२	४३
मधुवारा	१२१	३५
मधुव्रत	८२	२४
मधुसूदन	७५	२२
मध्यम-पाण्डव	१४४	४१
मनस्	८१	२४
मनस्विन्	१९६	५४
मनस्विनी	३४	१०
मनीषा	११०	३२
मनुज	२८	९
मनुष्य	२८	९
मनोज्ञ	१८०	४९
मनोहर	१७८	४९
मन्द	१६९	४६
	१८६	५१
मन्दाकिनी	७१	२१
मन्दिर	१३२	३८

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
मन्मथ	७७	२२
मन्यु	१०९	३२
मन्त्रपूतात्मन्	१२९	३७
मय	९१	२६
मयूखवत्	५२	१६
मयूर	१२६	३६
मराल	१२६	३६
मरीचि	४५	१३
मरुत	५९	१८
मरुत्	८	३
	६२	१९
मरुत्वत्	५९	१८
मरुत्पुत्र	६३	१९
मरुत्सख	६०	१८
	६४	१९
मर्कट	१२	४
मर्त्य	२८	९
मर्म	१९१	५२
मल्लक	१६१	४५
मलिन	१५३	४३
मल्लिका	११३	३३
मलीमस	१५४	४३
महति	११६	३४
महस्	४६	१३
महावीर	११६	३४
महाहव	८७	२५
महिला	३२	१०
महिषी	१६६	४६
मही	५	२
महेश्वर	६८	२०
महोत्पल	२१	७
मांस	५५	१७
मा	१५९	४४
मातङ्ग	८९	२६
मातरिश्वन्	६३	१९
मातुलानी	४३	१३
मातृ	३८	११
मानव	२८	९
मानिन्	१६९	४७
मानिनी	३२	१०
मानुष	२८	९
मार	८१	२४
मार्ग	१६३	४५
मार्गण	७८	२३
मार्तण्ड	४९	१५
माला	११९	३४
माल्य	११९	३४
मितङ्गम	८८	२६
मित्र	४१	१२
मित्रयुक्	४१	१२
मिहिर	१८	६
मीन	१७	६
मीनाकर	२५	८
मुख	९८	२८
मुग्ध	१६८	४६
मुग्धा	३०	९
मुक्ता	३५	११
मुद्	१०९	३२
मुधा	१८९	५२
मुनि	३	१

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
मुरसूदन	७५	२२
मुहुर्मुहुः	१८८	५२
मूक	१६८	४६
मूर्ख	१६८	४६
मूढ़	१६८	४६
मूर्ति	३९	१२
मूर्द्धन्	१०४	३१
मृग	१२८	३७
मृगनाभिजा	११८	३४
मृगाङ्क	१८१	४९
मृगेन्द्र	९०	२६
मृत	१०८	३२
मृत्यु	१४६	४१
मृदु	१५७	४४
मृषा	१८९	५२
मेखला	९	३
	१२०	३५
मेघ	१८	६
मेघपथ	५३	१६
मेदिनी	५	२
मेधावी	१११	३२
मैत्री	१८७	५१
मैत्रेयिक	१८७	५१
मैरेय	१२१	३५
मोघ	१८९	५२
मौण्ड्य	४	२
मौक्तिक	९४	२७
मौर्वी	८२	२४
य		
यज्ञारि	६९	२०
यति	३	१
यन्तृ	८९	२६
यम	२	१
	१४६	४१
यमजनक	५१	१५
यमल	२	१
यमुनाजनक	५१	१५
यशस्	१५४	४३
यातुधान	५५	१७
यातृ	८९	२६
याथ	१८६	५१
यादस्	१७	६
युक्त	१६२	४५
युग	२	१
युगल	२	१
युग्म	२	१
युत	१६२	४५
युद्ध	८७	२५
युधिष्ठिर	१४८	४१
युवति	३१	१०
योगिन्	३	१
योग्या	१८८	५२
योषा	३०	९
योषित्	३०	९
यौवन	१२४	३६
यौवनिक	१२४	३६
र		
रक्त	११८	३४
	१४९	४२
	१९१	५२

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ	शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
रक्षस्	५५	१७	रुचि	४५	१३
रजत	९४	२७	रुच्य	११९	३४
रजनी	४८	१४	रुद्र	६९	२०
रजस्	१५३	४३	रुधिर	११८	३४
रण	८७	२५		१९१	५२
रत्नाकर	२५	८	रुष्	१०९	३२
रथ्य	५२	१६	रूपाजीवा	३६	११
रन्ध्र	१९३	५३	रूप्य	९४	२७
रमण	३७	११	रे	१५८	४४
रमणी	३३	१०	रेणु	१५३	४३
रमणीय	१७९	४९	रेवतीदयित	१४३	४०
रम्य	१७९	४९	रै	९५	२७
रय	१७७	४८	रोधस्	२६	९
रवि	४९	१५	रोपण	७८	२३
रश्मि	४६	१३	रोहिणीपति	१८१	४९
रशना	१२०	३५	रोहिताश्व	६५	१९
रस्य	१९३	५३	**ल**		
रहस्	१७५	४८	लक्ष्मन्	१५३	४३
रहस्य	१७५	४८	लक्ष्मी	७६	२२
राग	१६२	४५	लक्ष्मीपति	७६	२२
राजन्	१०	४	लघु	१७७	४८
राजलक्ष्मन्	१४८	४१	लञ्जिका	३६	११
राजराज	९६	२७	लता	२३	७
राजसूय	११२	३३	लतान्त	८०	२३
रात्रिचर	५५	१७	लपन	९८	२८
रात्रिजागर	९२	२७	लब्ध	१०८	३२
रामा	३१	१०	ललना	३०	९
राष्ट्र	९७	२८	लव	१९०	५२
रिपु	४४	१३	लाङ्गल	१४२	४०
रुचिर	१७९	४९	लाञ्छन	१५३	४३

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
लुब्ध	१७६	४८
लुब्धक	१४	५
लेलिहान	१२८	३७
लेश	१९०	५२
लोक	११३	३३
लोह	१७२	४७
लोहित	१४९	४२
	१९१	५२
लोहिनी	१५१	४२
व		
वक्ता	२०१	५५
वक्त्र	९८	२८
वक्षस्	१०२	३०
वचन	१०४	३१
वचस्	१०४	३१
वज्र	१९	६
वज्रिन्	५७	१८
वत्स	१६५	४६
वदन	९८	२८
वधू	३०	९
वन	१३	५
	१५	५
वनस्पति	११	४
वनिता	३०	९
वनेचर	१३	५
वह्नि	६४	१९
वपुस्	३८	११
वप्र	१३४	३८
वयस्	५४	१६
वयस्	१२४	३६
वयस्या	४१	१२
वर	३७	११
	१९२	५३
वरटा	१२७	३७
वराह	९१	२६
वरूथिनी	८६	२५
वर्ग	१२५	३६
वर्ण	१५५	४३
वर्णिन्	३	१
वर्तुल	१८५	५१
वर्त्मन्	१६३	४५
वर्द्धमान	११६	३४
वर्मन्	१९८	५४
वर्षीयस्	११५	३३
वर्हिण (बर्हिण)	१२६	३६
वलक्ष	१५०	४२
वलिमुख (बलीमुख)	१२	४
वल्लभ	३७	११
वल्लभा	३३	१०
वल्लरी	२३	७
वल्ली	२३	७
वसति	१३३	३८
वसु	९५	२७
वसुधा	६	२
वसुन्धरा	६	२
वसुमती	५	२
वस्तु	९५	२७
वस्त्र	११७	३४
वाग्मिन्	१११	३२
वाच्	१०४	३१

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
वाचस्पति	२०१	५५
वाजिन्	५२	१६
वात	६२	१९
वातायन	१३६	३९
वानर	१२	४
वाण (बाण)	७८	२३
वाणवारण	१९८	५४
वाणसूदन	७५	२२
वाणी	१०४	३१
वामलोचना	३१	१०
वायु	६२	१९
वायुपथ	५३	१६
वायुपुत्र	१४५	४१
वार्	१५	५
वार्ता	१५६	४३
वारण	८८	२६
वारली	१२७	३७
वारि	१५	५
वारिधि	२३	७
वारिराशि	२६	८
वारुणी	१२१	३५
वार्द्धीन	१२४	३६
वासर	५०	१५
वासव	५९	१८
वासस्	११७	३४
वासुदेव	७६	२२
वाह	५२	१६
वाहिनी	८६	२५
वि	५४	१६
विकल	१९०	५२
विक्रम	१७४	४८
विचक्षण	१११	३२
विट	३७	११
विटपिन्	११	४
विडौजस्	५९	१८
वितथ	१८९	५२
वित्त	९५	२७
विदग्ध	१६७	४६
विद्यमान	१३७	३९
विद्युत्	१९	६
विद्वत्	१११	३२
विधातृ	७२	२१
विधि	७२	२१
विधिपुत्र	७३	२१
विधु	४७	१४
विधुर	१८९	५२
विनतात्मज	१२९	३७
विन्मान्य	१३७	३९
विपिन	१३	५
विफल	१८९	५२
विभावसु	४६	१३
	६५	१९
विभु	१०	४
विभ्रम	२७	९
	९९	२८
वियत्	५३	१६
वियोग	१६१	४५
विरञ्चिन्	७२	२१
विरह	१६१	४५
विरूपाक्ष	७०	२०

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ	शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
विरोचन	५०	१५	वीर	११६	३४
विलम्बित	१८६	५१	वृक	१२७	३७
विलेपन	११९	३४	वृकोदर	१४५	४१
विलोचन	९९	२८	वृक्ष	७	३
विवर	१९३	५३	वृजिन	१३२	३८
विवाह	१९२	५३	वृत्त	१८५	५१
विशद	१४९	४२	वृत्तान्त	१३९	४०
	१७३	४७	वृत्रहन्	५८	१८
विशाख	६७	२०	वृथा	१८९	५२
विशारद	१६७	४६	वृषन्	५९	१८
विशारिन्	१७	६	वृषभ	११५	३३
विशाल	१८५	५१	वृषभध्वज	६९	२०
विशालाक्ष	६९	२०	वृषभेश्वर	११७	३४
विशिख	८१	२४	वृषसेन	१४४	४१
विश्वरूप	७०	२०	वृषाकपि	६६	१९
विश्वम्भरा	५	२	वेग	१७७	४८
विष	१५	५	वेधस्	७२	२१
विषक्षय	१३०	३७	वेला	२७	९
विषधर	१२८	३७	वेश्मन्	१३२	३८
विषय	९७	२८	वेश्या	३६	११
विष्किर	५४	१६	वैजयन्ती	८४	२४
विष्टप	११३	३३	वैनतेय	१३०	३७
विष्टर	११३	३३	वैरिन्	४४	१३
विष्णु	७४	२१	वैशारिण	१७	६
विस्रसो	१८८	५२	वैश्रवण	९६	२७
विस्मय	१७३	४७	वैश्वानर	६५	१९
विसिनी	२३	७	वंश	१२५	३६
विहायस्	५३	१६	व्यतिकर	१३८	४०
वीचि	२७	९	व्यपदेश	१३८	४०
वीतराग	११४	३३	व्यसन	१८९	५२

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
व्याघ्र	९०	२६
व्याज	१३८	४०
व्याध	१४	५
व्यूह	१४०	४०
व्रज	१३९	४०
व्रज	१४१	४०
व्रज	१६४	४५
व्रतती (व्रतति)	२३	७
व्रतिन्	३	१
व्रात	१३९	४०
व्योमन्	५३	१६
श		
शकल	१९०	५२
शकुनि	५४	१६
शकुनीश्वर	१२९	३७
शकुन्ति	५४	१६
शकृत्करि	१६५	४६
शक्तिमत्	६७	२०
शक्र	५७	१८
शक्र	२०१	५५
शक्रनन्दन	१४४	४१
शङ्कर	६८	२०
शम्पा	१८	६
शम्भु	६८	२०
शम्भुविघ्नकर	८४	२४
शठ	१६७	४६
शतक्रतु	५७	१८
शतपत्र	२१	७
शतमन्यु	६०	१८
शत्रु	४४	१३
शफरी	१७	६
शबली	१५२	४२
शब्दभेदिन्	१४५	४१
शर	१५	५
शर	७८	२३
शरण	१३४	३८
शरभ	९०	२६
शरणोद्भव	६७	२०
शरीर	३९	१२
शर्व	६७	२०
शर्वरी	१२८	३७
शर्वरीकर	१२८	३७
शल्क	१९०	५२
शवर	१४	५
शशिन्	४७	१४
शशिप्रभ	१५०	४२
शश्वत्	१६१	४५
शस्त्र	८३	२४
शस्त्रजीविन्	२९	९
शाखिन्	११	४
शातकुम्भ	१७२	४७
क्षान्त	१७४	४८
शारङ्गी-सारङ्गी	१५२	४२
शार्ङ्गिन्	७४	२१
शार्दूल	९०	२६
शालि	१६४	४६
शासन	१५५	४३
शास्त्र	४	२
शिखरिन्	८	३
शिखिन्	६४	१९

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
शिखिन्	१२६	३६
शिखिवाहन	६६	२०
शिखण्डिन्	१२७	३७
शिपिविष्ट	७०	२०
शिरस्	१०४	३१
शिरोधर	१०१	३०
शिरोरुह	१९९	५४
शिला	१७१	४७
शिलीमुख	७८	२३
	८२	२४
शिलीमुखासन	७९	२३
शिलोच्चय	८	३
शिलोद्भव	९४	२७
शिव	६८	२०
	२००	५५
शिष्य	४	२
शीघ्र	१७६	४८
शीघ्रगामुक	९१	२६
शीतल	१८६	५१
शीधु	१२१	३५
शीर्ण	१७५	४८
शील	१८८	५२
शुक्तिज	९४	२७
शुक्ल	१५०	४२
शुचि	१५०	४२
शुण्डा-शुण्ड	१२२	३५
शुण्डाल	८९	२६
शुनासीर	५७	१८
शुभ्र	१५०	४२
शुषिर	१९३	५३
शूकर	९०	२६
शूर	१९६	५४
शूलिन्	७०	२०
शृङ्खलिक	९१	२६
शृङ्खलित्	१७७	४९
शृङ्गिन्	८	३
	१६५	४६
शेमुषी	११०	३२
शैल	७	३
	७६	२२
शैलधर	७६	२२
शोणित	१६९	५२
शोणी	१५१	४२
शौण्ड	१२२	३५
शौण्डीर	१६९	४७
शौरि	७५	२२
शौर्य	१७५	४८
श्यामा	४८	१४
श्येत	१५०	४२
श्येनी	१५१	४२
श्रव	९८	२८
श्रवण	९८	२८
श्री	७६	२२
श्रीद	९६	२७
श्रुति	९८	२८
श्रेयस्	२००	५५
श्रोणि (श्रोणी)	१०३	३०
श्रोणीबिम्ब	१२१	३५
श्रोतस्	१३०	३८
श्रोता	२०१	५५

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
श्रोत्र	९८	२८
श्लक्ष्ण	१७९	४९
श्वन्	९२	२७
श्वभ्र	१९३	५३
श्वसन्	६२	१९
श्वेत	१५०	४२
श्वेतवाजिन्	१४३	४१
श्वोवसीय	२००	५५
ष		
षट्पद	८२	२४
षड्दशन	१६५	४६
षडक्षीण	१७	६
षण्मुख	६७	२०
षाष्टिक	१६४	४६
षोडन्	१६५	४६
स		
संयत्	८७	२५
संयमिन्	३	१
संयुग	८७	२५
संशित	३	१
संसरण	१९५	५३
संसार	१९५	५३
संसृति	१९५	५३
संस्कृत	१६३	४५
संस्तुत	१०८	३२
संस्थित	१०८	३२
संहनन	३८	११
संहित	१६२	४५
सकल	१९०	५२
सक्त	१२२	३५

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
सखी	४१	१२
सख्य	१८७	५१
सगोत्र	४२	१३
सङ्क्रन्दन	६०	१८
सङ्गत	१८७	५१
संग्राम	८७	२५
सङ्घ	१४०	४०
सङ्घात	१४०	४०
सजाति	१३६	३९
सजुष्	१६०	४४
सञ्चर	१६३	४५
संज्ञा	१६८	४६
सन्तत	१९२	५३
सतत	१६१	४५
सती	३४	१०
सत्कृत	१३१	३८
सत्य	१८२	५०
सत्यङ्कार	१९७	५४
सत्रा	१६०	४४
सदन	१३२	३८
सदा	१६१	४५
सदागति	६२	१९
सदुचित	११२	३३
सदृक्ष	१३६	३९
सदृश	१३६	३९
सदृश्	१३६	३९
सद्मन्	१३२	३८
सधर्म	१३७	३९
सधृची	४१	१२
सनातन	१२६	३६

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
सनाभि	४२	१३
सन्तति	१२५	३६
	१३९	४०
सन्तमस	१४९	४२
सन्तान	१२५	३६
सन्देश	१५६	४३
सन्धानीत	१७७	४९
सन्निधि	१४१	४०
सन्मति	११६	३४
सपत्न	४४	१३
सपदि	१५९	४४
सप्तार्चिष्	६४	१९
सप्ति	५२	१६
सभोचित	११२	३३
सभ्य	११२	३३
सम	१३६	३९
	१६०	४४
समज	१४१	४०
समर	८७	२५
समवर्तिन्	१४६	४१
समवायिक	४२	१३
समवेत	१६३	४५
समस्त	१९०	५२
समाज	१३९	४०
समालम्भ	११९	३४
समिति	१४०	४०
समीगर्भ	६६	१९
समीप	१४१	४०
समीरण	६२	१९
समुदय	१४०	४०
समुद्र	२६	९
समूह	१३९	४०
सम्पराय	८७	२५
सम्पृक्त	१६२	४५
सम्फली	३५	११
सम्भृत	१६२	४५
सम्बन्ध	४१	१२
सरणि	१६३	४५
सरसीरुह	२०	७
सरस्वत्	२६	८
सरस्वती	१०४	३१
सरित्	२४	८
सरूप	१३७	३९
सरोज	२०	७
सर्प	१२९	३७
सर्पिष्	१२३	३६
सर्व	१९०	५२
सर्वज्ञ	११४	३३
सर्वदा	१६१	४५
सर्ववल्लभा	३६	११
सलिल	१५	५
सवयस्	४१	१२
सवर्ण	१३६	३९
सवितृ	३८	११
	५१	१५
सवित्री	३८	११
सव्यसाचित्	१४४	४१
सह	१६०	४४
सहकारिन्	४२	१३
सहकृत्वन्	४२	१३

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
सहचरी	४१	१२
सहसा	१७६	४८
सहाय	४२	१३
सहाय्य	१८७	५१
सहस्त्रपात्	७३	२१
सहस्त्राक्ष	५८	१८
सहित	१६२	४५
साकम्	१६०	४४
सागर	२६	९
साधन	८६	२५
साधीयस्	१७२	४७
साधु	३	१
	१७३	४७
साधुवाद	१५४	४३
साध्वी	३४	१०
सानु	९	३
सानुमत्	८	३
सामज	८९	२६
साम्प्रतम्	१५७	४४
सारमेय	९२	२७
सार्द्ध	१६०	४४
सारतरू	१८३	५०
साल	१३५	३९
साहस	१५५	४३
सित	१५०	४२
	१७७	४९
सिद्धान्त	४	२
सिन्धु	२४	८
सिन्धुर	८९	२६
सिंह	१०५	३१
सीत्कृत	१०६	३१
सीमन्	२६	८
सीमन्तिनी	३०	९
सीर	१४२	४०
सुकृत	१३१	३८
सुचिरन्तन	१५८	४४
सुत	३९	१२
सुधासूति	४७	१४
सुनाशीर	५७	१८
सुनिर्मोक	१४४	४१
सुन्दर	१७९	४९
सुन्दरी	३१	१०
सुपर्ण	१२९	३७
सुभट	१९६	५४
सुमन	८०	२३
सुर	५६	१७
सुरा	१२१	३५
सुवर्ण	९३	२७
सुष्ठु	१७२	४७
सुहृत्	४१	१२
सूत्रामन्	५७	१८
सूनु	३९	१२
सूनृत	१८२	५०
सूरि	१११	३२
सूर्य	५०	१५
सूर्पकारि	७७	२२
सेना	८६	२५
सेनानी	६६	२०
सेनानीपितृ	६८	२०
सेन्द्र	५६	१७

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
सैन्य	८६	२५
सोदर्य	४२	१३
सोमवंश	१४८	४१
सौदामिनी	१८	६
सौध	१३५	३९
सौम्य	१७९	४९
सौरभ	१८७	५१
सौहार्द	१८७	५१
सौहृद	१८७	५१
सौहृद्य	१८७	५१
स्कन्द	६६	२०
स्तन	१०२	३०
स्तनन्धय	४०	१२
स्तनित	१०५	३१
स्तब्ध	१५६	४३
	१६९	४७
स्तम्बकरि	१६४	४६
स्तम्बेरम	८८	२६
स्तेन	१७०	४७
स्त्री	३०	९
स्थपुट	१८५	५१
स्थविर	१२४	३६
स्थाणु	६८	२०
स्थान	१३३	३८
स्नेह	१६२	४५
स्पर्शा	३५	११
स्पष्ट	१७३	४७
स्फीत्कृत	१०५	३१
स्फुट	१७३	४७
स्मर	८०	२३
स्मृत	१०८	३२
स्यद	१७७	४८
स्यन्दन	१०६	३१
स्रज्	११९	३४
स्रष्टा	७३	२१
स्रवन्ती	२४	८
स्रोतस्विनी	२४	८
स्रोतस्विनीपति	२५	८
स्व	९५	२७
स्वभाव	१८८	५२
स्वर्	५६	१७
स्वर्ग	५६	१७
स्वर्ण	९३	२७
स्वसृ	४३	१३
स्वान्त	८१	२४
स्वामिन्	१०	४
	६७	२०
स्वाहापति	६५	१९
स्वैरिणी	३५	११

ह

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
हंस	१२६	३६
हंसवाह	१२६	३६
हंसी	१२७	३७
हंहो	१५८	४४
हन्तोक्ति	११०	३२
हय	५२	१६
हर	७०	२०
हरि	१२	४
हरिण	१२८	३७
हरिणी	१५१	४२

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
हरित्	६१	१८
	१५१	४२
हरित	१५१	४२
हरिद्राभ	१५१	४२
हरिवाहन	५९	१८
हरी	५२	१६
	५७	१८
	९०	२६
हर्म्य	१३५	३९
हर्ष	१०९	३२
हल	१४२	४०
हलि	१४२	४०
हव्यवाह	६६	१९
हस्त	१००	२८
हस्तशाखा	१००	२८
हस्तिन्	८८	२६
हाटक	९३	२७
हार्द	१८७	५१
हाला	१२१	३५
हिम	११८	३४
हिम	१८०	४९
हिमवत्सुता	७१	२१
हिरण्य	९३	२७
हिरण्यकशिपुसूदन	७५	२२
हिरण्यगर्भ	७३	२१
हिरयण्रेतस्	६४	१९
हीन	१७४	४८
हुताश	६५	१९
हुताशन	६६	१९
हूङ्कृत	१०६	३१
हृदय	८१	२४
हृद्य	१७९	४९
हृषीक	१३०	३८
हृषीकेश	७४	२१
हे	१५८	४४
हेति	८३	२४
हेमन्	९३	२७
हेरिक	१७१	४७
हेषा	१०५	३१
हैयङ्गवीन	१२३	३६
ह्रस्व	१६०	४४

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अनेकार्थ नाममालास्थ शब्दानुक्रमणिका

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
अ		
अक्ष	२६	६२
अज	२२	६१
अञ्जन	९	५८
अथ	३९	६५
अद्रि	११	५९
अनन्त	४	५७
अन्त	२५	६२
अन्तर	३८	६५
अब्द	१६	६०
अम्बर	७	५८
अर्घ	१६	६०
अर्थ	२४	६२
अशोक	१२	५९
इ		
इति	४०	६५
क		
कदली	१२	५९
कम्बु	१०	५९
कस्वर	१०	५९
काष्ठा	१४	६०
कीनाश	१९	६१
कीलाल	१५	६०
केतन	८	५८
कैवल्य	४४	६६
कोटि	१४	६०
क्षीर	१३	५९
ग		
गुण	३७	६५
गुह्य	१५	६०
गो	२७	६२
घ		
घृत	५	५८
च		
चर्चा	१७	६०
ज		
जात्य	१६	६०
जिन	३	५७
जीमूत	४	५७
ज्योतिष्	६	५८
त		
तन्त्र	३६	६४
तल्प	६	५८
तार	१३	५९
तार्क्ष्य	१६	६०
तीर्थ	३१	६३
द		
दव	१८	६१
दाव	१८	६१
द्रव्य	४१	६५
द्विज	११	५९
घ		
धर्म	४१	६५
धिष्ण्य	७	५८
प		
पतङ्ग	८	५८
पयस्	१३	५९
पर्जन्य	४	५७

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
पाञ्चजन्य	१०	५९
पुद्गल	४२	६६
पुन्नाग	९	५८
पुष्कर	२९	६३
प्राय-प्रायस्	२४	६२
बाधा	१५	६०
ब्रह्मवाच	३७	६५
भ		
भग	४३	६६
भाव	२४	६२
भुवन	५	५८
भूरि	१३	५९
म		
मयूख	८	५८
र		
रम्भा	१२	५९
रस	३०	६३
राजन्	११	५९
राम	६	५८
ल		
लब्धि	४४	६६
ललाम	३३	६४
व		
वन	५	५८
वर्गणा	४२	६६
वर्ण	३४	६४
वाम	६	५८
विरोचन	२०	६१
विवस्वत्	३	५७
विष	५	५८
वृषाकपि	३	५७
वैकुण्ठ	४	५७
व्यामोह	१५	६०
श		
शङ्कु	१८	६१
शम्भु	३	५७
शिखरिन्	११	५९
शुचि	२३	६२
स		
सत्त्व	३६	६४
सन्धि	१४	६०
समय	३५	६४
सरल	९	५८
सारङ्ग	९	५८
सारस	८	५८
साल	७	५८
सिन्धु	७	५८
	१४	६०
सुमनस्	१२	५९
सोम	२१	६१
स्तम्भ	१७	६०
स्थाणु	१७	६०
स्यन्दन	१०	५९
स्यात्	४५	६६
स्वर	३५	६४
स्वैर	१७	६०
ह		
हंस	२०	६१
हरि	२८	६३

अनेकार्थ निघण्टु शब्दानुक्रमणिका

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
अ		
अक्ष	७६	८५
	७७	८५
अगारि	१०५	९२
अङ्क	४०	७७
अज	३४	७५
	३५	७६
अदिति	२९	७४
अध्यात्म	१२३	९६
अध्यूढा	३०	७४
अनन्त	३७	७६
अनिमिष	४	६८
अपाचीन	९३	८९
अब्द	५७	८०
अमृत	२२	७२
अम्बर	१९	७२
अम्बरीष	६१	८१
अर्क	१५	७१
	९४	८९
अलात	८६	८७
अवदात	५५	८०
अश्वारोह	९४	८९
असित	६७	८३
असुर	४८	७८
आ		
आकूत	९८	९०
आक्रन्द	९५	८९
आगोप	४०	७७

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
आडम्बर	११२	९३
आत्मज	५३	७९
आदित्य	७१	८४
आधि	१०२	९१
आयतन	७८	८५
आर्य	१११	९३
आलबाल	१०३	९१
आलान	९२	८८
आहत	८९	८८
इ		
इडा	२९	७४
उ		
उक्षन्	१०६	९२
उदक्या	१३०	९७
उदार	१२९	९७
उष्णीष	८८	८७
उस्रा	१०७	९२
ऋ		
ऋत	७५	८४
औ		
औषण	७५	८४
क		
क	३	६८
	४	६८
ककुप्	४४	७७
कबन्ध	८८	८७
कम्बु	११	७०
कर	२४	७३

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
कर्षक	९०	८८
कल	८६	८७
कलभ	१०८	९२
कलुष	१०८	९२
कानीन	९१	८८
क्लिष्ट	९१	८८
कीनाश	५३	७९
	५४	८०
	१२१	९५
कीलाल	२५	७३
कुण्ड	१३३	९८
कुण्डाशी	१३४	९८
कूल	३६	७६
कृतघ्न	१२२	९६
कृष्ण	२२	७२
केतु	१६	७१
केसरिन्	८५	८७
कोकिला	८२	८६
कोटरस्थ	१४९	१०२
कोमल	२६	७३
कौशिक	१३	७०
कव्य	९५	८९
क्षत्ता	३८	७६
क्षय	४५	७८
क्षर	२१	७२
ख		
ख	६४,६५	८२
ग		
गो	२	६८
गोलक	१३३	९८

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
ग्रावाण	७४	८४
घ		
घन	४६,४७	७८
घनाघन	९३	८९
घृत	२३	७३
च		
चटक	१०४	९१
चमू	४८	७८
छ		
छेद	८६	८७
ज		
जम्बुक	१४	७१
जीमूत	५७	८०
ज्योति	५५	८०
	५९	८१
त		
तपस्	१३१	९७
तमोनुद	१६	७१
तार्क्ष्य	५०	७९
तिलक	८४	८६
तुल्य	१०४	९१
तृणी	५१	७९
तेजस्	१३१	९७
तोदन	९२	८८
तोयद	५७	८०
त्रियामा	१०९	९३
त्रिशङ्कु	६८	८३
द		
दक्ष	७०	८३
	७१	८४

प्रज्ञाश्रमण मुनि

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
दक्षिण	९७	९०
दविष्ठ	९९	९०
दान	९२	८८
दान्त	१२४	९६
दीर्घ	११०	९३
दुश्चर्मन्	९०	८८
दोला	१०४	९१
द्विज	५२	७९
ध		
धनञ्जय	९	६९
धार्तराष्ट्र	६५	८२
धिष्ण्य	१८	७२
न		
नकुल	६७	८३
नल्व	१५२	१०२
नाग	४९	७९
नापित	१०१	९१
नास्तिक	१३२	९८
निकष	८४	८६
नितम्ब	७२	८४
निरुपद्रवा	१२८	१०५
निरुपस्करा	१२७	१०५
निविड	८९	८८
नृसिंह	१२०	९५
न्यग्रोधपरिमण्डला	१४३	१००
प		
पङ्कज	८२	८६
पतङ्ग	१२	७०
पदकृत्	१०१	९१
पद्म	७७	८५
पय	१९	७२
परचित्त	१३५	९८
परमेष्ठी	१००	९०
परिचर्य	८४	८६
पर्जन्य	६०	८१
पल्लव	१५०	१०२
पलाश	१०६	९२
पवन	१११	९३
पानीय	१०२	९१
पयस्	१९	७२
पाञ्चजन्य	११	७०
पिशङ्ग	८३	८६
पिशित	९५	८९
पुण्यश्लोक	११७	९५
पुलिन	८२	८६
पुष्कर	३६	७६
पुष्प	७८	८५
पुंस्त्व	६२	८१
पृष्ठौही	१०७	९२
पौलस्त्य	५८	८०
प्रजापति	३८	७६
प्रधान	५५	८०
प्रधन	१०५	९२
प्रपा	११३	९४
प्रभाकर	६६	८२
प्रासाद	४६	७८
प्लव	४५	७८
फ		
फेनवाहिनी	९४	८९
ब		

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
बलाहक	५६	८०
बन्ध्या	१०७	९२
बालेय	५०	७९
बिम्बोष्ठी	१३७	९९
बीभत्स	९	६९
भ		
भगवन्	१२९	९७
भामिनी	१४२	१००
भार्या	१४७	१०१
भाव	८७	८७
भास्कर	१२	७०
भुवन	२५	७३
भूरिश्रव	१४०	९९
म		
मञ्जूष	८५	८७
मण्डूक	८९	८८
मत्तकाशिनी	१३९	९९
मधु	६३	८२
	६४	८२
मन्थिन्	१५	७१
मन्द	१२१	९५
	१२३	९६
मन्दिर	१०५	९२
मयूख	१७	७१
मलिम्लुच	५२	७९
मस्कर	१०७	९२
महेष्वास	११८	९५
माया	६३	८२
मृष्ट	९६	८९
मेचक	८३	८६

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
मेचक	१०६	९२
य		
यम	६८	८३
युद्धशौण्ड	११७	९५
यूथप	११९	९५
यूथप-यूथप	११९	९५
र		
रंहस्	१०३	९१
रजस्	७२	८४
रत	८३	८६
रत्न	१०९	९३
रदन	९२	८८
रम्भा	७४	८४
राजन्	७	६९
राजीवलोचन	११४	९४
राजीवलोचना	१४३	१००
राम	३२	७५
	३३	७५
रावण	१४१	१००
रौहिणेय	३१	७४
ल		
लक्ष्म	६९	८३
	७०	८३
लक्ष्मण	६९	८३
ललना	१३७	९९
ललाम	८१	८६
ललिता	१३९	९९
लवली	८१	८६
लावण्य	१०१	९१
लुलाय	१०६	९२

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ	शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
लेखा	६१	८१	वेहत्	१०७	९२
व			वैकर्त्तन	११५	९४
वभ्रू	९९	९०	व्यक्तिवादिन्	१२०	९५
वक्रवक्त्र	८२	८६	व्यञ्जन	११२	९३
वर्फ	१५३	१०२	व्याधि	१०२	९१
वरवर्णिनी	१३८	९९	**श**		
वराह	३३	७५	शङ्कु	१४	७१
	३४	७५	शङ्खकण्ठी	१४५	१०१
वरूथ	४७	७८	शम्भु	१३	७०
वर्षाभू	८९	८८	शरारू	१३१	६७
वल्लरी	११३	९४	शरीरज	३५	७६
वसा	१०७	९२	शर्वरी	४२	७७
वसु	१८	७२	शव	२३	७३
	७३	८४	शिखरिन्	५१	७९
वाजी	७९	८५	शिखिन्	५	६९
वाम	३९	७६	शिव	२०	७२
वासर	४१	७७	शिवा	२०	७२
विद्वान्	६२	८१	शिलीमुख	६०	८१
विपञ्ची	११२	९३	शीत	१५३	१०२
विपिन	१५२	१०२	शुक्रा	८१	८६
विभावसु	८	६९	शुचिकृत	५८	८०
	४१	७७	शुष्क	९६	८९
विरोचन	१०	७०	शेमुषी	९३	८९
विलास	८७	८७	शेष	३२	७५
विशाल	९०	८८	शैलूष	१००	९०
विष	२४	७३	**ष**		
वृकोदर	११६	९४	षण्ड	९१	८८
वृजिन	१०९	९३	षड्वद	१३३	९८
वृष	३०	७४	**स**		
वृषा	३१	७४	संवर	२७	७३

शब्द	श्लोक सं०	पृष्ठ
संवर	२८	७४
सत्र	१०३	९१
सत्वर	८३	८६
सदन	२६	७३
सद्म	२७	७३
सप्तर्षि	१७	७१
सप्ताश्व	१४८	१०१
समाधि	१२४	९६
समाधिस्थ	१२५	९६
सम्राट्	१०९	९३
सान्द्र	४२	७७
सारङ्ग	७३	८४
सारस	७	६९
सित	६६	८२
सुमना	११३	९४
स्थविष्ठ	९९	९०
स्यन्दन	२१	७२
स्वर्	४३	७७
ह		
हंस	६	६९
हरि	८०	८६
हिमाराति	८	६९
हिल	१०८	९२
ह्रस्व	११०	९३

प्रज्ञाश्रमण मुनि